MSS No. 439 Subject Padya Kavya

Name of MSS Bihari sat sai

Author Anavar Khan

Period Folios 199

Script Devnagiri Source Bala Sahai Shastri, Alwar, Rajasthan

Missing Folios

(13)

A39

(१३)

बिहारी सतसई (अकबर
चंद्रिका)

439

1

॥श्री गणेशाय नमः॥ अथ सतसई
अनवर चंद्रिका लिख्यते॥ दोहा॥ मे
री भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ
जा तन की झाँई परै स्याम हरित दु
ति होइ॥१॥ आसीर्वादात्मक मंगला
चरन है जो मेरे बरति भाव बधन है
बिषम ता लै कार अवभासत है जथा
आन रंग के कारन तें जल कौ रंग आ
न रंग हू जाइ उक्ति मर्म जो भलौ जा
नि कै ता तें होइ बुरौ फल आइ अन
मिलते कौ संग होइ तहाँ जानि लौ जि
यै चित्त चलौ आइ तीनि भाँति कौ बिषम
अलंकृत मैं दीन्हौ सब कौ समुझाइ
और बात मैं और है अर्थ कै रैन हजा
नि॥ समुझि है भाँति कौ वक्रोक्ति उ
र आनि॥१॥ अथ साधारन नाइका सों ह
ने हलाति तें नते हनेई लो फिले गलौ
लेखि जाइ॥ लेगे लौं कैलौ इनै भरालौ
स लै ति लिगाइ॥२॥ उक्ति नाइके की।

अ॰ चं॰ २

॥१॥

स्वतिभाव उपमालंकार कोमलावृ
त्तिलोइ ऊनलै तिलगाइ यापद मैल
क्षनाहै ॥ अथा ॥ उपमा अरु उपमे
यसाधारन वाचक होइ ॥ चारौ पै
अै तहा पूरन उपमा सोइ ॥ जेहइ
त्यानुप्रासमै गुन माधुर्ज प्रकास ॥ ते
हा कोमलावृत्ति है भावत बुद्धि विला
स ॥ वर्णन पै ये पद जे हा अलेरस
मतो होइ ॥ सोवृत्यानुप्रास है केहत
मया नेलोइ ॥ टवरग को जु अभाव
करि अक्षर बिंदु समेत ॥ लघु समा
समाधुर्ज कारवना कवि कहि देत ॥ र
सेहा ॥ तन भूषन अंजन दृगनि प
गनि महावर रंग ॥ नहि सोभा को सा
जियत कहिये हो को अंग ॥ ३ ॥ जो स
बा वचन होइ तौ रूप गर्वि जो ना इ
क की उक्ति होइ तौ गुन के थन व्यंजि
व को वोध व्यंगि है मीलित अलंका
र है ॥ जथा ॥ सदस वस्तु मै भेद न लखै है ॥

॥१॥

३

तिहिथलकै बिजनमीलितकैहै ॥३॥
दोहा ॥ पचरंगरंगबैंदीषरी उठै उम
गिमुषजोति ॥ पहिरेंचीरचुनौटिया
चटकचौगुनी होति ॥४॥ जो सबकी
उक्ति होइ तौ नायककौं रुचि उपजा
वति है जो नायककी उक्ति होइ तौ गुन
कथन स्वभावोक्ति अलंकार है ॥ जथा
जाकौ जैसो रूप गुन बरनै ताही रीति ॥ ता
सौं जाति स्वभाव कहि बरनत सुकबि प्रती
ति ॥४॥ दोहा ॥ तजि परबसौ तिन सजे भूष
न बसन सरीर ॥ सबै मरगजे मुह करी वही
मरगजे चीर ॥५॥ उक्ति सखी की सखी सौं
सुरतांत ब्यंगि सिषलीनकै बैबरनत अनु
भावकरि ईर्षा संचारी ब्यंगि सो असंलक्ष्य
क्रम ब्यंगि ध्वनि है असंगति अलंकार है ॥
जथा ॥ कारन औरहिं ठौर है कारज औरै
ठौर ॥ औरकौ जन्म औरहिं बिषै करिये औरै
ठौर ॥ औरठौर रसकी जिबै औरठौरके
काम ॥ तीनि असंगति के कहत भेद सु

कविमतिधाम॥५॥दोहा॥वेंदभालत
मोलमुषससिसलिलमिलेवार॥दृग
आजेंराजैधरीसाजैसज्जसिंगार॥६॥ ॥२॥
सषीकीउक्तिनायकसोंहइतौकवि
पजावतिहैजोनाइकाकीउक्तिहइतौ
गुनकथनछावतकोकीउक्तितेव्यंगि
हैस्वभावोक्तिअलंकारहै॥६॥दोहा॥
बालछबीलीतियनुमैवैठीआपुछि
पाइ॥अगटहीपानससीपरगट
परतिलषाइ॥७॥उक्तिसषीकीनाइ
ककौनाइकावतावतिहैवोधव्यंगि
हैवस्तुउत्प्रेक्षालंकारहै॥जथा॥जेह
कीजतसंभावनावस्तुहेतुफललेषि
तीनिभांतिउत्प्रेक्षावरनतवुद्धिविसे
षि॥७॥दोहा॥कनदैवेसोंप्योससुर
वहूथुरहथजानि॥रूपरहचटेलगि
लग्योसवजननमागतुआनि॥८॥कवि ॥२॥
कीउक्तिरूपनेकीरूपनतावासीपुत्र
वधकोरूपकोवर्ननुअगूढव्यंगिसोवि
षमालंकारहै॥यथा॥उद्दिमकीजेम

लौकौ होइ धुरो फूल आइ ॥ भेदती सरो वि
भ्रम कौ भाव तेक विसमु दाइ ॥ ९ ॥ दोहा ॥
लिखन वै छिजो जो की सखी गहि गहि गरव
गरूर ॥ भान के तेज गात के चेतुर खितेर
कूर ॥ ८ ॥ सखी की उक्ति सखी प्रति होइ
तौ दूति नायक प्रति होइ तौ दूतत्व जो ना
यक की उक्ति तौ गुन कथन वक्र बोध
व्यंगि असंलक्ष्य क्रम ध्वनि है पै कारु
व्यंगि है मध्यम काव्य है सुद्ध वक्रोक्ति
अलंकार है ॥ जथा ॥ और बात मै और
ही अर्थ करै जैसे जानि ॥ श्लेष सुद्ध वै भां
ति की वक्रोक्ति उदाहरन ॥ ९ ॥ दोहा ॥ तो
पर वारौ उरवसी सुनु राधिके सुजान ॥
तू मोहन के उरवसी ह्वै उरवसी समान ॥
॥ १० ॥ दूती की उक्ति नाइक प्रति सामोपाइ
कै मान ध्वनित है जमकालंकार है मध्यम का
व्य ॥ जथा ॥ जैसे वेही पद फिरि फिरि कै अरथ
और ही होइ ॥ ता ते जमकालंकार है भाव
त पंडित लोइ ॥ १० ॥ दोहा ॥ सोहति धोती
सेत मै कनक वरन तन वाल ॥ सारद वारद वी

अ॰ चं॰ गुरीभारद्‌कीजतिलाले ॥११॥ इती
कीउक्तिनाइकेसौंनाइकाकीस्तुति
॥२॥ वोधव्यंग्यजिहेप्रतीपालंकारहेवृ
त्यानुप्राससंसृष्टिअवरकाव्यहे ॥
जथा ॥ उपमेयजोउपमानतेआदर
महानहोइ ॥ उपमेयकेसमहैनही
उपमानकोजिहिठौर ॥ कोकैउपमा
नकोउपमेयकविसिरमोर ॥ उपमा
नकौउपमायथालेछिवर्नेनीयस
मान ॥ एपाखभेदप्रतीपकेगथने
करेपरिमान ॥११॥ सोरठा ॥ रहीलटूहै
लाललैलखिवृहवालेअनप ॥
कितोमिठासरयोरईइतोसलोने
रूप ॥१२॥ इतीकीउक्तिउपपतिसौं
स्तुतिकरतिहैनाइकाकोपूर्वानुराग
वोधव्यंग्यहैअसंलक्ष्यक्रमध्व
निहैसहविरोधाभासअलंकारहै ॥ ॥३॥
जथा ॥ जिहिथलसहविरोधहैअर्थ

माऊन विरोध । सह विरोधाभास सो
कहियै हियै प्रबोध ॥ १२ ॥ दोहा ॥ श्री
रीवलि तो हग लिपै अलि षंजन म
ग मीन । आधी दीठि चितै लि जिहि
कि रालाल आधीन ॥ १३ ॥ सखी की
उक्ति नाइक को प्रति स्तुति प्रतीप तुल्य
जोगिता पुनरुक्ति वदाभास की संस
ष्टि केवल विभाव हाते शृंगार व्यंग है ॥
अथा ॥ भासै जहं पुनरुक्ति सी पै पुन
रुक्ति न होइ । पुनरुक्ति वदाभास सो
कवित गीतर सलोइ ॥ उपमा अरु
उपमेय के है अनेक इक भाइ । तुल्य जो
गिता को तिहि ओभेद गनाइ ॥ १३ ॥
दोहा ॥ छिन कुछ बाली बाल वह जो
लौं न हि वतराइ । ऊष मयूष पियूष
की तौ लौं भूषन जाइ ॥ १४ ॥ दूती की उ
क्ति नाइका सौ इस्तुति नाइका के मिला
इबे के लाव्य तरे काललंकार है को म

अ॰ चं॰ ॥४॥

४॰

लोकहत है ॥ जथा ॥ जा लिपे उपमा
न तें जहं अधिक उपमेय ॥ सो भाष
त व्यतिरेक है कवि पंडित आधेय ॥
॥१४॥ दोहा ॥ तमो हन मन गढि रहो
गाढो गड लिय आलि ॥ उठे सदा नट
साल सी सोतिन के उरसालि ॥ १५ ॥
सभा की उक्ति स्तुति कहत है गढि
हो यां लक्षै नाहै असंलक्षै क्रम
ध्वनि है असंगति अलंकार है ॥ १५ ॥
दोहा ॥ बडे कहावत आपु सो गरुहा
गोपीनाथ ॥ तौ बदिहै जो राखिहै हा
थन लखि मनु हाथ ॥ १६ ॥ इतां कोउ
क्ति नाइका की स्तुति नाइक को मिला
यो चाहति है संभावना लंकार लाट
नुप्रास को संसृष्टि है ॥ जथा ॥ ज्यौं ज्यौं
ज्यौं ज्यौं होति है कहनावति जहं आइ ॥ त
हं कहत संभावना कवि पंडित समुदाइ ॥
॥ १७ ॥ वहं अर्थ पद पिरि पिरे भिन्न भावक

॥ ४ ॥

१

धुहेड़ । सोलाटानुप्रासहैकेहूलसयाने
लोइ ॥ ६ ॥ दोहा ॥ तरउहैहीससिल
बोवटुनअटंवलिवोले । विनहीऊगे
मसिसवैदेहैंअरघुअकाल ॥ ७ ॥ नोइ
कोप्रतिउक्तिसषीकोव्यंगिसोस्तुतिप
र्योउक्तिअलंकारहै ॥ जथा ॥ पर्यायोक्ति
प्रकारद्वैकेधुरसवनासोवात । मिसकरि
काजकोजियैजेसोचितहिमुहेत ॥ ८ ॥
दोहा । दियेअरघुनाथवलोसंकटभा
नोजाइ । सुखितीहुंऔरसवैससिहि
विलोकैआइ ॥ ९ ॥ नोइकाप्रतिसषीकी
उक्तिव्यंगिसोस्तुतिपर्योउक्तिअलंकार
है ॥ १० ॥ दोहा ॥ टेरीलोईसुननकोकहि
गोरीमुसुकात । थोराथोरीसकुंचसोभो
रीभोरीवात ॥ ११ ॥ नोइकाकोसषीसोस
षीकोउक्तिनोइकामुग्धास्वभावोक्तिअ
लंकारछेकोनुप्रासहै ॥ जथा ॥ जेहलवाव
परदैपरैअभेरसमतोआइ । तेहछेका
नुप्रासहैकेहेतसुकविसमुदाइ ॥ १२ ॥
दोहा । नोकेवटैसोवीकरैजितेछवी

अ० चं०

लोपछेलन ॥ फिरिफिरिभलिवहै गहै
पिअककराली गैलें ॥ २० ॥ उक्तिसखी
कीसखीसौं रसाभासअसंलक्ष्ति क्र
मध्वनिहै पर्यायोक्तिअलंकार है ॥ २० ॥
दोहा ॥ नैकौ उहिं नैजुरीकरैहरावि
गुदीतुममाल ॥ उरतेवामघुटैनही
वासघुटैहूलोल ॥ २१ ॥ दूतीकीउक्ति
नाइकसौनाइकाकौअनुरागप्रगट
करति है तथापिजमकालंकारसंहृवि
रोधाभासतैअवरकाव्य है ॥ २१ ॥ दोहा ॥
दोहा ॥ कटतितिलककिसुकुचकोरकछवि
कटतमोरभुजमूल ॥ मनुलुटिगोलौ
टनिचटतचोटतऊचेफूल ॥ २२ ॥ उक्ति
नाइककीस्मृतिसंचारीदसाकेविचन
अनुभावतेगुनकेथनेपूर्वानुरागव्यंगि
असंलक्षक्रमध्वनिमनुलुटिगोहयां
लसनाहैगातिवर्नन ॥ २२ ॥ दोहा ॥ चलि
तिलेलितअमस्वेदकेनकेलितअक
नैमुषतैन ॥ वनविहारथाकीतरुनि
बरेषकोएनैन ॥ २३ ॥ उक्तिनाइककीसा

॥ ५ ॥

॥ ५ ॥

॥
सोतेद्रसनकेवचनअनुभावतेअसंल
छेकोमध्वनिकहिअनुरागव्यंगिनैन
निकोअथकाढ़वोलेसैनाहैविभावना
लंकारवृत्यानुप्रासकीसंसृष्टिहै ॥ जे
षा ॥ कारननाहिपैकारजहोइकैका
रजकारनकोउपजावै । कारनहोइअ
कारनतेकिअकारनकारजकोजवना
वै । कैप्रतिबाधकहोतहूकाजजुहो
तइहैरससोधुवटावै । हेतुतेकाजवि
रुद्धविलोकिवुधेसषभातिविभाव
नागावै । सुमतिअकारनतेजहाकारज
परगटहोइ । चौथोभेदविभावनाको
जानतहैसबकोइ ॥ २३ ॥ दोहा ॥ लंबुभु
कीचलिजातजितजितजलकेलिअ
धार । कीजतकेसरिनीरसेतिततितकै
सरिनीर । २४ । जोउत्किनाइककीहैतो
स्मृतिसंचारीअनुभावगुनकथनरसा
तेअनुरागअसंलछेकमध्वनिउप
मालंकारछेकानुप्रासहै । २४ । दोहा ।

12

अ॰ चं॰

॥ ६ ॥

हेरि हरि हेरे गगन ते परी परी सी टूटि
धाइ धरी किय बी खहा करी बरी रस
लूटि ॥ २५ ॥ उक्ति सखी सों सखी की अ
संलक्ष्यक्रम व्यंग ध्वनि है भाव की व्यक्ति
क्ति है तासों है अपार हू भासमति है उ
त्कंठा हू आलिंगन की है भासति उत्कं
ठा है जौ तौ एक मत है या विरहा धारा है तु
ल्य छिति ताके तत है विपति को मिलन
उपमा जमक रूपक संकर है अनुप्रा
स सौ संसृष्टि है ॥ यथा ॥ उपमा अरु
उपमेय मे मेरु न परे लखाइ ॥ तासौ रू
पक कहत है पंडित के विसमु साइ ॥ २५ ॥
दोहा ॥ बरजै हू ना हटब है नो सकुचै न
सकाइ ॥ टूटति केटि हु मबी भव किलव
किलक किव विजाइ ॥ २६ ॥ उक्ति सखी
की सखी सों केवल आलंबन ही ते रस
ध्वनि तहै लुप्तोत्प्रेक्षा वीप्सा की संसृष्टि ॥ ॥ ६ ॥
यथा ॥ लुप्तोत्प्रेक्षा सो इ अरु वाचक वि
न जो होइ ॥ इक सहस बरु वार जह बरु

13

आदरतें होइ । ग्रंथन को मत रचि कै कहै
वीप्सा सो है ॥ २६ ॥ दोहा ॥ प्रिय विधुरन को
दुसह दुख हरन आतप्यो सार ॥ दुरगो थन
लौं रचि अनुत ज्ञत प्रान तिहि वार ॥ २७ ॥ स
खी की उक्ति सखी सो नाइका को भाव संधि
पूर्न्न पिमालंकार है ॥ २८ ॥ दोहा ॥ ज्यौं ज्यौं पा
वक लपट सी तिय अहियसो लपिटाइ ॥ त्यौं
त्यौं छुहै गुलाब सौं छतियां आंच तिय परा
इ ॥ २९ ॥ उक्ति नाइका की सखी तिसं वोधन गुन
कथन रसा वचन अनुभाव तें अनुराग व्यं
गि विभावना लंकार है ॥ यथा ॥ प्रति बांध
क के हेतु है कारज पूरन होइ ॥ तीजो भेद
विभावना को भापत है कवि लोइ ॥ ३० ॥ फू
लो हार हियें लसै सन को वेदी भाल ॥ रा
खति खेत खरे खरे उरोजन वाल ॥ ३१ ॥
जो हुती ताकी उक्ति सषी तौ नाइका संकेत भ्रष्ट
चौ नाइका सौं भ्रमवित करति है जो नाइका की
उक्ति है तौ सखी तिसं वोरा गुन कथन रसा
वचन अनुभाव तें पूर्वानुराग व्यंगि राखत
खेत खरे या श्लेषालंकार है जाति वर्न्नन ॥
यथा ॥ एकै सबद के अर्थ जहं भासत आइ ॥

अ॰ वं॰

अनेक । सहस्त्रोत्र मुकंदते हैं जिनके बु
द्धि विवेक ॥ २८ ॥ अथ ग्राम्य नवर्ननं दोहा ॥
गोरी गरदकोरी परे हसति कपोलन गा
उ ॥ कैसी लैसति गमारि के सुनकि रवा
वी आउ ॥ ३० ॥ सखीकी उक्ति आश्व
जै संचारी पूर्वानुराग मै नाइकके वच
न अनुभाव रूप है गोति वर्ननं ॥ ३० ॥
दोहा ॥ गाड़ी कुंकुम को भार मै रही वैठि
है पांहि ॥ तऊ पलक परि जाति उत
मत जे हसो हरी ढि ॥ ३१ ॥ सखी की
उक्ति सखी सो विभावकी अव्यक्ति ते
स्वकीय तु परकीय तु भासत नाहीं जा
ते साधारन नाइका वर्नन है हर्ष संचा
री कटाक्ष विसेष अनुभाव ते सिंगार
विंजि विभावना लंकार है ॥ जथा ॥
कारन विन ही काज को उदै पहले तजि
हि और ॥ पहिलो भेद विभावना को भा
वत कवि सिरमोर ॥ ३१ ॥ संस्त ॥ गद
राने तन गोरटी औ पन ओड़ली लार ॥
कूटै है अडिलाति दृग कै रे गमारि

॥ ७ ॥

15

सुमार ॥३२॥ स्मृति संचारी गुन कथन ते
पूर्वानुराग नाइक को वचन अनुभाव है
जो ताते वर्ननं ॥३२॥ दोहा ॥ भौंहु कुटी लौं
कसवले ज्यौं कर त्यौं ही नारि ॥ छबि सौंण
तिस लिये चले चातुर का तन हारि ॥३३॥
स्मृति संचारी गुन कथन ते पूर्वानुराग नाइ
क को वचन रूप अनुभाव है जो ताते वर्ननं ॥३३॥
दोहा ॥ अहे रहे डोना घरे जानि तले हु
तारि ॥ ना के सहा छ्री के धुपे ऐसे ॥ ही सकु
नारि ॥३४॥ उक्ति नाइक की क्रिया विद
ग्धा करि ओ मुक्ति संचारी वचन अनुभा
व ते रस व्यंगि जो ताते वर्ननं ॥३४॥ दोहा ॥
टटका धोई धोवती चटकीली मुख जोति
छिपति रसोई के वगार जगर मगर दुति
होति ॥३५॥ दूती की उक्ति नाइक पति ना
इका की प्रसंसा करति है स्मृति संचारी गुन
कथन करि पूर्वानुराग नाइक के अनुभाव
रूप वचन है जो ताते वर्ननं ॥३५॥ इति श्री नव
रस चंद्रिकायां साधारन नाइका वर्ननं ॥छ॥

16

अ· चं· यप्रकासः॥२॥ अथ विछन नख वर्ननं॥ तत्रादौ केस वर्ननं॥ दोहा॥

॥८॥ सहज सचिक्कन स्याम घन सुचि सुगंध सुकुमार॥ गनत न मन पथ कुपथ लखि विथुरे सुथरे वार॥३६॥ उक्ति नाइका की स्मृति संचारी गुन कथन रसाप्रवोनुराग वचन अनुभाव केरि व्यंगि दीपकालंकार है॥ यथा॥ उपमान के उपमेय सो इक पद लो गै जाइ॥ तासो दीपक कहत है पंडित कवि समुदाइ॥३६॥ दोहा॥ वुई कर ब्योरनि व है ब्यौरो कौन विचार॥ जिन सो उरको मो हियो तिन सो सुरझे वार॥३७॥ उक्ति नाइका की स्मृति संचारी गुन कथन ते प्रवोनुराग व्यंगि विभावनालंकार है॥ यथा॥ काहू कारन ते जहा कारज परगट होइ॥ चौथौ भेद विभावना ग्यौं जानत सब कोइ॥३७॥ दोहा॥ कुटिल अलक छुटि परत मुख बढिगो इतो उदोत॥ बंक वकारी देत ज्यौ दाम रुपैया होत॥३८॥ उक्ति सखी

॥८॥

17

कीतौस्तुतिनाइककीहद्दतौगुनकथनव
चनअनुभावतेबिंगिउपमालंकारहै ॥ ३५ ॥
दोहा ॥ कचसमेटिकरभुजउलटिखहसी
सपटटारि ॥ काकोमनबांधैनयहजेरा
बांधनहारि ॥ ३६ ॥ उक्तिनाइककीसखात
द्रसनगुनकथनवचनअनुभावकरि
अनुरागबिंगिबाधिबोलछिनाहैक्यो
क्तिजातिवनैनकीसंसद्दहिहै ॥ यथा ॥ औ
रवातमैओरहिअर्थकेरैजहजोनि ॥ श्ले
षसुद्धिहैभांतिकोवक्रोक्तिउदयालि ॥ ३७ ॥
अथलिलारवर्ननंदोहा ॥ नीकोलसतलि
लारपरटीकोजटितजराइ ॥ छविहिव
ढावतरविमनोससिमंडलमैआइ ॥ ३८ ॥
उक्तिसखीकीतौस्तुतिनाइककीतौवचन
अनुभावसोबिंगिउत्प्रेक्षालंकारहै ॥ ३८ ॥
दोहा ॥ सबैसुहाईलागैबसैसुहाएठाम ॥
गोरमुखबेदीलसैअरुनपीतसितस्याम ॥
उक्तिनाइककीसात्तिसंचारीगुनकथनव
चनअनुभावतेअनुरागबिंगिजोसखी
कीउक्तितौस्तुतिबिंगिकैविषीउक्तितौप्र
स्वाविकजातिपेहद्दांतअलंकारहै ॥ यथा ॥

18

अ०वं०

उपमा अरु उपमेय गुन वाचक धर्म
सुभान ॥ होत बिंब प्रतिबिंब सम द्रष्टां
त परिमान ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ कहत सबै बें
दी दिये आंकु दस गुनो होत ॥ तिय लि
लार बेंदी दिये अगिनित बढत उदोत ॥
॥ ४२ ॥ सखी की उक्ति तौ स्तुति नाइका की
उक्ति तौ स्मृति गुन कथन अनुभाव
व्यंगि व्यतरेकालंकार है ॥ ४२ ॥ दोहा ॥
भाल लाल बेंदी दिये छुटे बार छबि देत
गह्यो राहु अति आह करि मनु ससि सूर
समेत ॥ ४३ ॥ उक्ति नाइका की गुन कथन
स्मृति के चिवचन अनुभाव ते अनुराग
व्यंगि सखी की उक्ति नाइका प्रति तौ इव
त्वव्यंगि उत्प्रेक्षालंकार है ॥ ४३ ॥ दोहा ॥
मिलि चंदन बेंदी रही गोरे मुह न लखा
इ ॥ ज्यौं ज्यौं मद लाली चढै त्यौं त्यौं उघ
रति जाइ ॥ ४४ ॥ उक्ति सखी की नाइका की
मद्यपान को समय उन्मीलित अलंका
र है ॥ यथा ॥ उन्मीलित सो जानिये स
द्रस बस्तु मिलि जाइ ॥ पै काहू इक भाइ
सौ भासै भेद बनाइ ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ भाल लो

॥ ९ ॥

19

लवेदीलरलितअ्रावतरहे विराजि। हं
दुकहनाकुंजमैंवसीमनोंलहअपभाजि
।४५। उक्तिसषीकीसषीसोंवचनअ
नुभयउत्प्रेक्षालंकारहै ॥४५॥ दोहा ॥ लो
नमुहडीठिनलगैप्योकहिंदीनोईछि ॥
हूताहुलागनिलगीदियेदिठौनारीठि ॥४६॥
उक्तिनाइककीवचनअनुभावकेरिअनु
रागव्यंगिजोसषीकीउक्तिहोइतौस्तुति
नाइकाकीउक्तिहोइतौरूपगर्वितायांव
काकीउक्तितेव्यंगिहैरीठिसहमैंसहेस
बविभावनालंकारहै ॥४६॥ दोहा ॥ प्रिय
तियसौंहसिकैकहैलषौदिठौनादीन ॥
चंदमुषीमुषचंदतैभलौचंदसमकीन ॥४७॥
सासातदरसनवचनअनुभावकेरिअनु
रागव्यंगिअरुव्याघातहूषनकोनिवार
नहैनाइकासौंनाइककोपरिहासउपमा
लंकारहै ॥ यथा ॥ पहिलैनिरजितेवर्नि
येफिरिवोजेउपमान ॥ सोहूषनव्याघा
तहैवरनतबुद्धिनिधान ॥४७॥ नेत्रवर्न
नंदोहा ॥ रससिंगारमंजनकियेकंजन
भंजनदैन ॥ अंजनरंजनहूबिनाषंजन

20

ग्र. चं.

॥ १० ॥

गंजननैन ॥ ४८ ॥ जो सखी की उक्ति ना
इक प्रति तौ इ तत्त्व व्यंगि जो नाइका की
उक्ति तौ स्तुति जो नाइक की उक्ति तौ
स्मृति संचारी गुन के थन इसा वचनानु
भाव ते अनुराग व्यंगि छेकानुप्रास
विभावनो लंकार है ॥ ४८ ॥ सोहा ॥ जो
गनु गुति सिखरा सवै मनौ मसा मुनि
मैन ॥ चाहत पियरु है तता से वत
कान निनैन ॥ ४८ ॥ उक्ति सखी की ना
इका नवोढा मुग्धता उते सो लंकार
की है जाते अवर काव्य है रूपक स्लेष
समासोक्ति को पोषत है याते संकर है
जथा ॥ जहां अप्रस्तुति फुरत है प्रस्तु
ति वर्नन मांह ॥ समासोक्ति तासो क
हत सुनो पूरब विपाह ॥ ४९ ॥ सोरठा ॥
सा हूँ के समधाइ कै नयन रंग बिबि
धिरंग जात ॥ झखो बिलाबि डुरि जात
जल लै बिजले जात लै जात ॥ ५० ॥ जो
सखी की उक्ति होइ तौ नाइका सौं तौ व्यं
गि कै रिस्या बिन बोलालक हति है
ता धुनि ते सुरत लै स्थिता नाइका जानि

॥ १० ॥

ऐसेंअरु मानभोतौहेतुनाहीजौनाइक
सोउक्तिहेउतौहृतत्वअन्यसंनिधितें
ध्वंगिहैउपमाउत्प्रेक्षाप्रतीपालंकार
कोसंकरहै ॥ ५० ॥ दोहा ॥ बेलनसिवाए
अलिभलेवतुम्बहेरामार ॥ कोनन
वारानैनमृगनागरभरनिसिकोर ॥ ५१ ॥
सखीकीउक्तिनाइकासौपरिहासकरै
हेरूपकश्लेषविभावनाकोसंकरहै ॥ ५१ ॥
दोहा ॥ वरजीतमरमैनकेअसरद्वमैन ॥
हरिनीकेनैनालितेहरिनीकोनैन ॥ ५२ ॥
सखीहृतकीउक्तिनाइकसौनाइकाकी
स्तुतिजमकालंकारतातेअवरकोव्यहे ॥
॥ ५२ ॥ दोहा ॥ संगतिदोषलगेसवनिके
हियतसाचेवैन ॥ कुटिलवंकभ्रूसंगहु
भाकुटिलगतिनैन ॥ ५३ ॥ सखीहृतीकी
उक्तिहइतोभेदेपाइनाइककीउक्तिहो
इतौसामोपाइवक्ताकीउक्तितेव्यंगिहै
मानिनीनाइकाप्रतिकुटिलसंबोधनहै
जाहीअर्थतेपुनरुक्तिदूषनकोनिवार
नहैअथवामुग्धानाइकाप्रतिसखीप
रिहासपूर्वकुटिलसंबोधनहैपुनरु

22

ग्र. ग्रं.

त्ति वच भासकअर्थांतरन्यासकोसंकेर हैअरुदोहाप्रस्ताविकहै ॥ जथा ॥ भासै जहपुनरुक्तिसोपैपुनरुक्तिनहोइ ॥ पु नरुक्तिवदभाससोकवितगीतरसलोइ कहोअर्थजहपोषियैऔरअर्थसोमा त ॥ सोअर्थांतरन्यासहैबुधजनकरतप्र तीत ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ मृगनैनिलगतबेधतहि योविकलकरतअंगअग्नि ॥ एतेरसबते विषमईसेनतीरनवान ॥ ५४ ॥ उक्तिना इकाकीनाइकाप्रतिवचनअनुभावतेअ नुरागव्यंगिअसंगतिअलंकारहै ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ दृगजानिनसंग्रहेमनुमुदतिकसे वैन ॥ मोहगतेमानोकियेविधिवातनसोने न ॥ ५५ ॥ नाइकानाइकसोसैननिमैवाते करतदेखिसखीहैतुलनाहितकरिचतुरा ईसोजानिवोवताव तिहैसैननिलाति तोउल्लेखालंकारहै ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ फिरि फिरिहोरतदेखियतुनिवलेनेकुरहैन ॥ ॥ ११ ॥ ॥ कजरारेमौनपैकरतकंजोकीनेन ॥ ५६ ॥

या

सखीकीउक्तिनाइकाप्रतिपरकाहैनाइ कनिकटवोधकहैकेदरसविदेपकेअनुभा

वहै उपमावाचकलुप्ता है ॥ ५६ ॥ सोरठा सब
अंगकै सिंगार सुघर नाइकने हाव विभाइ
रसजुत लेत अनंतता गति पुतरी पातुरराइ
॥ ५७ ॥ वासकसेज्या नाइका को इती नाइका प्र
ति उत्कंठा लियकाभरति है रूपक अलंकार
है ॥ ५७ ॥ सोरठा ॥ अंचल सो छवि तवनि छवि तै भई
कोट अलसाइ ॥ फिरि उफकनि कौ मगन
मति लगनि लगनि यालोइ ॥ ५८ ॥ नाइका के
मति संचारी गुन के थल रसाव छवन अनु
भाव ते नाइका के अभिलाष संक संचारी
अलसाइ वो अनुभाव ते पूर्वानुराग व्यंगि
अलसाइ वो सहेली छिना है इस नाइका को
अर्थलक्षित हेतु है रूपक अलंकार है ॥ ५८ ॥ सोरठा ॥
चमकि मात चंचल नयन छवि घूंघट पट की
न ॥ मानो सुरसरिता विमल जल उछलत
जुग मीन ॥ ५९ ॥ उक्ति नाइका की है तौ वितर्क
संचारी छवन अनुभाव ते अनुराग व्यंगि
ताकी उक्ति होइ तौ नाइका को रूप छवि उपजाव
ति है उत्प्रेक्षालंकार है ॥ ५९ ॥ सोरठा ॥ फूले फू
लकतलै फरी पलक के टासकिरवार ॥ केर
तव चावत विय नयन पाइक थाइ हजार ॥
॥ ६० ॥ उक्ति सखी की संजोग सिंगार है

अ॰चं॰ ॥१२॥

24

संचारीकटाक्षविक्षेपअनुभावधाइ
सहूलसकहैरूपकअलंकारहै॥६०॥
दोहा॥सारीडारीनीलकीओटअचूक
चुकैन॥मोमनम्रगकरिवरगहैअ
हेअहेरानैन॥६१॥सुरतिसंचारगुनक
थनरससावचनअनुभावकेरिपूर्वानु
रागव्यंगिगहैपरसलेसनिकैहैसमस्त
वस्तविषयकेरूपकपोषककश्लेष
मूलपरंपरितरूपकहै॥जथा॥अंग
मुख्यरूपकजहांलषौकैवितर्कमाह
सोसमस्तरूपकतहां सुनौपूरवलिपा
ह॥रूपकरूपकमलेजहांपरंपरितहै
सोइ॥श्लेषसुद्धद्वैभांतिकौबरनतहै
कविलोइ॥६२॥दोहा॥औरैओपक
नीनकनिगनौघनौसिरताज॥मनाथ
नीकैनैहकौवनौघनौपटलोज॥६३॥
सबीकीउक्तिसबसौनाइकस्तुतिकर
तिहैवितर्कभावध्वनिहैभेदकातिसै ॥१२॥
उक्तिअलंकारहै॥जथा॥औरैपरज
हांजियैअधिकोईकैहेत॥अतिसै
उक्तिभेदकेजहैकहतसुकविविसिरनेत॥६४॥

अथ नासिका वर्ननं दोहा ॥ जै टित नो लम
निज गाम्प गति सी क सुहाई नाक ॥ मनौं अलि
ली चंपक कली वसि रस लेत निसांक ॥ ६३ ॥
जो नाइक की उक्ति है तु तौ स्तुति उत्प्रेक्षा
लंकार है ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ वेध करि अनि आर
नयन वेध करन निषेध ॥ वरवर वेधयत
मो हियो ते नोसा को वेध ॥ ६४ ॥ उक्ति ना
इका प्रति अभिलाष रसा नाइका के संक
संचारी है या तें परकीया ध्वनित है विभा
वनालंकार है ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ जरपि लौंग
ललित तौ तऊ तन पहिरइ कआंक ॥ सस
संक बढिये रहै रहै वढी सी मांक ॥ ६५ ॥
उक्ति सखी की अथ वा नाइक को परिहास
श्लेष है सानुप्रास है ॥ यथा ॥ जेहा दोष मे
की जियै गुन विकल्प सविसेष ॥ कै गुन मे
ठहराइयै दोष सुजान कुलेष ॥ ६५ ॥ अ
धर वर्ननं दोहा ॥ लसति सेत सारी
छप्यो तरल तरौना कि ॥ परौ मनौ सुरस
रि सलिल रवि प्रतिबिंब विहान ॥ ६६ ॥
कवि की उक्ति है प्रस्ताविक उत्प्रे

26

अ॰ चं॰

लंकारहै॥ ६६॥ दोहा॥ लसैमुरासातिय
श्रवनयौमुकुतनदुतिपाइ॥ मानौप
रसकेपोलकेरहेस्वेदकेनछाइ॥ ६७॥

॥ १३ ॥

सखीकीउक्तिनाइकसौपरिहासउत्प्रे
क्षालंकारहै॥ ६७॥ दोहा॥ सालतिहै
नटसालसीक्यौंहूनिकसतिनाहि॥
मनमथनेजानोकेसीखुभीखुभीजिय
माहि॥ ६८॥ उपपतिकीउक्तिअनुभाव
स्मृतिसंचारीपूर्वानुरागव्यंगिउत्प्रेक्षा
लंकारहै॥ ६८॥ दोहा॥ झीनेपटमैझि
लिमिलीझलकतिओपअपार॥ सुर
तरुकीमनुसिंधुमैलसतिसपल्लव
डार॥ ६९॥ कविउत्प्रेक्षाकरैहैअवर
काव्यहै॥ ६९॥ अथकपोलवर्ननं दोहा॥
तरवनिकनककपोलदुतिबिचबीचहीं
बिकान॥ लाललालचमकतचुनीचौ
कासिन्हसमान॥ ७०॥ सखीनाइकसौ
परिहासकरतिहैमालितउपमालंकारहै॥
जथा॥ सदसवस्तुमैहेतुनलहै॥ तिहि
थलकेबिजनमालितकहै॥ उपमा

॥ १३ ॥

अरु उपमेय साधारन वाचक होइ ॥ ए
चारो पै जै तहां पूरन उपमा सोइ ॥ ७० ॥
अथ स्वर्नन दोहा ॥ बेसरि मोती दुति
झलक परी अधर पर आइ ॥ चूनो होइ
न चतुर तिय क्यों पट पोछो जाइ ॥ ७१ ॥
सषी की उक्ति नाइका सो परिहास करि
स्तुति व्यंगि भांति पर्नेकृति अलंकार है ॥
॥ यथा ॥ जहां वचन मै औरके भूषन रहै
जिहि माह ॥ वहे अपुन्हुति भांति वरन
त है कवि नाह ॥ ७१ ॥ अथ रसन वर्नन दोहा ॥
नै कुहसौ हा वानि तजि लबो परतु मुष
नाहि ॥ चोकी चमक निचोध मै परति बौ
धसो दीठि ॥ ७२ ॥ नाइका अथवा सषी की
स्तुति करति है काव्यलिंग अलंकार है ॥
यथा ॥ अर्थ समर्थन कीजियै जहां जुक्ति
सौ मित्र ॥ काव्यलिंग भूषन तहां भाषत
सुकवि पवित्र ॥ ७२ ॥ अथ चिबुक दोहा ॥
कुच गिरि चढि अति थकित है गई दृष्टि
मुष चाउ ॥ फिरि न टरी परियै रही परी
चिबुक की गाड ॥ ७३ ॥ सति संचारी गु
न कथन दसा वचन अनुभाव के रिना

28

र. चं.

इ(क)कोपूर्वानुरागव्यंगिविषमालंकारहै ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ ललितस्यामलीलाललन वढीचिवुकछविदून ॥ मधुछाकोमधुकरपस्योमनुक्रगुलावप्रसन ॥ ७४ ॥ दूतीकीउक्तिनाइकाकीस्तुतिकरिलैगयेवोचाहतिहैउत्प्रेक्षालंकारहै ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ चिवुककूपमेरूपदगहांसीफांसीडारि ॥ डरैनेडीगाडगहिनैनवटोहीमारि ॥ ७५ ॥ वचनअनुभावकैकरिसुमिरनसंचारीगुनकेथननाइककोपूर्वानुरागव्यंगिसमस्तविषयरूपक ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ तोलछिमोमनजोलहोसोगतिकहीनजाति ॥ ठोडीगाडगडयोतऊउड्योरहैदिनराति ॥ ७६ ॥ नाइकाप्रतिनाइककीउक्तिनिजविरहनिवेदनविभावनालंकारहै ॥ ७६ ॥ अथमुखवर्ननदोहा ॥ सरसुहितेहूमुरितेमनमुखसुखमाकीओर ॥ चितैरहतचहुओरतेनिहचलनिचषचकोर ॥ ७७ ॥ नाइकाकीउक्तितोरूपगर्वितादूतीकीउक्तितोनाइकप्रतिदूतव्यंगिकविकीउक्तितोजाडेकीरि

॥ १४ ॥

॥ १४ ॥

तुकोवर्ननहैभ्रांतिअलंकारहै ॥ यथा ॥
अमुखितहोइआइ ॥ भखनसुभ्रांति
गाइ ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ पत्राहीतिथिपाइयै
वाघरकेचहुंपास ॥ नितप्रतिपूनोहार
हतआननओपउजास ॥ ७८ ॥ उपपति
कीउक्तितौवचनअनुभावव्यंगिजोहू
ताकीउक्तिनाइकप्रतितौहूतत्सतेनाइ
काकेअनुरागव्यंगिवक्ताकीउक्तितेव्यं
गिहैपरिसंख्यालंकारहै ॥ यथा ॥ औरथ
निबैठैएकथलइजेथलठहराइ ॥ परिसं
ख्यातासौंकहैसकलसुकविसमुदाइ ॥ ७९ ॥
दोहा ॥ छप्पोछप्योलोमुकुलसैकौनेअंब
लेवार ॥ मनोकलानिधिकलमलैकालिं
दीकेनार ॥ ८० ॥ जोनाइककीउक्तितौसाक्षा
तरसनमैस्तुतिव्यंगिहूतोकीउक्तितौना
इककोअभिलाषवक्ताकीउक्तितेव्यंगि
वस्तुरूपेतौअभिसरविधेयहूबनहै ॥ यथा ॥
प्रथमकहेजोवाहियेसोपरस्पोछेहोइ ॥
सोअभिप्रसविधेयहैसौभाषतकविलो
इ ॥ ८१ ॥ सोरठा ॥ मंगलबिंदसुरंगमुखस

सिकेसरि आउगुर । इकनारी तेहि संगर
समय कियनो विन जागते ॥ ८० ॥ उपपति
की उक्ति वचनन अनुभावते व्यंगि स्मृति सं
चारी गुन के कथन स्सा पूर्वानुराग व्यंगि स
मस्त वस्तु विषय रूप को लंकार है ॥ ८० ॥
दोहा । जरीकोर गोरे वदन बढी खरी छवि
देखि । लसति मनौ बिजुरी किये सारद स
सि परिवेखि ॥ ८१ ॥ सषी को उक्ति उत्प्रेक्षा
लंकार है ॥ ८१ ॥ अथ ग्रीवा वर्नन दोहा
पहिरत ही गोरे गरै यों दौरी दुति लाल ।
मनौ परसि पुलकित भई मौलसिरी की मा
ल ॥ ८२ ॥ उक्ति जो माल लाल भाई है ताकी है
तु तेरो मांन्यो कहि नाइका को प्रेम नाइ
का कौ जनावति है उत्प्रेक्षा लंकार है ॥ ८२ ॥
दोहा । बरी लसति गोरे गरै धसति पान
की पीक । मनौ गुलीबंद लाल की लाल ला
ल दुति लीक ॥ ८३ ॥ सषी को उक्ति नाइक
सौ है तब सषी प्रति है तो स्तुति नाइका
की उक्ति तौ परोक्ष स्तुति स्मृति संचारी गु
न कथन स्सा वचनन अनुभावते पूर्वानुरा

गव्यंगिजोप्रतसहोइतौथंकमतेवक्ताकी
उक्तिअप्रसंनिधितव्यंगिहैउत्प्रेक्षालंका
रहै॥ ८३॥ अथहास्यवर्नन दोहा॥ उर
मानिककीउरवसीरटतघटतदृगदाग
झलकतवाहिरभरिमनौतियहियकोअनु
राग॥ ८४॥ सखीकीउक्तिनाइकसोनाइका
कोअनुरागकोआधिक्यव्यंजितकर्तिहै
जोनाइककीउक्तितौस्तुतिउत्प्रेक्षालंकारहै॥
॥ ८४॥ दोहा॥ दुरतनकुचबिचकंचुकीचुप
रीसारीस्वेत॥ कविआंकनकेअरथलौप्र
गटदिखाईदेत॥ ८५॥ उक्तिसखीकीअथ
वानाइककीनाइकाप्रतिपरिहासअर्थांत
रन्यासअलंकारहै॥ ८५॥ दोहा॥ सोनजुही
सीजगमगतिअंगअंगजोवनजोति॥ सुर
गकुसुंभीकिंचुकीदुरंगरंगदुतिहोति॥ ८६॥
सखीकीउक्तिनाइकसौइतनाइककीउ
क्तिहोइतौसखिसंबोरागुनकथनरसा
स्वनअनुभावकरिअनुरागव्यंगिउत्प्रे
क्षोपमालंकारहै॥ ८६॥ दोहा॥ भईसुघर
तनवसनमिलिवरनिसकैनसुवैन॥ अंग

औपअंगीकुरैआंगीआंगकुरैन॥८७॥
सबीकोउक्तिनाइकेसौहोइतौइतवि
नाइककीउक्तिपरोछहोइतौस्मृतिसं
चारोगुनकथनकरिवचनअनुभावते
अनुरागव्यंगिप्रत्यछहोइतौस्तुतिवि
भावनालंकारहै॥८७॥अथकरवर्नन॥
दोहा॥गोरअगुरीअरुननबछला
स्यामछविदेइ॥लहतिमुकुतिरतिप
लेकजइनैनत्रिवेनीसेइ॥८८॥नाइ
ककीउक्तिनाइकाप्रतिस्तुतिरूपकअ
लंकारहै॥८८॥दोहा॥गडुवडीछवि
छाकिछकिछगुनीछोरछुटैन॥रहे
सुरंगरंगिरंगिउहीनहदीमिहदीनैन॥
॥८८॥स्मृतिसंचारोगुनकथनदरसावि
वेनअनुभावकरिपूर्वानुरागव्यंगिना
इककोउत्प्रेछालंकारहै॥८८॥दोहा॥
करउचाइघूघटकरतउसरतपटगुझ
रोट॥सुखमोटैलूटीललनलखिल
लनाकीलौट॥९०॥सखीकीउक्तिस
खीसौमोटैसइलाछनिकहैसंबं

धातिसयोक्तिअलंकार है ॥ जथा ॥ संबं
धातिसयोक्तिजहदेतअजोगहिजो
ग ॥ ग्रंथनकोमतदेषिकेबरनतहेकबि
लोग ॥ २० ॥ कटिबर्ननंदोहा ॥ लगीअ
नलगीसीजुबिधिकरीषरीकटिषीन ॥
करेमनौजाहीकसरिकुचनितंबनु
गपीन ॥ २१ ॥ उक्तिसषीकीसषीसो
हइतौबितर्कसंचारीबचनअनु
भावकेरतिअनुरागब्यंगिउत्प्रेक्षालं
कार है ॥ २१ ॥ दोहा ॥ बरजेहूनीहटबटै
नासकुंचैनसकोइ ॥ दूटतिकटिदु
मचीमचकिलेचकिलचकिबचिबि
नोइ ॥ २२ ॥ सषीकोउक्तिनाइकप्रति
नाइकाकोगुनकथनकरिहैतब्यं
गिउत्प्रेक्षालंकारहै ॥ २२ ॥ जंघाबर्ननं ॥
दोहा ॥ जंघजुगललोइननिरेकरे
मनौबिधिमैन ॥ केलितरुनिदुषदे
नाकेलितरुनिसुषदेन ॥ २३ ॥ स
षीकीउक्तिनाइकासौपरिहासकरि

अ. चं. उक्तेसाजमकालंकारहै ॥ ९३ ॥ दोहा ॥
रह्योदिढगुढाठसुगाहेमैमहरिगयो
॥२७॥ नसूर ॥ गुरोनमनुगुरलोनिचुभिभो
वरनचपिचूर ॥ ९४ ॥ स्मृतिसंचारीगु
नकेकथनवचनअनुभावतेपूर्वानुरा
गव्यंजितचुभिवरसहेलनहकेहैसंवं
धातिसयोक्तिअलंकारहै ॥ ९४ ॥
दोहा ॥ कियहहिलचितचायेलगिव
जिपाइलेतुअपाइ ॥ पुनिपुनिसुनिसु
निमधुरधुनिकौनलोलकनेलचाइ ॥
॥ ९५ ॥ सखीकीउक्तिनाइकाप्रतिप्रेम
गर्वितासव्यंगिकाव्यलिंगप्रश्नोत्तरकोसं
करहै ॥ यथा ॥ अर्थसमर्थनुकीजिये
जेहजुक्तिसौमित्र ॥ काव्यलिंगभूषन
तेहभाषतसुकविपवित्र ॥ उत्तरदेवे
मैजहाप्रश्नोपरतलखाइ ॥ प्रश्नोत्तर
कौभेदयहप्रथमकेहतकविराइ ॥ ९६ ॥ ॥ ७ ॥
प्रग पगावर्ननं दोहा ॥ पगपगअगमनप
रतचरनअरुनदुतिफूलि ॥ ठोरठोरल

छियतरहै उपहरियासौ फूलि ॥ ८६ ॥
दूतीकी उक्तिनायकप्रतिद्यलक्षं गि
उत्प्रेक्षालंकार है ॥ ८६ ॥ सोरठा ॥ कौ हरै
मायबेउ ताननकी लालौ लखीसुभाइ ॥ पाइ
महावर देइ कौ आपुभई विपाइ ॥ ८९ ॥
सखीकी उक्तिनाइक प्रतिद्यलक्षं गि
उपमाजिमकैकोसंकर है ॥ ९० ॥ दोहा ॥ पा
इमहावरदैनकौ नाइन बैठी आइ ॥ फि
रिफिरिजानिमहावरी एडी मींजतिजा
इ ॥ ९१ ॥ सखीकी उक्तिनायकप्रति भ्रां
तिअलंकार है ॥ जथा ॥ अमुचितहोइ
अहि ॥ भेषनसुभांतिगाइ ॥ ९२ ॥ दोहा ॥
सोहतअंगुठापाइकौ अनवटजरोजराइ
जीतोतरवनिदुतिसु ढरपरैतरनिमनु
पाइ ॥ ९३ ॥ प्रसाधिकासखीकी उक्ति
नाइकप्रतिएकवचनपार्वतीकौ वर्नैहै
वाकेवैसेहि व्यंगिकरिउत्प्रेक्षालंका
र है ॥ ९४ ॥ अथमुकुमारतासौहा ॥
अबैनभारसम्हारिहै कौ जैरतैतनसु
कुमार ॥ सुधेपाइनपरतधरसोभोरही

अ॰ पं॰

कैभौंर ॥ १०० ॥ सखीकी उक्ति नाइ
कप्रति हूतलवस्तुति ध्वंगिवक्रोक्ति
अलंकार है । यथा ॥ और वातमै
और है अर्थ करै जहजो ताति ॥ अ
बसुद्धहू भांतिकी वक्रोक्ति उर
आवै ॥ १०० ॥ दोहा ॥ नजके धर
तहहिहियपधरतनाजुके कमला
वाले ॥ भजतिभारभयभीतहूं घ
नवं दनवनमाल ॥ १ ॥ उक्तिकवि
की है तौलसखीकी वंचलतो मैं वित
कीते उत्प्रेक्षाकरतु है सखीकी उक्ति
सखीसो हहूतौ नाइकके प्रेमकी
प्रसंसा मैं तौ नाइके अनकूल ना
इकोस्वाधीनायका अर्थ मै असम
अर्थ पूछन है सो अपुस्ट अर्थ मि
तिभ्रिवसी भ्रलेषा है नदुस्टो याव
चनतेलिवारन है जो वाइतौकी
उक्ति होइ तौ भिसे पाइ नाइके
सौ नाइकाकौ प्रेम मसखितकरिमा

॥१८॥

॥१९॥

37

नमोवलकरतिहैउत्प्रेक्षालंकारहै॥ जथा॥ जेहकीजेतसंभावनावस्तुहै तफलनलेषि॥ तीनिभांतिउत्प्रेक्षाव स्नतवद्धिविसेषि॥ १॥ दोहा॥ घालेप रिवेकेउरनसकैनहाथछुआइ॥ मनकेतुहियेगुलाबकेफमाफमाव तिपाइ॥ २॥ सषीकीउक्तिहोइतौना इकप्रतिविंगसौसुकुमारताकहि नाइकेकौफलवि उपजावृतिहैसषी कीउक्तिस्तुतिव्यंगिसवंधातिस योक्तिअलंकारहै॥ २॥ दोहा॥ मेव रजीकेवारतेइतकितलेतकरौट॥ पषुरीगडेगुलावकीपरिहेगातषरौट॥ ३॥ नाइककीउक्तितेसामोपाइ करिवेतेमानिध्वनितहैव्यंगिसामो पाइहनसोपाइलघुमानहोतुहै यातेलघुमानहैकहियेईवीमूल कविपलेमसिंगारउत्तमकाव्यहैप र्याउक्तिअलंकारहै॥ यथा॥ पर्यायोक्ति

प्रकारहैकेघुसवनासौवात॥मिस
करिकारजनकौजियैजेसोचितहि
मुहात॥३॥सोहा॥अरुनसिरोरुह
वरनकरअंगुरीअतिसुकुमार॥
धुवतसुरंगाईगुरमनौचपिविधु
अनकेभार॥४॥सषीकौउक्तिना
इकसोहेइतौइतसब्बंगिमाझाते
इरसनमैनाइककौउक्तिवचनअ
नुभावतेवितर्कसंचारीअनुरागव्यं
गिउत्प्रेक्षालंकारहै॥४॥अथगा
तवर्ननं सोहा॥वरनेवामसुकुमार
तासबविधिरहीसमाइ॥पषुरी
लगीगुलाबकीगातनजानीआइ॥५॥
नाइकाकौसषीकौउक्तिसौसुति
नाइककौउक्तितौरूपगर्विताभी
लितअलंकारहै॥यथा॥सदृस
वस्तुमैभेदनलहै॥तिहिथलकवि
जनमीलितकहै॥५॥सोहा॥पहिर
नभूषनकनककेकहिआवतइहि

हत ॥ दरपनमेंससिमोरस्वादेहरिदिपाई
दत ॥ ६ ॥ उक्तिनाइककीनाइकाप्रति
स्तुतिविंबमालंकारहै ॥ ६ ॥ दोहा ॥ मा
नौविधिचितनअंसछविसिखसैराधिवे
काज ॥ द्रगपगापेछनकौंकियेभषन
पाइनसजि ॥ ७ ॥ दर्पणसोनजुहीपि
रतिसोनजुदासमेंअंग ॥ उत्तिलपिट
तिपटस्वेतमैंकरतिविनौटीरंग ॥ ८ ॥
दूतीकीउक्तिनाइकप्रतिनाइकासं
केतमैपठुवासखितकर्तिहै बोध
व्यंगिहैप।रक्रियाजेमफकतजुना
लंकारहै ॥ यथा ॥ निजगुनतेजिसव
वस्तुजहसंगतिकोगुनलेइ ॥ अलं
कारतदुनतहानिरषतकविकेहिर
दै ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सहजस्वेतपचतोरिया
पहिरतअतिछविहोति ॥ जलचा
दरिकैरीपलौजगमगातअंगजो
ति ॥ १० ॥ सषीकीउक्तिहेइतौस्तुति
नाइककीउक्तिहेइतौस्मतिसंचारी

40

अ॰ चं॰ ॥२०॥

गुनकथनद्सा वचन अनुभावते
अनुरागव्यंगि उत्प्रेक्षालंकार है॥
८९॥ दोहा॥ हेरी झीलछिरी जि है
छवि हिछवी ले नाल॥ सो नजुही
सी होति दुति मिलति मालती मा
ल॥ ९०॥ सखी की उक्ति नाइकाप्र
ति नाइका की स्तुति करि लै चल्यो
चाहति है तद्गुनालंकार है॥ ९१॥
दोहा॥ केसरि कौ सरि कैरि सकै
चंपक कितक अनूप॥ गात रूप
लखि जात दुति जात रूप को रूप॥ ९२॥
सखी की उक्ति नाइका प्रति है ताते
नाइका की स्तुति नाइक की उक्ति है
इतै स्मृति संचारी गुनकथन दसा
वचन अनुभाव करि अनुराग व्यंगि
प्रतीपालंकार है॥ यथा॥ जहा सुक
वि उपमेय को उपमान गातन और
॥२०॥ तीजो भेद प्रतीप को वरनत कवि सिर
मौर॥ ९३॥ दोहा॥ चाहि लन बलो इन

लगैकौनजुवतिकीजोति। जाकीतनकी
छाहछिगजोंनछाहसीहोति॥१२॥
पूर्ववतउल्लेसालंकारहै॥१२॥दोहा॥
कहिलहिकौनसकैदुरीसोनजुहीमें
जाइ॥तनकीसहजसुवासताइतीजो
नवताइ॥१३॥सषीकीउक्तिसषीसौ
चोरमिहाविनामैकेइतनकरिनाइ
ककौसंकेतसषीतकरतिहैउन्मीलि
तअलंकारहै॥यथा॥उन्मीलितसोजा
नियैसदृसवस्तुमिलिजाइ॥पैकाहू
एकभाइसोभावैभेदुवनाइ॥१४॥दोहा॥
कहाकुसुमकेहकौमुदीकितिकैआर
सीजोति॥जाकीउजराईलषैआंषिऊ
जराहोति॥१५॥नाइककीउक्तिहाइतौ
स्मृतिसंचारगुनकथनरसावचनअ
नुभावतेपूर्वानुरागव्यंगिसषीकीउ
क्तिनाइकप्रतिइतौवसषीप्रतितौस्तु
तिवक्ताकीउक्तिक्रमसंनिधितेव्यंगि
प्रतीपालंकारहै॥१५॥दोहा॥कंचनत
नधनबरनबररहोरंगमिलिरंग॥

अ॰ चं॰

मानी परति सुवास सुहा के स खिला
गी अंग ॥ १५ ॥ पूर्ववत उन्मीलितालं
कार है ॥ १५ ॥ दोहा ॥ अंग अंग नग

॥ २१ ॥

जगमगति दीप सिखा सी देह ॥ दि
या बढाए हू रहै बडो उजेरो गेह
॥ १६ ॥ उक्ति सखी की नाइक सो स्तु
ति नाइक की उक्ति तौ स्मृति संचा
री गुन कथन दरसाव वन अनुभा
व ते पूर्वानुराग व्यंग्य पूर्व रूप कै
अलंकार है ॥ १६ ॥ दोहा ॥ ह्वै कपू
र मनि मै रही मिलि तन दुति मुकु
तालि । छिन छिन खरी विचछनौ
लखति छ्वाइ तिन आलि ॥ १७ ॥ पूर्व
वत भ्रांति अलंकार है ॥ १७ ॥ दोहा ॥
रहि न परति समान दुति कनक क
नक से गात ॥ भूषन कर करकस ल

॥ २२ ॥

गत परस पिछाने जात ॥ १८ ॥
पूर्ववत उन्मीलित अलंकार है ॥ १८ ॥
दोहा ॥ करत मलिन आछी छबि
हि हरत जु सहज विकास ॥ अंगरा

ग अंग निलम्पौ औ अमारसी उसास ॥ १८ ॥
पूर्ववृत विषम अरु उपमा को संकर है
॥ १८ ॥ दोहा ॥ अंग अंग प्रतिबिंब परि
दरपन से सब गात ॥ दुहरे तिहरे चौहरे
भूषन जाने जात ॥ २० ॥ पूर्ववत उत्प्रे
सालंकार है ॥ २० ॥ दोहा ॥ अंग अंग
छवि की लपट उपटत जाति अछेह ॥
खरी पातरी हौ तऊ रहै भरी सी देह ॥ २१ ॥
पूर्ववत विरुद्धमति भूषन उत्प्रेसाले
कार है ॥ २१ ॥ दोहा ॥ कंचन तन छिन्नै पहर
तें कंचन से तन वाल ॥ कुम्हिलानी जा
नी परति उरचंपे की माल ॥ २२ ॥ पूर्व
वृत उन्मीलिता लंकार है ॥ २२ ॥ इति
श्री अनवरचंद्रिका पांसिजन चव
र्नन नाम तरतीय प्रकास: ॥ ३ ॥ अथ
मुग्धादि नायका वर्ननं दोहा ॥ छुटी
न सिसुता की झलक झलक्यो जोवन झलको
अंग ॥ दीपति देह दुहून मिलि दिपति
ताफता रंग ॥ २३ ॥ सखी की उक्ति वैसं
धि उत्प्रे सालंकार है ॥ २३ ॥ दोहा ॥ ति

44

अ॰ चं॰

यतिपितरतनि किसोरवयपुष्पको
ल समय सेन ॥ प्रफुल्यनिपाइये वैस
संधि संक्रोन ॥ २४ ॥ उक्ति नाइक ॥२२॥
की अवर को ध्व है वै संधि रूपक अ
लंकार है ॥ २४ ॥ दोहा ॥ लाल अलो
लेक लरिकई लखि लखि सखी सि
हाति ॥ आज काल्हि मै देखियत उ
र उकसौंही भाति ॥ २५ ॥ सखी की उ
क्ति नाइक प्रति लक्षिता जोवना उ
त्प्रेक्षालंकार है ॥ २५ ॥ दोहा ॥ अपने
अंग के जानि कै जोवन नृपति प्रवीन ॥
तन मन नैन नितंब कौ वडो इजाफा
कीन ॥ २६ ॥ सखी की उक्ति नाइक प्र
ति स्तुति करति है नव जोवन भूषि
तो उत्प्रेक्षालंकार है ॥ २६ ॥ दोहा ॥ दे
ह दुलहिया की वढै ज्यौं ज्यौं जोवन
जोति ॥ त्यौं त्यौं लखि सौतें सबै वदन
मलिन दुति होति ॥ २७ ॥ सखी की उक्ति ॥ २२ ॥
नववधू विभावना रूपकातिसै उक्ति
कीजै तौ विसेष विभावना लंकार है ॥ २७ ॥

यथा ॥ उपमानकउपमेसेउपमानक
उपमेय ॥ ग्रसनवतौतेरूपकाअ
तिसै उक्ति लिखिलेय ॥ ७४ ॥ सोरठा ॥
भावकउभरौहोभयोकेधुकपरोभ
रूआइ ॥ सिपिहराकेमिसहियोलि
सिदीनेहरतिआइ ॥ ७५ ॥ सखीकोउक्ति
नवजोवनभछिततापर्यउक्तिअलं
कारहै ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ नवनागरितनमु
लुकलेहिजोवनआमिलजोर ॥ घ
टितेवढिविटिघटिरकमकरालीओर
कीओर ॥ ७७ ॥ सखीकीउक्तिनवजो
वनभछितामुग्धारूपकालंकारहै ॥
दोहा ॥ अरलेटरतनवरपरेरहैमसक
मनमैन ॥ होहैहेउरवढिचिलेखितव
तुराईनैन ॥ ७८ ॥ सखीकीउक्तिअंकु
रितजोवनाउत्प्रेक्षालंकारहै ॥ ७९ ॥
दोहा ॥ गाटेगाटेकुचनिटिलिपिय
हियकोठहराइ ॥ उकसौहैतेरहिये
दईसवैउकसाइ ॥ ८० ॥ सखीनाइ
कापतिपरिहासकरतिहैनवजो

अ॰ चं॰

वंनमें अछितोविभावनालंकार है ॥ ३१ ॥
दोहा ॥ ज्यौं ज्यौं जोवन जेठ दिन कुच
नितं अधिकात ॥ त्यौं त्यौं छिन छिन

॥२३॥

कटि छपाछीन परति नित जात
॥ ३२ ॥ सषी की उक्ति अवर काव्य लछि
ते जो वनारूपको लंकार है ॥ ३२ ॥ दोहा ॥
मानौ मुष दिषरावनी दुलहि नि क
रिअनुराग ॥ सासु सदन मन ललन
हूं सौतिन दियो सुहाग ॥ ३३ ॥ सषी की
उक्ति सषी सौं नवोढा नाइका को रूप
गुनवातुर्ज व्यंगि उत्प्रेक्षा पर्यायोक्ति
अलंकार है ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ निरषि न
वोढा नारि तन छुटत लरिकाई लेस ॥
भो प्यारो पीतम तियन मनौ चलत
पर देस ॥ ३५ ॥ सषी की उक्ति स
षी सौं नाइका लछित जोवना स
पत्नी न के ईर्षा संका उत्प्रेक्षा लंका

॥२३॥

र है ॥ ३५ ॥ इति मुग्धा ॥ अथ मध्या
दोहा ॥ चाल के की वाते चली सुनत
सषिन के टोल ॥ गोए हू लोइन हसत

तबिहसतजातकपोलन ॥ ३६ ॥ सषीकी
उक्तिसषीसौंनायकाहर्षसंचारीतेना
इकोसमानलजोमदनोमध्याविभा
वनालंकारहै ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ बाटतते
उरउरजभकभरितकेनईविभास ॥
योग ॥ निसौतिनकेहियेआवतिहैथी
उसास ॥ ३७ ॥ सषीकीउक्तिनाइकासौ
कुसामसरकेस्तिहैभरितकनईयापसते
उघतजोवनाबंजितहोइतौअसंग
तिअलंकारहै ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ करतेनटत
रीझतेषिझतमिलतषिलतलजिजात ॥
भरेभौननिमैकरतहैनैननसौंबात ॥
॥ ३८ ॥ सषीकीउक्तिसषीप्रतिसुरत
विचित्रामध्याविभावनालंकारहै ॥ ३८ ॥
दोहा ॥ समरसमसमरसकोबवसषिव
मनटिकुठहराइ ॥ फिरतिदृष्टिउफकत
फिरिदुरतिदुरिदुरिउफकतिआइ ॥ ३९ ॥
सषीकीउक्तिसषीसौंचपलताकौलसु
कचपासंधिमध्याजेमकरिगोलंकाविं
सक्षिहै ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ सकुचिसरकिवि

अ॰ चं॰

यतिकटतेपुलकिकंचुकतननतोरि ॥
करसैंअंचराकीओटकैरिजमुहाईमु
खमोरि ॥ ७० ॥ सखीकीउक्तिसखीसो
मध्यास्वभावोक्तिअलंकारहै ॥ ७१ ॥
अथप्रौढा ॥ दोहा ॥ ज्यौंज्यौंआवति
निकटनिसित्यौंत्यौंखरीउतालि ॥ झ
मकिझमकिटहलैकरैलगीरहचटैं
बालि ॥ ७२ ॥ सखीकीउक्तिसखीसो
रतिप्रियाप्रौढाचपलताओत्सुक्य
संचारीजोरतिवर्ननं ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ झु
किझुकिझपकौंहेपलनिफेरिफेरि
जमुहाइ ॥ जानिपियागमनीदमिस
दीसबसखीउठाइ ॥ ७४ ॥ सखीकीउ
क्तिसखीसोसाधारनप्रौढाअवहि
त्थाओत्सुक्यसंचारीवासकसज्जा
कोहियेपर्यायोक्तिअलंकारहै ॥ ७५ ॥
दोहा ॥ भौंहनित्रासतिमुखनटति
आंखिनसौंलपटाति ॥ ऐंचिछुडाव
तिकरइंचीआगेंआवतिजाति ॥ ७६ ॥
उक्तिनाइककीसखीसोप्रौढारतिको

॥ २४ ॥

49

बिदाबिभावनालंकारहै॥४४॥इति श्रीभानुचंद्रिकायांनाइकावननं चतुर्थप्रकास:॥४॥अथाष्टनायका तत्रादौस्वाधीनपतिका॥दोहा॥सुन हाईसवटोलमेरहाजुसोतिकहाइ॥ सुतौऐसेविष्यौआपुत्यौकरीअदौ बिलआइ॥४५॥सषीकी उक्तिनाइ कप्रतिस्तुतिकरतिहैनाइकाउपासन स्वाधीनपतिकाजोनियेलेषअलं कारहै॥यथा॥जहंजेषमेषीजिये गुनविकल्पसुविसेष॥कैगुनमैरह राइयैसोषसुजानकुलेष॥४७॥दोहा॥ नैकुडतेउचिवैछियैकहारहेगाहि गेहु॥धुदीजातिनहदीछिनुकुमि हदीमेपनदेहु॥४८॥नाइकाकीउ क्तिनाइकप्रतिबिब्बोकहावस्वरसा स्विकतेसंजोगलीलसर्वांगिआसं नेस्वाधीनावाजोक्तिअलंकारहै॥ ॥४६॥दोहा॥अपनेकरगुहिआपु

अ॰ चं॰

सौ हिय पथ हराई लाल ॥ नौल सिरी
चौरैं चढी मोल सिरी की माल ॥७७॥

॥२५॥

सखी की उक्ति सखी सौं इन के कहि
वेते नाइका के गर्व हर्ष संचारी व्यंगि
आसन्न स्वाधीना भेद कातिसयो क्ति
अलंकार है ॥७७॥ दोहा ॥ दियो जु वि
धुक उभाइ कै कंपित कर भरतार ॥ टे
ढी टेढी फिरति है टेढे तिलक लिला
र ॥ सखी की उक्ति सखी सौं नाइका के
कंप सात्विक भाव नाइका प्रेम गर्वि
ता स्वाधीनापति को विभावना लं
कार है ॥७८॥ दोहा ॥ लाल सलौने
अरु रहे अति सनेह सौं पागि ॥ त
नक कचाई देत दुख सूरन लौं मुह ला
गि ॥७९॥ उक्ति नाइका की है बिब्बोक हा
व प्रेम कै गर्व तें कपट निरादर स्लेष
उपमा को संसृष्टि ॥८०॥ अथ अभिसा

॥२५॥

रिका दोहा ॥ गोप अथाइ तें उठे गोरज
छाई गैल ॥ चलि बलि अलि अभि
सारि की भली संझौखी सैल ॥८१॥ इ

51

तीकी उक्ति नाइकाहि बासिया रिका पर
कीया प्रतिका ब्यलिंग अलंकार है ॥ ५० ॥
दोहा सघन कुंज बन घन तिमिर
अधिक अंधेरी राति ॥ तऊ न डरिहै
स्याम जह दीप सिखा सी जाति ॥ ५१ ॥
दूतीकी उक्ति नाइक प्रति नाइका के अ
भिलाष संचारी नाइका अभिसारिका
शृंगार रस रसी ग्रंथ के मत ते करि स्यै रति
मां ति ते असाध्या पर किया असमर्थ
हू बन विसेषो क्ति उपमा समुच्चय उ
तरालंकार को संके रहै ॥ यथा ॥ दोहा स
मुच्चय भाव बहु कहू के उपजत संग ॥
एक काज चाहै करौ हुंम अनेक इक अंग ॥
सब कारन ते कोजु न सरै ॥ उक्ति विसेष
मुहियमें धरै ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ निसि अधि
यारा नील पट पहिरि चली पिय गेह ॥
कहै दुराए क्यौं दुरै दीप सिखा सी देह ॥
॥ ५२ ॥ उक्ति सखी की सखी सो नाइका प
रकिया भिसारिका विसेषो क्ति अ
लंकार है ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ छपो छपाक

52

अ. चं. ॥२६॥

रछितिधुओतमससिहरनसम्हा
रि॥ हसतहसतचलुससिमुखीमुख
तेअंचलुटारि॥५७॥ शुक्लाभिसा
रिकाप्रतिदूतीकीउक्तिसितामति
भावधनिकेरिवेषवकलुपोपमा
लंकारहै॥५७॥ दोहा॥ अरीछरीस
टपटपरीविधुआधेमगहरि॥ सं
गलेगेमधुपनलेईभागनगली
अधेरि॥५८॥ परकियाभिसारि
काकीउक्तिसखीप्रतिप्रहर्षनअ
लंकारहै॥ जथा॥ विनाजतनवांछि
तफलहोइ॥ पहिलोभेदकहैकेवि
लोम॥ रछितहूतेअतिफलनलहै॥
दूजोभेदसुमतिजनकहै॥ जोकोजि
तनकरैअतिहोइ॥ वस्तुहाथआवै
पुनिसोइ॥ त्रिविधिप्रहर्षनजानौ
मित्त॥ लछनलेखिपैअवधानिचित्त॥ ॥२६॥
॥५८॥ दोहा॥ गुवतिजोहमैमिलि
गईनैकुनपरतिलखाइ॥ सोंधेकी
डोरीलगीअलीचलीसंगजाइ॥५५॥

53

सषीकीउक्तिसषीसौनाइकापर
क्रियाभिमानिकाउथा॥ ललितमुद्राको
संकेतहै॥ जथा॥ मुद्राप्रस्तुतिपर
विषैऔरअर्थपरगास॥ जोनिली
लिपैभानिमतजिनकेबुद्धिविला
स॥ ५५॥ सोरठा॥ नभकीलीथालीनि
साघटकालीधुनिकीन॥ रतिपाली
आलीअनतेंआगुबनमालीन॥ ५६॥
उत्कंठितानाइकाकीउक्तिसषीप्रति
कोमलोदाहरनहै॥ ५६॥ कलहंतरिता॥
सोरठा॥ अपनीगरजिनबोलिअतुकेह
निहारेतेरहि॥ तप्यारोभोजोपिकोमो
जियप्यारेसोरहि॥ ५७॥ उक्तिकलहं
तरितानाइकाकीनाइकप्रतिईर्षामा
वसाहितकौसुरूपकोब्यलिंग
लोटानुप्रासहै॥ ५७॥ सोरठा॥ भावबा
उनेहतजिवोहिविवेकतकिरहिकोजे॥ अ
लिअवदेतउराहनोअलिउपजतउर
लाज॥ ५८॥ कलहंतरितानाइकाकी
उक्तिसषीसोविषारसंचारकोव्यलिं
गआछेपअलंकारहै॥ जथा॥ दुरै

उत्कंठि
तावर्नन
६

अ॰ वं॰

निषेधजुविधिवचनऔरनि-
षेधाभास॥ पहिलेंआछेपके
कछुकदुतिपाछेतोस॥ ४७॥ दं
विप्रलेध्यामतिरामको॥ [illegible]
दोहा॥ साहसकैकुंजनुगई
लेभोनिनंदकिसोर॥ दीपविला
सोथरहरीलगेवयारिझकोर॥ ४८॥
सखीकीउक्तिसखीसोनाइकापर
कियाभिसारिकाप्रतोंपमालंका
रहै॥ ४९॥ अथवासकसेज्ञामति
रामकोदोहा॥ मनमोहनकेमिल
नेकोकरेमनोरथनारि॥ दियापौ
नकेसामुहेधरेभौनमैवारि॥ ५०॥
जिनललितकेरीहैसोकहतिहै
काकुप्रतिकाविलिंगछेकानुप्रास
है॥ ५१॥ दोहा॥ निसिनिधरातिनि
हारियेसोतिवदनअरविंद॥ सखी
एकेपडेदेखियेतेरेआननइंद॥ ५२॥ ॥ ५॥
वासकसेज्ञानाइकाकीउक्तिसखी
प्रतिरूपकालंकारहै॥ ५३॥ अथ

॥ ३७॥

खंडिता ॥ सवखंडितनुमैईर्षामूलवि
प्रलंभशृंगारहैहोहा ॥ वेईगडिगाडे
परीउपघ्रोलाकेहियेपैन ॥ श्यानोमो
रिमरोरिमनुमानिपुरिकेनुमैन ॥ ५२ ॥
अथधीराखंडिताकीउक्तिनाइकप्रतिउ
त्रैसोरूपककोसंकरहै ॥ ५३ ॥ सोरठा ॥ स
दनसदनकेफिरनकोमदनघुटेजेउरा
ह ॥ रूचैजेहोविसरतफिरोकितविसरत
इतश्याह ॥ ५२ ॥ धीराधीराखंडिताकीउ
क्तिनाइकप्रतिलाटाजमकेश्याक्षेपको
संकर ॥ ५३ ॥ सोरठा ॥ नहिनचाहचित
चतिहृगनिनहिबोलतिअनचाह ॥
सौसोसौरूपोरूपकेरैसौसौचितचि
केनाह ॥ ५४ ॥ नाइकप्रतिउक्तिसचीसौ
विभावनालंकारहै ॥ ५५ ॥ सोरठा ॥ पल
लिपीकेअंजनुअधरधरेमहावरभा
ल ॥ आजमिलेसुभलीकरीभलेवने
होलाल ॥ ५५ ॥ धीराधीरानाइकाकी
उक्तिनाइकसोकरीपदक्लिष्टहै

अ. चं.

असंगति अलंकार है ॥ ६५ ॥ सोरठा ॥
नहकि गासस औ रैग हेरहे अथकहै वै
न ॥ देखि बिबसौहै क्रियन यन क्रिये लि
यो है नैन ॥ ६६ ॥ सखी की उक्ति सखी सो
नाइका अधीरा खंडिता ई बोध्य विष
मालंकार है ॥ ६६ ॥ सोरठा ॥ नेह तेरे लो
रकरि कलकरियत दृगलोल ॥ लीके
नहीय हथाक की प्रतिमनि झलक
कपोल ॥ ६७ ॥ उक्ति सखी की नाइका
प्रति नाइका अधीरा खंडिता सोभास
ति है पै प्रकास तवितिहै दूषन ते निधि
यालसेना करि हास्यके बिभाव करि
हास्यरसु भासतु है मुख्य श्रृंगार है
ताते रसवदालंकार है भांतापन्हुति है
खंडिता मै वाच्य अर्थ प्रकट नवस तो लि
यो है ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ बाल कहा लाली भई
लोइन कोइन माह ॥ लाल तिहारे दृग
नि की परी दृगनि मै छाह ॥ ६८ ॥ संपति
को उत्तर प्रभु तेरस अलंकार है ॥ यथा ॥

॥ २८ ॥

॥ २८ ॥

यथा ॥ और प्रस्तुत रामो होइ ॥ प्रसो नर
सो हनो सोइ ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ विधुवदनी
मो सौ कहत तुम सांची यह वात ॥ नयन
नलिन पियरात रे भाइ निरखि ने आत ॥ ९८ ॥
धीरको उक्ति नाइक प्रति आक्षेप रूपक उप
मा रूपक नाम अलंकार अपन्हुति को संकर
है ॥ ९९ ॥ दोहा ॥ तरुन कोकनद वरन व
र भए अरुन निसि जागि ॥ वाही के अनु
राग दृग रहे मनौ अनुरागि ॥ १०० ॥ धीरा
की उक्ति नाइक प्रति उत्प्रेक्षा पर्जस्तालं
कार है ॥ यथा ॥ पर्जस्ता गुन और को औ
र विषै आरोप ॥ मानत है जिनके हिये
अलंकार को चोप ॥ १०० ॥ दोहा ॥ केसरि
केसर कुसुम के रहे अंग लपिटाइ ॥ ल
गे जानि नख अनखुली कत बोलत अन
खाइ ॥ १०१ ॥ उत्तमा सधीरा की उक्ति नाइ
क प्रति अवहित्थ करि नाइक के चिन्ह
छपावति है अपन्हुति अलंकार है ॥
दोहा ॥ लाल न लहि पाये दुरे चोरी सौ
ह करै न ॥ सीस चढे पनिहा प्रगट कहै

58

श्र. वं. ॥ २९ ॥

पुन्मारे नैन ॥ ७२ ॥ अथ धीरा की उक्ति ना
इक प्रति काव्यलिंग अलंकार है ॥ ७२ ॥
दोहा ॥ सुरत मूरत के से कुरल मुरतन नै
न मुरि नाहिं ॥ डोडो रंगुन सब रे कहल
कनौं डोरा हि ॥ ७३ ॥ अथ धीरा की उक्ति ना
इक सो लोकोक्ति अलंकार है ॥ ७३ ॥ दो
हा ॥ मरकत भाजन सलिल गति इंदु
कला के वेष ॥ झीन झगा मैं झलमलै
स्याम गात नख रेख ॥ ७४ ॥ अथ धीरा की उ
क्ति नाइक प्रति उत्प्रेक्षा लंकार है ॥ ७४ ॥
दोहा ॥ बैसी ये जानी परत झगा ऊज
रे मांह ॥ मृगनैनी लिपिटी सु बेसवेनी
उपटी बांह ॥ ७५ ॥ अथ धीरा बंदिता की
उक्ति नाइक प्रति उत्प्रेक्षा लंकार है
॥ ७५ ॥ दोहा ॥ चाह की चितसत पट पीय
रत अट पटे पाइ ॥ लपट बुझावत नि
बिरह की कपट भरेऊ आइ ॥ ७६ ॥ धीरा ॥ २९ ॥
धीरा की उक्ति नाइक प्रति विभावना
लंकार है ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ कित लवे का ज
चला इयत लतु राई की चाल ॥ कहे

रतपहरावरेसवैगुनलिरगुनमाल ।।७७।।
अथधीराकीउक्तिनाइकप्रतिसहितविरोधा
भासअलंकारहै ।।७७।। दोहा ।। पावकसोनै
नलिलागपेजावकलागोभाल ।। मुकुरहे
हूगनैकमैमुकरविलोकोलाल ।।७८।।
अथधीराकीउक्तिनाइकेप्रतिउत्प्रेसालंम
क ।।७८।। दोहा ।। रह्योचकितबहुधांचिते
चितमेरोमतिभूलि ।। सरउदैअवारहीं
हगनिसरोजसीफूलि ।।७९।। अथधीराकीउक्ति
नाइकप्रतिविभावनाउत्प्रेक्षालंकारहै ।।
।।७९।। दोहा ।। अनतवसेनिसिकीरिसनि
उरवरिरहीविसेषि ।। तऊलाजआईदु
कतिपरलेजोहैरेषि ।।८०।। निरसषाखं
डिताउत्तमासषीकीउक्तिसषीप्रतिवि
भावनालंकारहै ।।८०।। दोहा ।। सुरंगम
हावररसोतिपगनिरबिरहीअनषाइ ।।
पियअगुरिनुलालीलषेचरीउठीलल
गिलाइ ।।८१।। सषीकीउक्तिसषीसो
नाइकाअधीरालोइपरलसलिहैसमु
च्चयअलंकारहै ।।८१।। दोहा ।। प्रानपि
याहियमैवसैनचरवासविभाल ।।
भलोदिषायोआनिजहहरिहरद

अ॰ बं॰

परसाल ॥ ८२ ॥ अधीराबंडिताकी
उक्तिनाइकसौसह विरोधाभास
अलंकार है ॥ ८२ ॥ सोरठा ॥ नकुरन
उरसवजगुकहतकितवेकाजलेजा
त ॥ सौहैकीजैनैनजेतुमसौहैकि
तबात ॥ ८३ ॥ अधीराबंडिताकीउ
क्तिनाइकसौलोकोक्तिअलंकार
है ॥ ८३ ॥ सोरठा ॥ कितकहियतदुबरे
नकौरसिरसिववचनअलीक ॥ सबैक
हावरस्योलेबोलालेनमहावरलीक ॥ ८४ ॥
अधीराखंडिताकीउक्तिनाइकप्रति
छेकानुप्रास है ॥ ८४ ॥ सोरठा ॥ नबरे
बासोहै हियेअलसोहैसबगात ॥
सौहै हीतननैनावलिसौहैकतबा
त ॥ ८५ ॥ अधीराखंडिताकी उक्तिना
इकसौअवरकावेजमकालंकार है ॥
॥ ८५ ॥ सोरठा ॥ पलसौहै मुखपाकसौ
अलसौहैसबबैन ॥ बलिसौहैपकत
कीजियेअजनबोहैहा नैन ॥ ८६ ॥ अ
धीराबंडिताकीउक्तिनाइकसौजमका
लंकार है ॥ ८६ ॥ सोरठा ॥ कतलपियैपत

॥ ३० ॥

॥ ३० ॥

मोगरे सोन जुही निसि सैन ॥ जिहि चंप
क बरनी किए गुललाला रंग नैन ॥ ८७ ॥
अथ राधिका की उक्ति नाइक सो पूर
न बध जो सो केवल है जमक विषमा
लंकार है ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ सुभर भरो तुव
गुन कननि पकयो कुमति कुचाल ॥ कै
धौ दर रैलौ हियो दरकत को हि न लाल ॥
८८ ॥ अथ राधिका की उक्ति नाइक
सो उपमा रूपक को संकर है ॥ ८८ ॥ दोहा ॥
आजु कछू औरै भए छए नए ठिक ठैन ॥
चित के हित के चुगल ए नित के होहि
न नैन ॥ ८९ ॥ अथ राधिका की उक्ति
भेदकातिसयोक्ति अलंकार है ॥ ८९ ॥
दोहा ॥ फिरतु जु अटकत कटनु बिनु र
सिक सुरस न षियाल ॥ अनत अनत
नित नित हित नि कित सकुचावत ला
ल ॥ ९० ॥ अथ राधिका की उक्ति ना
इक प्रति उपालंभ संचारी उपासनल
स ला आछेपालंकार है ॥ ९० ॥ दोहा ॥
जो तिय तुम मन भावती राखी हियै बसाइ ॥

62

भा० पं०

मोहिछिजावतद्गनिहूवहइतअक
तस्माइ॥ ९१॥ अथीराबंदिताकीउक्तिनाइ
कसौउत्त्रेसालंकारहे॥ ९१॥ दोहा॥ मोहि

३१/३

करतावकतवावरीकरेकुराउहुरैन॥ कहे
इतरमनातिकोरंगनिचुरतमैनैन॥ ९२॥
अथीराबंदिताकीउक्तिनाइकसोलन
सनलसनाउत्तिमकाव्यसबीकीउक्ति
होइतोनाइकलछिताहेउत्त्रेसालं
कारहे॥ ९२॥ दोहा॥ पटसौपोछिप
रीकरोबरीभयानकेभेष॥ नागि
निसीलागतिद्गनिनागवेलिरगरे
ख॥ ९३॥ अथीराबंदिताकीउक्ति
नाइकसोउत्त्रेसालंकारहे॥ ९३॥
॥दोहा॥ कुरैननिघरकोदियवारा
वरीकुचाल॥ विसुसीलागतिहे
हियेहसीबिसीकीलाल॥ ९४॥
अथीराकीउक्तिधष्टनाइकसो
उत्त्रेसालंकारहे॥ ९४॥ दोहा॥ जि
हिभामिनिभूषनरच्योचरनमहावर
भाल॥ उहिमानोअबिपारगीओढ

॥ ३१॥

63

नकेरंगलाल ॥ ९५ ॥ अथ धीराखंडिता
की उक्ति नाइक सौ उतनै सोलंकार है
॥ ९५ ॥ दोहा ॥ मुह मिठास हग चीकने
भौंहै सरल सुभाइ ॥ तऊ करति आद
र खरौ बिन बिन हियै सकाइ ॥ ९६ ॥
नाइका की उक्ति नाइक सौ सादरथ लित
बिभावना लंकार है ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ बरे
अरु दवइ दिला इ है उरउपजी वृत्ति आस
उ सह संक विसक की करजै सेसो हि मि
मास ॥ ९७ ॥ नाइका की सखी की उक्ति
सादरथ ला इ हृष्टांत अलंकार है ॥ यथा ॥
उपमा अरु उपमेय गुन वाचक धर्म
बुजान ॥ होत बिंब प्रति बिंब सम दृष्टां
तु परिमान ॥ ९७ ॥ दोहा ॥ सो हत संग
समान सो जे है कहत सब लोग ॥ पान
पीक ओठनि बनै काजर नैनन जोग ॥
॥ ९८ ॥ अथ धीराखंडिता की उक्ति नाइ
क सौ दोहा प्रस्ताविक है अर्थांतरन्या
स अलंकार है ॥ यथा ॥ अर्थै कहै ज
ह पोखिये औ समर्थ सौ मात ॥ सोसमर्थ

तेरम्यासहैबुधिजनकरतप्रतीति
॥९८॥ अथ प्रोषितपतिकादोहा ॥
दुसहविरहदारुनदसारहेनऔ
रउपाइ॥ जातजातज्यौराखियेपि
यकीबातसुनाइ॥९९॥सखीकी
उक्तिविषादभावध्वनिकरिसखी
सौप्रोषितपतिकानाइकाउक्तिमा
काव्यलिंगअलंकारहै॥९९॥
दोहा॥ चलतचलतलौंलैचलैसब
सुखसंगलगाइ॥ ग्रीषमवासरसि
सिरनिसिप्यौमोपासबसाइ॥१००॥
प्रोषितपतिकाकीउक्तिसखीप्रति
उत्प्रेक्षालंकारहै॥१००॥दोहा॥
पजरयोआगिवियोगकीवह्योवि
लोचननीर॥ आठौजामहियोर
हैउड्योउसाससमीर॥१॥सखी
कीउक्तिसखीसौहोइतौविषादसं
चारीप्रोषितपतिकानाइकाहै
सखीकीउक्तिनाइकसौहोइतौनाइकाके

पूर्वानुरागतेविरहजोभयोहैताकोनि
वेदनकरतिहैऔसैहीनाइकाकीउक्ति
तेव्यंगिजानिपैपर्यायोक्तिअलंका
रहै ॥ १ ॥ दोहा ॥ पलनिप्रगटिबरुनीन
बढिनैहिकपोलठहरात ॥ अंसुआप
रिछतियाछिनकछनछनाइछिपि
जात ॥ २ ॥ सखीकीउक्तिविभासंचारी
करिसखीसौहोइतौप्रोषितपतिकाना
इकसौहोइतौविरहनिवेदनहूतव्यं
गिनाइककीहूतोभीउक्तिहोइतौपुरुष
वियोगपूर्वानुरागह्यांवक्ताकीउक्तितै
व्यंगिहैविभावव्यक्तिक्लिष्टतासोहै
अहारसदोषहैऔसैसहीऔरठौरजानि
पैपर्यायोक्तिअलंकारहै ॥ २ ॥ दोहा ॥
मरिवेकोसाहसुककैबढेविरहकीपीर
दौरतिह्वैसमुहैससीसरसिजसुरभिस
मीर ॥ ३ ॥ सखीकीउक्तिविभासकैसखी
सौहोइतौप्रोषितपतिकाहैतौविरह
निवेदनैपूर्वानुरागअमर्षसंनिधितै
व्यंगिविखिनालंकारहै ॥ ३ ॥ दोहा ॥

66

अ॰ चं॰ ॥३३॥

ध्यानआनदिगप्रानपतिमुदितरह
तिदिनराति॥ पलुकं पितपुलकित
पलकुपसीलकुपसीअतिओति॥४॥
सखीकीउक्ति सखीसोप्रोषितपति
कानाइकाकेस्मृतिरसाकंपसैमांच
स्वेदसुभाषतेव्यंगिअंतर्वर्त्तीसखी
सोहोइतौपूर्वानुरागस्मृतिअलं
कारहै॥ जथा॥ नेहसुधिकीजैनित
स्मरनओनितहमित्त॥४॥ सोरठा॥
विरहधरीलखिओगननिउद्दिन
के घोभैवार॥ अरहेआजुभजिभी
तरीवैरसतेआजुअगार॥५॥ सखी
कीउक्ति सखीसौप्रोषितपतिका
प्रलापरसानाइकसौउक्तिहोइतौ
पूर्वानुरागव्यंगिभ्रांतिअलंकारहै॥
॥५॥ सोरठा॥ अरीपरैनपरैजहैं
वरीजेराहिनजाहु॥ उरतिघोरि
गुलावसौमलैमिलैघनसाहु॥६॥
प्रोषितपतिकाकीउक्तिसखिनप्र
तिउद्वेगरसाविषमालंकारहै॥६॥

॥३३॥

दोहा ॥ कहे जु बचन बियोगिनी बिरह
बरनि बिलेलाइ ॥ किये न कोअ सुवा
सहित बातिय बचन सुनाइ ॥ ७ ॥ सखी
की उक्ति सखी सो प्रोषितपतिका नाइका
नाइका सो हे इ उक्ति तो पूर्वानुरागलो
कोक्ति सहे बिरोधाभास ॥ ७ ॥ दोहा ॥
सारेजतन निसिसिरनि सिसमहि बिर
हिनि तन ताप ॥ बासिबेको ग्रीषम दि
ननि परसोपरे सिनिपाप ॥ ८ ॥ सखी की
उक्ति सखी सो प्रोषितपतिका अलुक्ति
अलंकार हे ॥ जथा ॥ सतके बिमत पह
गानि पैक बिजेन परसअनप ॥ अलंकार
अलुक्ति जहू बरनत तमआश्र पतरूप ॥ ८ ॥ दोहा ॥
बिषप्रानन को पाहतरू करतिजतन
तन ताप ॥ जोकी दुसहरसा परसे सो
तिन हू संताप ॥ ९ ॥ सखी की उक्ति स
खी सो प्रोषितपतिका न को सबल
सपत्नी न के संकोस तारी व्याधि द
सा संबंधाति सयो कि अलंकार है
॥ १० ॥ दोहा ॥ आइ है आलेवसन जा

68

अ॰ खं॰ ॥३८॥

उहकी रात ॥ साहसु कै सनेह बस
सखी सवै ढिग जाति ॥ १० ॥ सखी की
उक्ति सखी सौ प्रोषितपतिका व्या
धि रसानाइक सौ होइ तौ पूर्वानुरा
ग अनुक्ति अलंकार है ॥ १० ॥ दोहा
सुनत पथिक मुह माह निसि चिनगै च
लै उहि गाम ॥ बिन पूछै बिन ही कहै
जियत बिचारी बाम ॥ ११ ॥ सखी की उ
क्ति सखी सौ प्रोषितपतिका [illegible]
नाइक के व्यति संचारी अनुमान
विभावना अलंकार है ॥ यथा ॥ हेतु पा
इ अनुमान ते समुझि ली जियै बात
अलंकार अनुमान सो बरनत के
बि अवरात ॥ ११ ॥ दोहा ॥ इत आव
ति चलि जात उत चली छसातक
हाथ ॥ चढी हिंडोरे सौ रहै लगी उ
सासनि साथ ॥ १२ ॥ सखी की उक्ति ॥ ३८ ॥
सामान्य सखी सो होइ तौ प्रोषि
तपतिका नाइक सौ होइ तौ पूर्वा
नुराग विरह तै दैनि उसे सालं

कारहै ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ विरह सुभाई
देह मेह कियो अति उहडहौ ॥ औसे
बरस मेह अबै जवा सौ ओजमै ॥ १३ ॥
नाइका की उक्ति साधारन सषी सो
है इतौ प्रोषितपतिका नाइका की उक्ति
सषी इती सो है इतौ पूर्वानुराग इष्टां
तअलंकार है ॥ १३ ॥ ज्यौ विजुरी जनु मे
ह आलि इहा विरहा धरी ॥ आठै जाम
अघेह द्रग जु वरत वरसत रहत ॥ १४ ॥
उक्ति नाइका की केनाइका को पूर्वानुरा
ग उत्प्रेक्षालंकार है ॥ १४ ॥ दोहा ॥ विप
त्ति परति हि दिन परतही तजे सुबलि स
मअंग ॥ रहि अवलौ ध कुभौ भाएव
लोचली जिय संग ॥ १५ ॥ नाइका की
उक्ति सषी सो है इतौ प्रोषितपति
का नाइका की उक्ति इती सो है इतौ
पूर्वानुराग उत्प्रेक्षालंकार है ॥ १५ ॥
दोहा ॥ छपो नेह कागद हिये भयो
लषाइ न टंक ॥ विरह तचो उघरो सुअं

अ॰ चं॰ ॥३५॥

70

वसेकुंडकोसोम्यांके ॥ ६६ ॥ सखी
कीउक्तिनाइकामध्यासौहोइतौ
प्रोषितपतिकापरकियाहोइतौ
पूर्वानुरागभावकीव्यक्तिलिष्टता
सौहैसंकेपदलोसलिकहैउप
मालंकारहै ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ नयोवि
रहवाढतिविथाषरीविकलजिय
वालें ॥ विलषादेषिपरोसिनीह
रषिहसातिहिकाल ॥ ७ ॥ सषीकी
उक्तिसषीसोनाइकाप्रोषितपति
काईषातेहर्षकोउदयजाकोगुनी
भूतव्यंगिकहतुहैमधमकाव्य
सुकियापरकियाकोसबलविभा
वनालंकारहै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ करकेमी
डेकुसुमलौंगईविरहकुम्हिलाइ ॥
सदासमीपनसषिनहूनीठिपि
छानीजाइ ॥ ८ ॥ सषीकीउक्तिसषी
सौहोइतौप्रोषितपतिकानाइक
सौहोइतौपूर्वानुरागव्याधिदसा

॥३५॥

अस्वसंनिधितेव्यंगि उपमालंकार है ॥
॥ १८ ॥ दोहा ॥ मराउरीबाटरिविषपा
कहाबरीखलिकेवाहि ॥ रहीअसाहिके
साहिअतिअवमुखआहिनआहि ॥
॥ १९ ॥ सखीकीउक्तिसखीसोप्रोषित
पतिकोव्याधिदसालाटानुप्रासस
हविरोधाभासअलंकार है ॥ १९ ॥
दोहा ॥ जाकेउरऔरैकछुलेगीलिर
हकीलाइ ॥ पजरैनारगुलासहविष
कीवातबुझाइ ॥ २० ॥ सखीकीउक्ति
सखीसोप्रोषितपतिकाभेदकोति
सोउक्तिश्लेषअलंकार है ॥ २० ॥ दोहा ॥
जबजबवेसुधिकीजियेतबतबए
सुधिजाहि ॥ आबिनआबिलेगेनए
आबिलागेनाहि ॥ २१ ॥ सखीदसानाइ
काकीउक्तिहेइतोप्रकबविजोग
सहविरोधाभासअलंकार है ॥ २१ ॥
दोहा ॥ कौनसुनैकासौकहौसुरति
बिसारीनाह ॥ वदावदीज्योलेतहै

72

रा॰ चं॰

॥३६॥

एयस्सावस्साह ॥ २२ ॥ प्रोषितपतिका
कीउक्तिसखीसौउद्वेगदसाजमका
लंकारहै ॥ २२ ॥ दोहा ॥ औरैभातिभ
एवाभ्यैसरवंदनचंद ॥ पतिविनुअ
तिपारतिविपतिमारतमारुतमंद ॥ २३ ॥
प्रोषितपतिकाकीउक्तिसखीपृति
उद्वेगदसाभेदकोतिसयोक्तिजमका
लंकारहै ॥ २३ ॥ दोहा ॥ नेकुनझरसी
विरहझरनेहलताकुम्हिलात ॥ दि
नप्रतिहोतिहरीहरीबरीझालरराति
जात ॥ २४ ॥ सखीकीउक्तिसखीसैअप्रा
श्वजेसंचारीकरिनाइकाप्रोषितप
तिकास्थानस्थपनइयनविसेवो
क्तिअलंकारहै ॥ २४ ॥ दोहा ॥ नहविन
सतनगराबिये जागतवडोजसुलेहु ॥ ज
रीविषमजुरजाइयेआइसुदरसनदेहु ॥
॥ २५ ॥ सखीकोसंदेसुनाइकप्रतिप्रोषित
पतिकासमेपमअलंकारहै ॥ २५ ॥ दोहा ॥
नितसंसौहंसौबचतुमनोमुइहिअन

॥३६॥

मान॥ विरह अगिनि तिल पिटनस कै रूप
हिन मौ धुसखान॥२६॥ सखी की उक्ति
सखी सौ वितर्क संचारी करि प्रोषित
पतिका उत्प्रेक्षालंकार है॥२६॥ दोहा॥
करी विरह ऐसी तऊ गैल न छाडतु नीच
दीनै हू चसमा चषनि चाहै लखै न मीच॥
॥२७॥ सखी को दैन्य भाव करि सखी सौ
होइ तौ प्रोषितपतिका नाइका सौ
उक्ति होइ तौ हू तलफ करि नाइका के पर्वानु
राग ते जु विरह भयौ है ताकौ निवेदन क
रति है अत्युक्ति अलंकार है॥२७॥ दोहा॥
मरन भलौ बरु विरह ते जह विचारि चि
यजोइ॥ मरन मिटै दुख एक कौ विरह
दुहू दुख होइ॥२८॥ प्रोषितपतिका की
उक्ति विषाद संचारी के लेष अलंकार है॥
॥२८॥ दोहा॥ औंधाई सीसी सु लखि वि
रह बरति बिललात॥ बिचहीं सूखि गु
लाब गौ छींटौ छुई न गात॥२९॥ सखी की
उक्ति सखी सौ प्रोषितपतिका नाइका
कौ विरह अत्युक्ति अलंकार है॥२९॥ दोहा॥

अ.सं.

हैसावोरीविरहवसकैवौरौसवगाउ॥
कहाजोलिलाकेकहाहैसखिहिसीतकार
नाउ॥३०॥सखीकीउक्तिसखीसौप्रो
षितपतिकानाइकाउद्वेगदसासंदेहअ
लंकारहै॥३०॥जथा॥जाकेसुनतहितु
रतमनहैजहवाकीवहमाति॥भासैजह
संदेहसोसोसंदेहवखानि॥३०॥दोहा॥
सोवतजागतसुपनेवसरसरसिचैन
कुंचैन॥सुरतिस्यामघनकीसुरतिविस
राविसरैन॥३१॥सखीकीउक्तिसखी
सौनाइकाप्रोषितपतिकास्मृतिदसा
विसेषोक्तिअलंकारहै॥३१॥सोरठा॥
कौउअंगांसबदकविसाकरवहनासज
ल॥कान्हवदननिमरद्दगामलंगउरे
रहत॥३२॥सखीकीउक्तिसखीसौना
इकाप्रोषितपतिकाकैनाइककीउक्ति
रूपकालंकारहै॥३२॥दोहा॥जिहि
निदाघदुपहरभईरहतिमाहकीराति
तिहिउसीरकीरावटीबरीआवतीआ
ति॥३३॥सखीकीउक्तिसखीसौप्रोषित

॥३१॥ ॥३१॥

पतिकाव्याधिदसाबर्न्योयोत्तिअलंकार
रहै॥३३॥दोहा॥सखीअग्निसनमतिबिर
हकीबधतेप्रेमरससभीजि॥अबबिनके
मगजलबहेहियोपसीजिपसीजि॥३४॥
नाइकाकीउक्तिकैसखीकीउक्तिसखी
सोबिनकैसंचारीप्रोषितपतिकाउत्प्रे
क्षालंकारहै॥३४॥दोहा॥गोपिनकेअ
सुवनिभरीसदासअसारपार॥डगरड
गरनैहुरहीबगरबगरकेवार॥३५॥
ऊधोसौउक्तिकसप्रतिप्रोषितपति
काजेहैगोपातिनकोबिरहनिवेदन
लुप्तोत्प्रेक्षालंकारहै॥३५॥दोहा॥स्या
मसुरतिकरिराधिकातरनितनजातीर॥
अँसुवनिकरतितरोसकोबिनुकुच
रैहैनीर॥३६॥सखीकीउक्तिसखीसो
प्रोषितपतिकाकेस्मृतिदसाबिचार
संचारउत्प्रेक्षालंकारहै॥३६॥दोहा॥
रह्योऐचिअंतनलहैअवधिदु
सासनबीर॥आलीबाटतेबिरहज्यौं
पंचालीकौचीर॥३७॥प्रोषितपति
काकीउक्तिसखीसोरूपकउपमालंकारहै॥३७॥

76

अ॰ चं॰

दोहा ॥ गनती गनिवे तें रहे छत हू
अछत समान ॥ अब अलि ए तिथि
औम लौं परे रहे तन प्रान ॥ ३८ ॥ प्रो
षितपतिका की उक्ति सखी सौं विषा
द संचारी प्रतीपमालंकार है ॥ ३८ ॥
दोहा ॥ मार सुमार करी खरी मरी मरी
हि न मारि ॥ सींचि गुलाब घरी घरी
अरी वरीहि न वारि ॥ ३९ ॥ सखी की
उक्ति सखी सौं प्रोषितपतिका व्या
धि संचारी उद्वेग दसा अर्थ विरो
धाभास लाटानुप्रास है ॥ ३९ ॥ दोहा ॥
कागद पर लिखत न बनत कहत सं
देस लजात ॥ कहि है सब तेरो हियो
मेरे हिय की बात ॥ ४० ॥ नाइका की
उक्ति होइ तौ प्रति संदेस नाइ
क कौ तौ प्रोषितपतिका नाइका कौ उ
क्ति होइ तौ पुरुष वियोग अति स
योक्ति अलंकार है ॥ ४० ॥ दोहा ॥
जाति मरी बिछुरत घरी जल सफ
री की रीति ॥ छिन छिन होति खरी ख
री अरी जरी जह प्रीति ॥ ४१ ॥ सखी

॥ ३८ ॥

॥ ३८ ॥

कीउक्ति सषीसौप्रोषितपतिकानाइ
काकीउक्ति होइ तौ अपनीप्रीतिकीप्र
संसाकरतिहै दृष्टांतअलंकार है ॥ ७९ ॥
दोहा ॥ बिरह बिथाजलपरसबिनेब
सियतमोउरताल ॥ कछुजानतजल
थंभबिधिदुरजोधनलौंलाल ॥ ८० ॥
प्रोषितपतिकाकी इतप्रति होइ तौ
संदेसनाइकेकौकहतिहै नाइकाकी
उक्ति होइ तौ उपालंभसंचारी पूर्वानुरा
गअनसंतिषितेअंगि रूपकउपमा
लंकार है ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ प्रितिसुधिदेसु
धिधाइय्वोदुहितिरहई निरास ॥ न
ईनई बढु रौदर्ई रहै उसासिउसास ॥ ८२ ॥
वितर्क सषीकीउक्ति सषीसोविधाता
कीनिंदाकरतिहै प्रोषितपतिकाकीस्र
तिसंचारीव्याधिरसाहर्ष लानुप्रासजे
मकविषमालंकारहै ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ लि
षनिजहियलागीबलैतबिधनबरे
बषवैट ॥ सबजनदेतनसरसाबो
टिबोहिषतबोट ॥ ८४ ॥ सषीकीउक्ति

अ॰ चं॰

सखीसौंप्रोषितपतिकानिरर्थइहलन
लेषालंकारहै ॥ ४४ ॥ अथआगते
॥३९॥ पतिकादोहा ॥ भेटतबनतेंनभाम
तोखितेतनरसतअतिप्यार ॥ धरतल
गाइलगाइउरभूषनबसनहथ्यार ॥
॥ ४५ ॥ सखीकीउक्तिसखीसौंआ
गतपतिकाकेहर्षसंचारीऔतु
ल्यसंबंधातिसयोक्तिअलंकारहै ॥
॥ ४५ ॥ दोहा ॥ कियोसयानीसखिन
सौनहिसयानअहमूल ॥ दुरैदुरा
इफूलज्यौंक्यौंपियआगमफूल
॥ ४६ ॥ सखीकीउक्तिसखीसौपर
कियाआगतपतिकासौहर्षअव
हित्थासंचारीसुद्धापन्हुतिअनु
मानेउपमालंकारहै ॥ यथा ॥ एक
वस्तुकोलोपकरिताथलआपे
आन ॥ सुद्धापन्हुतिकहतहैतासो ॥३९॥
सुकविसुजान ॥ हेतुपाइअनुमा
नतैसमुझिलीजियैबात ॥ अलंका
रअनुमानसोबरनतकविअवदात ॥ ४६ ॥

दोहा ॥ आयो मीत बिदेस ते काहू कह्यो
पुकारि ॥ सुनि हुलसी बिलसी हसी
दोऊ दुजननि हारि ॥ ७७ ॥ सखी की उ
क्ति सखी सौं परकिया आगतपति
का सो उ है हर्ष संचारी एकमत सबल
नाइका हेतु लखिता है स्वभावोक्ति अ
नुमान अलंकार है ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ रह्यो
बरोठे मै मिलत पिय प्रानन के ईसु
आवत आवत की भई बिधि की घरी घ
रीसु ॥ ७८ ॥ सखी की उक्ति आगतपति
का के है कै नाइका की औत्सुक्य संचारी
विभावोक्ति अलंकार है ॥ ७८ ॥ दोहा ॥
बिछुरे जिये सकोच इहि बोलत बनै
न बैन ॥ दोउ दौरि लगे हिये किये निचौ
हे नैन ॥ ७९ ॥ सखी की उक्ति सखी सौं
पति के आये संचारी आगतपतिका उ
त्तमका व्यंग्य काव्यलिंग अलंकार है ॥ ७९ ॥
अथ प्रवत्स्यत्पतिका दोहा ॥ रहिहै चं
चल प्रान ए कहि कौन के अगोट ॥ लाल
न चलन की मन धरी कौ नैनन पर ते पल
ओट ॥ ८० ॥ प्रवत्स्यत्पतिका की उक्ति

80

प्रो॰ चं॰ ॥४०॥

सखीसौकोमलोक्तिहैत्यानुप्रास
है॥५०॥ दोहा॥ फूलमाससुनिस
खिनमुखसाईचलेनमवार॥ गहि
करवीनप्रवीनतियरागपोरागमल्
हार॥५१॥ सखीकीउक्तिसखीसौ
प्रोषत्पतिकाआक्षेपालंकारहै॥
॥५१॥ दोहा॥ ललनचलनसुनिप
लननैअसुवाउमडेआइ॥ भईल
खाहनसखिनमैमूठहूजमुहाइ॥५२॥
सखीकीउक्तिसखीसौनाइकामध्या
प्रोषितपतिकाअवहित्थासंचारी
विहितअलंकारहै॥ यथा॥ विहि
तछिपापरबातकहैजोनिछिपा
वैभाइ॥ प्रातहिआएसेजपियह
सिहसिहसवेतिपाइ॥५२॥ ललन
चलनसुनिदुपरहीबोलीआपु
नईहि॥ राखोगहिहाटेहिये
मनोगिलगिलीदीहि॥५३॥ उक्ति ॥४०॥
सखीकीसखीसौउत्प्रेक्षालंकार
है॥५३॥ दोहा॥ बिलखीडभकौहे

बबनितियलेबिगमनवराइ ॥ विय
गहवरमेंआगरेताबीगरेलेगाइ ॥ ५३ ॥
सबीकोउक्तिसबीसौंप्रोष्यत्पति
काकोव्यलिंगलाटानुप्रासहै ॥ ५४ ॥
अओनआसहज़र गविरहइ
बरेगात ॥ अबहोंकेहाचलोइयत
लेलनचलनकोबात ॥ ५५ ॥ नाइका
प्रतिउक्तिसखीकीकैप्रोष्यत्पति
काकोआक्षेपालंकारहै ॥ ५५ ॥ दोहा ॥
वारहभरोअतिरसभरोविरहभरोस
वगात ॥ कोरिसदेसेउऊनकेचलेपी
रिलौजात ॥ ५६ ॥ सबीकोउक्तिसखी
सोप्रोषितपतिकादीपकालंकारहै
यथा ॥ उपमानवस्तुउपमेयसोइ
कपदलागैजोइ ॥ तासोंदीपककहत
हैपंडितकविसमुदाइ ॥ ५६ ॥ दोहा ॥
मिलिमिलिचलिचलिचलिमिलि
तआगनअथयोभान ॥ भयोम
हूरतभोरकौडोटीप्रथममिलान ॥ ५७ ॥

अ.सं.

सखीकीउक्तिसखीसौप्रोष्यत्पतिका
गातिवर्ननं ॥ ७ ॥ अथआगमिष्य
त्पतिकादोहा ॥ मगनैनीदृगकी
कोरउरउघाहतेनफूल ॥ विनसी
पियआगमउमगिपटनलगीदु
कूल ॥ ५० ॥ सखीकीउक्तिसखीसो
आगमिष्यत्पतिकाअनुमानअ
लंकारहै ॥ ५० ॥ दोहा ॥ वामबाहुफ
रकतमिलैजोहरिजीवनमूरि ॥ तौ
तोहीसौभेटिहौराखिदाहिनीदूरि ॥
॥ ५१ ॥ आगमिष्यत्पतिकाकीउक्ति
संभावनालंकारहै ॥ यथा ॥ ज्यौज्यौ
ज्यौत्यौहोतिहैकहनावतिजहव्या
ह ॥ तहाकहतसंभावनाकविपंडित
समुदाइ ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ मलिनदेह
वेईवसनमलिनविरहकेरूप ॥ पिय
आगमऔरैचढीआननओपअ
नूप ॥ ५३ ॥ सखीकीउक्तिसखीसौआ
गमिष्यत्पतिकाभेदकातिस्योक्ति
अलंकारहै ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ कहिपठ

॥४२॥

॥ ४८ ॥

ई मन भामते विय आगम की बात ॥ फू
ली आगन मै फिरै आगी आगन मा
त ॥ ६१ ॥ सखी की उक्ति सखी सो आग
मिष्यत्पतिका हर्ष संचारी लोकोक्ति
अलंकार है ॥ ६१ ॥ इति श्री अनेवर
चंद्रिकायां अस्टनाइका वर्ननं पंचम
प्रकास: ॥ ५ ॥ अथ रूपगर्विता दोहा ॥
दुसह सौति सालै न हिय गनति न ना
ह विवाह । धरे रूप गुन को गरब फिरै
अछेह उछाह ॥ ६२ ॥ सखी की उक्ति
सखी सो रूपगर्विता नाइका धृति सं
चारी विभावनालंकार है ॥ ६२ ॥ दोहा
सुघर सौति बस पिउ सुनै दुलहिनि दु
गुन हुलास । लखी सखी तन दीठि करि
सगरब सलज सहास ॥ ६३ ॥ सखी की
उक्ति सखी सो रूपगर्विता मध्या धृति
संचारी विभावनालंकार है ॥ ६३ ॥ अ
थ प्रेमगर्विता दोहा ॥ पिय सौतिन देख
त दई अपने उर तें लाल । फिरत सब
न मै डहडही वहै मरगजी माल ॥ ६४

सखीकी उक्ति सखी सौ प्रेमगर्विता
विभावनालंकार है ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ उन
कौ हितु उनहीं बनै कोउ करे अनेक फिरत काग गोलन कुभयौ उहूं हेत
हूं ओर क ॥ ६५ ॥ सखी की उक्ति स
खी सौ रंपति के हित की प्रसंसा कर
ति है रूपक अलंकार है ॥ ६४ ॥ इति
श्री अनवर चंद्रिकायां रूप प्रेमग
र्विता वर्ननं षष्टप्रकास: ॥ ६ ॥ अ
थ मानिनी दोहा ॥ जद्यपि सुंदर सु
घर अरु सगुनो दीपक देह ॥ तऊ
प्रकास करै तितौ भरियै जितौ सने
ह ॥ ६६ ॥ उक्ति सखी की सिसा रूप
क वचन अनुभाव ते बोध व्यंग
नि करि मानु व्यंजित है ताकरि ना
इका के अति मानु ध्वनि है जाही
सौ गुरमान कहत है अह अर्थां
तर संक्रमित ध्वनि यामी है अरु
साधु की उक्ति तो सांत रस है औ
वे ही और ठौर संक्रमित हु सकत

85

हेमंत्रबदीपककौपोषतहैयातेंसं
करकाहिपतहै॥६६॥दोहा॥तोही
निरमोहीलगोमोहीजहैसुभाउ॥
अनआनआवैनहीआयेंआव
तिआउ॥६७॥नाइकाकीउक्तिनाइ
कसौमानिनीउपासनसंचारीसंकुआ
तिसयोक्तिअलंकारहै॥६७॥दोहा॥
रहीसुरिसपाटीपकरिभैरीभौंहबि
तवैन॥लाबिसपनेपियआनरत
जागतलेगतहीगान॥६८॥सखीकीउ
क्तिसखीसौपथमप्रमानभांतिअलं
कारहै॥६८॥दोहा॥तमतिमातेमु
कतईकियेकपटचितकोटि॥औरु
नहीत्यौराखियैआबिनमाफअमे
हि॥६९॥उक्तिकाहू[illegible]साधुकीलेइ
चितसौंतौजानियेवितर्कसंचारीते
पोषोनिर्वेदथाईसोकथनअनु
भावतेसांतरसब्यंगिसखीकीउक्ति
नाइकाप्रतिहेतुतौईर्षासंचारीमें

स॰ अ॰ वं॰

86

सोपाद्मानमो निषेपमोपोक्ति
अलंकार है ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ अहे क
हैनकहाकछोतोसोनंदकिसोर
बडुबोलीकलहोतिहैबडेदगनि
केजोर ॥ ७० ॥ सषीकोउक्तिमानिनी
नायकासोलोकोक्तिअलंकारहै ॥ ७१ ॥
दोहा ॥ फूलीफालीफूलसीफिरति
जुविमलविकास ॥ भोरतरैयाहोहुगी
तोहिचलतविषपास ॥ ७१ ॥ ईहांश्रृंगा
रनाइकामानिनीप्रतिवानइतीकी
उक्तिनाइकेनैभैदेपाइकह्योधर्म
लुप्तोपमालंकारहै ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ मन
मोहनसोमोहकरूतघनस्यामनिह
ारि ॥ कुंजविहारीसोविहरिगिरधारी
उरधारि ॥ ७२ ॥ साधुकीउक्तितोसांत
रससषीकीउक्तिमानिनीप्रतिहैसो
श्रृंगारहैपरिकरांकुरालंकारहै ॥ य
था ॥ अलंकारकीरीतिजहजानिले
इअभिराम ॥ साभिप्रायविसेषजहपरि

॥ ४३ ॥

॥ ४३ ॥

कुरङ्कांकुरनाम ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ उयोसरद
राकाससीक्योनकरतिचितचेत ॥ मनौ
मस्नछितिपालकोछाहगीरघविरं
त ॥ ७३ ॥ नाइकामानिनीप्रतिवानहूती
कीउक्तिनाइकनेभेदेपाइकहेउत्प्रेक्षा
लंकारहै ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ रिसकेसेमुषस
सिमुषीहसिहसिबोलतिबैन ॥ गूढमा
नमनकौरहैभ्राबढरगनैन ॥ ७४ ॥ ना
इकवासषीकीउक्तिमानिनीनाइकाप्रति
काव्यलिंगधर्मलुप्तोपमालंकारहै ॥ ७४ ॥
दोहा ॥ हेहरीकेकैदूहापाइनपारेव्यौ
रू ॥ लेउकहस्त्रजन्हूकियेतेहूतरेरलौ
रू ॥ ७५ ॥ सषीकीउक्तिसषीसेंगौनीसा
ध्यवसानलक्षणातेकेवलपदकरिपर
लक्षितहोतहैतन्मूलकध्वनितेनाइ
कामानिनीगुरमानव्यंजितहैससम
य्यलंकारहै ॥ यथा ॥ ग्रलंकारकीरीति
यहभावतसुकविवनाइ ॥ ससमपर
ग्रासयलिपसैननमैकछुभाइ ॥ ७५ ॥
दोहा ॥ मनुनमनामनकौकरैहेतक

अ॰ सं॰

नहि सनाहि। कौतुकलागयोविपयविया बिहिकुटिसाईतजोहि॥ ७६॥ सखीकी उक्तिसखीसोंअभिलाषपूर्वकनाहि केकैपरिहासअवज्ञालंकारहै। यथा। अलंकारकीरीतिपहवरनतसुकवि अदोष। जहांअवज्ञाओरकेनलगे गुनअरुदोष॥ ७६॥ दोहा॥ तोहीको छुटिमानगोदेषतहीब्रजराज। रहीघरीलोंमोनसीमानकियेकीलाज॥ ७७॥ सखीकीउक्तिसखीसोंमानाभासहेउत्प्रेक्षालंकारहै॥ ७७॥ दोहा। कपटसतरभोंहैकरीमुखअनबोलैबैन। सलजहसोंहेउजकिकैसोंहैकरतननैन॥ ७८॥ सखीकीउक्तिसखीसौंनाइकेकेहर्षअवहित्थासंचारीपलोईषाभासविवोकहावमानाभासकोव्यालिंगअलंकारहै॥ ७८॥ दोहा॥ सोवतलखिमनमानधरिढिगसोयोपियआइ। रहीसपनहूमिलननिसतियहिय

॥ ४४॥

॥ ४८॥

सौलपिराह ॥७९॥ उक्ति सखी की सखी
सौ संजोग सृंगार संचारी पूर्ण क्रियाअनु
भाव पर्यायोक्ति अलंकार है ॥७९॥ दोहा ॥
दोऊ अधिकाई भरे ताकै जोग हराह ॥
कौन मनावै कौ मनै मानै मनु ठहराह ॥८०॥
सखी की उक्ति सखी सौ प्रनय मान को
ध्वलिंग अलंकार है ॥८०॥ दोहा ॥ गये
अबोलो बोलन प्यो आपै पठै बसीठि ॥ री
छिबुराई दुहून की लखि सकुचोहे दीठि ॥
॥८१॥ सखी की उक्ति सखी सौ नाइका अ
भसंभोग दुखिता मौन रहिवे ते नाइक
की प्रतस्तता के रिमान भास तिहै जोते
मानिनी कहिये विभमालंकार है ॥८१॥
दोहा ॥ बरा पातरी कानकी मौन वहा
रु बानि ॥ आक के कली न रली करै अली
अली जिय जानि ॥८२॥ सखी की उक्ति
मानिनी प्रति विहसामति संचारी अर्थां
तरन्यास अलंकार है ॥८२॥ दोहा ॥ मा
न करति वरजति न है उलटि दिवाव
ति सौह ॥ करी रिस सोहीं जाइगी सहजै हं

म० चं०

सौहाभौह ॥ ८३ ॥ प्रतिवानहूतीकीउ
क्तिमानिनीप्रतिभेदोपाइवक्रोक्ति
अलंकारहै ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ रूपरूपअभि ॥४५॥
सरोजमुषकहतिरूपोहवैन ॥ रूप
केमदहोतानेहवीक्रनेनैन ॥ ८४ ॥
उक्तिसषीकीसषीसोसंजोगश्रृंगारई
र्षासांतिरूपोर्स्वकमवहित्थासंचारी
पूर्तक्तिपात्रअनुभावतेमानिनीकाव्य
लिंगअलंकारहै ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ सोहेहू
वाद्योनतैकेताबाईसोह ॥ तौकौवै
ठाक्रियेजोठागैठीभौह ॥ ८५ ॥ दूतीकी
उक्तिमानिनीप्रतिछेकानुप्रासविसषी
क्तिअलंकारहै ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ लग्योसु
मनहूहैसुफलआतपरोसननिवारि ॥
वारीवारीआपनीसीचिसुहृदताना
रि ॥ ८६ ॥ मानिनीनाइकाप्रतिसषी
कीउक्तिविसाभावध्वनिकाव्यप्रका
सकेमतवंदावलोककेमतसमासोक्ति ॥४५॥
मुष्यअनेजरूपकजमकपोषकहै
॥ ८६ ॥ दोहा ॥ नारीजहतेरीदईक्योंहू
प्रकृतिनजोइ ॥ नेहभरेहियराचि

चैतं रूखि चैल बाइ ॥ ८७ ॥ वानइ दूतीको
उक्ति मानिनी सौं उपालंभ संचारी चित
गुन अलंकार है ॥ जथा ॥ जाकी प्रकृति
छुटै न हीं बरनत सुकवि अ सेष ॥ मुख
त गुन संगति भए लगै न गुन अरु सेष
॥ ८७ ॥ दोहा ॥ विधि विधि के निकरै न ही
टरै पर रूपान ॥ चितै कितै तेलै धरो इ
तो इतै तन मान ॥ ८८ ॥ सखी की उक्ति सखी
सौं गुरमाने मानिनी नाइका विसेषोक्ति
अधिकालंकार है ॥ जथा ॥ अधिकोई आ
धेय की अधिक अधिक है सोइ ॥ कै आधा
र अधेय तें अधिक अधिक है सोइ ॥ ८८ ॥
दोहा ॥ तो रस राचे आन वस कहे कुटि
ल मति कूर ॥ जीभ निवौरी क्यौं लगै बौरी
चाखि अंगूर ॥ ८८ ॥ मानिनी नाइका प्रति
सखी दूती की उक्ति उपालंभ अर्थांतरन्या
स अलंकार है ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ गहिली गर
बु न कीजिये समै सुहाग हि पाइ ॥ जिय की
जीवन जेठ सो माह न छांह सुहाइ ॥ ८९ ॥
सखी की उक्ति मानिनी नाइका सो विभा
वक्रि हद्द दूषन दृष्टांत अलंकार है ॥ ८९ ॥
दोहा ॥ हाहा वदन उघारि दृग सफल करै

अ·चं·

92

सबकोइ ॥ रोज सरोजन के परे हसी ससी की होइ ॥ ८१ ॥ मानिनी नाइका प्रति दूती सामोपाइ करति है प्रती पालंकार है ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ कहा लेउ गे खेल मैं तजो अटपटी बात ॥ नेकु हसौ ही है भई सौ हे सो हे बात ॥ ८२ ॥ सखी की उक्ति मानिनी प्रति मध्यम मान काव्यलिंग अलंकार है ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ सकुचि न रहियै स्याम सुनि ए सतरौहै बैन ॥ देत रचौ है चित कहै नेह नचौहै नैन ॥ ८३ ॥ सखी की उक्ति नाइक के संकेत नाइका के परिहास काव्यलिंग अलंकार है ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ अन रस हू रस पाइ यै रसिक रसीले पास ॥ जैसे साठे की कठिन गाठे भरी मिठास ॥ ८४ ॥ दूती की उक्ति मानिनी प्रति उपमालंकार है ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ सकत न तुव ताते वचन मो उर कौ रस खोइ ॥ छिन छिन औटै षीर लौ खरौ सवादिल होइ ॥ ८५ ॥ नाइका

॥ ४६ ॥

॥ ४६ ॥

की उक्ति मानिनी प्रति उपमालंकार है ॥
९५ ॥ दोहा ॥ काहू सखबातनलैगोपी
कै मेर उपाइ ॥ हरु गाढ़े गाग ढवै सुब
लिलीजै सुरगुरु नेगाइ ॥ ९६ ॥ दूती की
उक्ति नाइक प्रति नाइका मानिनी श्रे
ष्ठ के कौ संकेर ॥ ९६ दोहा ॥ आप
आप भली करी मेटन मान मरोर ॥ हरि
करौ पद है हिये छला छगुनिया छोर ॥
९७ ॥ मानिनी नाइका की उक्ति सखी
सौ नाइक की सिरा विषमालंकार है ॥
९७ ॥ दोहा ॥ तुह्मके है हे साप हु सम
मते सब वैसयान ॥ लेबि मो हन जो मन
रहे तौ मन राखौ मान ॥ ९८ ॥ नाइका की
उक्ति सखी सौ सिरा करति है विशेषो
क्ति अलंकार है ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ मोहिल
जावत निलजा उलसि मिलत सब
गात ॥ भानउदै कौ ओस लौ मान न
जानौ जात ॥ ९९ ॥ पत्यानुरागिणी की उ
क्ति सखी सौ उपमालंकार है ॥ ९९ ॥
दोहा ॥ जिंवे मान अपराध तें वढि गो व

५८

र.मं.

94

॥७॥

औरनचैन॥गुरतरीछिताजिरिसबिसी
हसैदुरुनकेनैन॥३०॥सखीकोउ
किसखीसौहर्षौरद्रपईबोसंचारी
मांतिमानमोचनपरहर्षनमलंका
रहै॥३०॥टीकपरोबिलिहूँहु
कहैनुगेहेसपान॥सखैसरैसेक
हिकैषोमुसुकाहैमैमान॥१॥
सखीकोउसकिसखीसोपरोबिलि
कीकहनावतिनाइकोनाइकसौ
कहिमानभैनावतिहैमसमस्र
लंकारहै॥१॥दोहा॥छलापरोबिलि
हाथतैछलसौलिफोपघारिविप
हिरिपायोलबिबिलबिरिससचक
मुसक्यानि॥२॥सखीकोउकिसखीसे
मानिनिनाइकामसमस्रलंकारहै॥
॥२॥दोहा॥मोहसौबातनिलगेलगी
जीभजिहिनाइ॥सोईलैउरलाइयै
लालिलाजिपतपाइ॥३॥नाइकाकोउ
किनाइकसौमध्यममानआहेपालै

॥७॥

कारहै॥३॥दोहा॥खिलखिलखलितघरी
घरीभरत्स्वननषवैराग॥मृगनैनीमै
ननिभजैलाषिवेनीकेराग॥४॥सषी
कीउक्तिसषीसोमानिनीनाइकाषे
कानुप्रासकाव्यलिंगअलंकारहै॥४॥
दोहा॥चितवनिहूंषेदृगनिकीहासी
विनमुसक्यानि॥मानुजनायोमानि
नीजाननिप्रियपियजानि॥५॥सषीकी
उक्तिसषीसोमानिनीनाइकासम
विभावनाजमककोसंकरहै॥५॥दोहा॥
हसिहसाइउरलाइउठिकहिनरूषो
हवैन॥जकितथकितसेहवैरहेतकिल
तिराछेनैन॥६॥इहांसषीउक्तिमानिनी
नाइकासौसामोपाइउत्प्रेक्षालंकारहै॥
६॥इतिश्रीरसनवरत्नचंद्रिकायांमा
निनीवर्ननंसप्तमप्रकास:॥७॥अ
थपरिहाससुरतसुरतांतदोहा॥
दीपउजैरेहूहरतपतिहिवसनरति
काज॥रहीलिपटिछविकीछटनि
नैकोछुटीनलाज॥७॥सषीकीउक्ति

96

अ. चं.

॥ ४८ ॥

सषीसौमध्यानाइकाकोसुरतांतपूर्व
रूपकअलंकारहै ॥ जथा ॥ पूर्वरूपतें
संगगुनतजिफिरिलिअपनोलेत ॥ हूजो
गुनजवनामिटैकियेमिटनकेहेत ॥ ७ ॥
दोहा ॥ लषिसैरतिपियकेरगहती
वासुधुरावनकोज ॥ यरूनीअनुगाढो
हगनिरहीगुटोहूलाज ॥ ८ ॥ सषीकी
उक्तिसषीसोनाइकाकीचपलता
नाइकाकेअपाहास्यरसअनुभाव
संयोगश्रृंगारनाइकामध्यारूपका
लंकारहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सकुचसुरते
आरंभहीबिछुरीलाजलगाइ ॥ ढरकि
ढरकिढिगढिरहीढिठईआइ ॥
॥ ९ ॥ सषीकीउक्तिसषीसोनाइकारति
कोविदप्रौढासंयोगश्रृंगारउक्षेपा
लंकारहै ॥ ९ ॥ दोहा ॥ पतिरतिकीवति
यांकहीसषीलषीमुसकाइ ॥ कैकै
सवैटलाटलीअलीचलीसुषपाइ ॥
॥ १० ॥ सषीकीउक्तिसंजोगश्रृंगारप
योयोक्तिअलंकारहै ॥ १० ॥ दोहा

॥ ४९ ॥

चमकतमकहासीसखकमसकपट
लपिटानि । येजिहिरतिसोरतिमुकुति
औरमुकुतिरतिहानि ॥ ११ ॥ उक्तिसखी
कीसुरतवर्ननंव्यतरेकालंकार है ॥ ११ ॥
दोहा ॥ अरपिनाहनाहानहावरनेल
गीजकजाति ॥ तरपिभोहहासीभरीह
सपैठहराति ॥ १२ ॥ मध्यानाइकाकीउ
क्तिसखीसोसुरतवर्ननंउत्प्रेक्षालंकार
है ॥ १२ ॥ दोहा ॥ नहिहीकोनगुलीबहै
नहिहमेलनहिहार ॥ सुरतसमैंएकै
नहीनिबासिबहोतसिंगार ॥ १३ ॥ नाइ
कथासखीकीउक्तिश्रृंगारव्यंगिपरिसं
ख्यालंकार है ॥ १३ ॥ दोहा ॥ परोजोकवि
परीतिरतिकपीसुरतरनधीर ॥ करतकु
लाहलकिंकिनीगह्योमौनमंजीर ॥ १४ ॥
वितर्कसंचारातेसखीकीउक्तिसखीसो
दंपतिकेसंजोगसिंगारनाइकाउहाम
रतिप्रोढाविपरीतिवर्ननंसमासोक्ति
अलंकार है ॥ अथा ॥ जंहप्रस्तुतिपुर
तैप्रस्तुतिवर्ननमाहि ॥ समासोक्तितासो
कहैरहैजोग्रंथनमाहि ॥ १५ ॥ दोहा ॥ बिन

98

अ. चं.

तीरतिविपरीतिकीकरीपरसोविय पाइ॥हसिअनबोलेहीदियोउतरु दियोबताइ॥५८॥सखीकीउक्तिसखी सोदंपतिसंजोगश्रृंगारनाइकअभि लाषहर्षनाइकोहनेमध्यमाइको हेविभावनाजमकेकोसंकर॥५८॥ दोहा॥मेरेपकतितवातत्किनवस्वा वतिवाल॥जगजानीविपरीतिरतिल खिविंदुलीपियभाल॥५६॥सखीकी उक्तिनाइकसोनाइकअवहिथ्या संचारीविपरीतिरतिसखीवितर्कभाव तेलखितकरतिहेएकमतनाइकानन रतिमध्याकाव्यलिंगअलंकारहे॥५६॥ दोहा॥राधाहरिहरिराधिकावैबनि आयसंकेत॥दंपतिरतिविपरीतिसुख सहजसुरतहूलेत॥६०॥सखीकीउक्ति सखीसोदंपतिकेसंजोगश्रृंगारनाइको केअभिलाषअनपासंचारीलीलाहाव विपरीतिवर्ननकाव्यलिंगअलंकारहै ॥६०॥दोहा॥रमनकह्योहठिरमनिसोर तिविपरीतिविलास॥चितईकरलोचन

॥४९॥

॥४९॥

99

सतरसलेनसरोजसहास ॥ १८ ॥ सषीकौउ
क्तिसषीसौसंजोगश्रृंगारनाइकाकेअ
भिलाषअनुपासंचारीहावकिलकिंचित
जातिवर्ननं ॥ १८ ॥ अथसुरतांतवर्ननदोहा ॥
रमीसुरतपियहियेलगिपगीजगीसब
राति ॥ बेइबेइबेहिहुकिकैअैइभरातिअ
इाति ॥ १८ ॥ सषीकीउक्तिसषीसोना
इकाकेआलसअसंचारीक्रियानुभाव
सुरतांतजातिवर्ननं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ लहि
रतिसुषलगिपेंगरेलषीजगोंही
दीठि ॥ षुलतिनमोमनगडिरहीवहै
अधषुलीदीठि ॥ २० ॥ उक्तिसषी
कीसषीसौप्रौढनाइकाकेक्रियानु
भावकरिस्मृतिसंचारीनाइकामध्या
विरोधाभासअलंकाररहे ॥ २० ॥ दोहा ॥
लाछिलछिन्नछिपैअधषुलीअांग
मोसिअजिरहइअाधिकेउछिलटति
लटकेभारसभेरीजभाइ ॥ २ ॥ उक्तिस
षीकीसषीसौप्रौढनाइकाकेक्रियानु
भावतेहवीभिलाषअमविबोधअसं

100

अ. चं.

चारीनतेरतिपोछीसंजोगसिंगारस्वभावो
क्तिअलंकारहै॥२१॥दोहा॥नीठिनीठिउ
ठिवैठिहूपियप्यारीपरभात॥सोऊनीद
भरेखरेगरेलागिगिरिजात॥२२॥सखी
कीउक्तिसखीसोक्रियानुभावहैनिदासंवा
रीहर्षसुरतांतसुप्रगटहोहैस्वभावोक्ति
अलंकारहै॥२२॥दोहा॥लाजगरवआ
लसउमगभरेनैनमुसुकात॥रातिरमी
रतिदेतकहिऔरैप्रभाप्रभात॥२२॥सखी
कीउक्तिनाइकासोनाइकासुरतल
क्षिताभेदकातिसयोक्तिअलंकारहै॥
॥२३॥दोहा॥कुंजभवनतजिभोनको
चलियैनंदकिसोर॥फूलतकलीगु
लाबकीचटकाहटचहुओर॥२४॥
परकियाकीउक्तिसंकाभावध्वनिका
व्यलिंगअलंकारहै॥२५॥दोहा॥यो
दलिमलियतनिरदईदईकुसुमसेगा
त॥करधरिदेखोधरधराउरकोअ
जौनजात॥२५॥सखीकीउक्तिनाइकसो
मुग्धानाइकाकोसुरतांतभाविकअल

॥५०॥

॥५०॥

101

कारहै ॥ जथा ॥ वीतीहेतीवातजेहकै
हतहेइसोलेइ ॥ तासौभाविककहत
हैसवैसयानेलोइ ॥ २०५ ॥ दोहा ॥ छिनु
कुउघारतिछिनुधुअतिराषतिछिनु
कुछिपाइ ॥ सवदिनपियषंडितअध
रदुघनेरषतिजाइ ॥ २६ ॥ सषीकीउ
क्तिसषीसोनाइकापरकियाहेइतौ
हर्षस्मतिसंचारीक्रियानुभावतेजा
केतौरसहैअरुउपपतिहुकेव्यंगि
हुसकैयातेस्वक्रियाहीकाहियेलाय
नुप्रासहै ॥ २६ ॥ दोहा ॥ पारोसीकसुहाग
कोइनबिनहीपियनेह ॥ उनदेहीम्म
बियांककैकैम्मलसोहादेह ॥ ३ ॥ जो
नाहीनाइकाकीसषीकीउक्तिहैतो
नाहिकोईम्मटोकैनाहीयातेकहियत
हैजोसोतिकीकेवाकीउक्तिहोइतौ
म्मर्षईर्षासंचारीविभावनालंकारहै ॥
॥ ७ ॥ दोहा ॥ लचिलीनेलोइननकेको
इनहेइनम्माजु ॥ कौनगरीवनिवाजि
वोकितनलोरतिराजु ॥ २०८ ॥ सषीनाइ
कासोपरिहासककर्त्ते हैसंदेहलं

कार है ॥ २८ ॥ दोहा ॥ वरु किन द्दग हि वसि
नाहू ने जे वत ववीर विनास ॥ क्यौं न वडी
सषी लखू षीलहु घे मुष आभास ॥ २८ ॥ स
षी की उक्ति नाइका सौ परिहास करति
है अर्थांतरन्यास अलंकार है ॥ २८ ॥
दोहा ॥ द्दग मिहचत मृग लोचनी भयौ
उलटि भुज वाथ ॥ जानि गई तिय नाथ
के हाथ परस ही हाथ ॥ ३० ॥ सषी की उ
क्ति सषी सौ नाइका कौ परिहास नाइ
का के वितर्क काव्यलिंग अलंकार है
॥ ३० ॥ दोहा ॥ पीतम द्दग मिहिचत पि
या पानि परस सुषु पाइ ॥ जानि पछा
नि अजान लौं नैकु न होति जनाइ ॥ ३१ ॥
सषी की उक्ति सषी सौ नाइका परिहा
स करति है नाइका के स्वभाव पर्यायोक्ति
अलंकार है ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ वतरस लालच
लाल की मुरली धरी लुकाइ ॥ सौंह करै
भौंहनि हसै दैन कहै नटि जाइ ॥ ३२ ॥ स
षी की उक्ति सषी सौ परकिया नाइका है
अभिलाष नाइक सौ परिहास करि
छिपावति है यातें अवहित्थ्या संचारी

अहसंकाक्रियाअनुभावतेअनुराग
व्यंगिअरुएकमतअवनलालसामति
काहियैभातिवर्ननं ॥३१॥ सोरठा ॥ मुहचु
घातिच्चोलचिरहतरघोनगोमिससै
नपूरकेओठठउठापुलकिगातउघ
रिजुगनैन ॥३३॥ सखीकीउक्तिसखीसो
नाइकाकेअवहित्थभावकीसांति
हर्षादिस्मररोमांचकंपअनुभावतेसंजो
गश्रृंगारव्यंगिनाइकसोपरिहासउ
त्तमकोअपस्वभावोक्तिअलंकारहै
॥३३॥ इतिश्रीअनवरचंद्रिकायांसुरत
सुरतांतवर्ननंअष्टमप्रकासः ॥ ८ ॥ अ
थपरक्रियासोरठा ॥ सघनकुंजछाया
सुखदसीतलमंदसमीर ॥ मनुह्वैजाति
अजौवहैवाजमुनाकेतीर ॥३४॥ पर
क्रियाकीउक्तिविप्रलंभश्रृंगारस्मृति
संचारीतातेउत्प्रेक्षालंकारहै ॥३५॥ दो
हा ॥ मिलिपरछाहीजोन्हमैरहेदुहु
नकेगात ॥ हरिराधाएकसाथहीचले
गलीमैजात ॥३६॥ सखीकीउक्तिसखी

104

सो दंपति के संकेत्र बहिद्याथ तिसंचा
रीसंजोग शृंगार परक्रिया मीलित अलं
कार है ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ सखी लसति गोपा
लके उरोजु अनु की माल ॥ बाहिर लसति
हियेमनो दावानल की ज्वाल ॥ ३६ ॥ पर
की यापी उक्ति सखी प्रति वचनअनुभा
वते अनुरागव्यंगि उक्ते सालंकार है ॥ ३७ ॥
दोहा ॥ मकराकृत गोपाल के सोहत कुंड
लकान ॥ धसो मनो हियधर समर ड्यो
ढीलसत निसान ॥ ३७ ॥ गुनकथन पूर्वा
नुराग ते परक्रिया उक्ति उक्ते सालंकार
है रूपक ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ सोहत ओटैं नील
पटस्याम सलोने गात ॥ मनो नीलमनि
सैल पर आतप परो प्रभात ॥ ३९ ॥ उक्ति
सखी की है इतौ जानिपतु है सखी ना
इका की उक्ति है इतौ वा सौ इतन करा
यो चाहति है इती विवर्जित नाइका ॥ ५२ ॥
परक्रिया उक्ते सालंकार है ॥ ३८ ॥ दोहा ॥
कितीन गोकुल कुलवधु काहि न काहि
सिख दीन ॥ कौनै तजी न कुल गली ह्वै
मुरली सुरलीन ॥ ३९ ॥ उक्ति सखी की

होइ तौ नाइकाके आगे कहिवाकौ न चित्त प
नावति है नाइकाकी उक्ति सखी प्रति है तौ
वा सौ दूतत्व कराये चाहति है इती विव
र्जित नाइकापरकिया उत्तर वक्रोक्तिकौ
संकर है ॥ ३८ ॥ अथ ॥ उत्तर है वे मैं जह
प्रश्नोपर तल जाइ ॥ प्रश्नोत्तरको भेद
जह प्रथम कहत कविराइ ॥ ३९ ॥ दोहा ॥
अधर धरति हरि के परति ओठ दीठि प
ट जोति ॥ हरित बांस की बांसुरी इंद्रधनु
षरंग होति ॥ ४० ॥ इहां नाइकाकी उक्ति
हरानते सिंगार व्यंगि है। पूर्वानुरागगु
नकथनते व्यंगि रतिको अनुभाव है व
चन उक्ति सखी प्रतित दुनालंकार है ॥ ४० ॥
दोहा ॥ नाचि अचानक ही उठे विन पावस
वन मोर ॥ जानति हैनंदित करी इहि
दिसि नंदकिसोर ॥ ४१ ॥ सखीको वचन ना
इकाप्रति संकेत सूचक नाइकापरकि
या जानिपरति है चितको आकरिसखी
की संका मत छितहोति है जातेहै तो
लूक्ष्मालंकार है ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ सब ही
तन समुहाति छिन चलति सबनि दै

अ. चं.

॥५३॥

पीठि। वाही सौं रहराति है कविलनु मा
नौं रहि ॥४२॥ सखी की उक्ति सखी सौं है
तु लक्षिता परकिया उपमालंकार है।
।४२। दोहा। भौंह उचै आंचर उलटि
मोरि मोरि मुंह मोरि। नीठि नीठि भीत
र गई दीठि दीठि सौं जोरि ॥४३॥ उक्ति
नाइक की स्मृति गुन कथन ते पूर्वानुरा
ग व्यंगि नाइका के अभिलाष व्यंगि
अरु नाइका ते जे क्रिया कीनी है ते अ
नुभाव है जाति वर्नन ॥४३॥ दोहा। ए
चैंति सी चितवनि चितै भई ओट अ
लसाइ। फिरि उझकनि कौ मृगनय
नि द्रगनि लगनिया लाइ ॥४४॥ उक्ति
नाइक की गुन कथन पूर्वानुराग नाइ
का परकिया वाके अभिलाष संकस
चारी अलसाइवो अनुभाव रूपक अ
लंकार है ॥४४॥ दोहा। कंजनयनि मंज
न किये बैठी ब्यौरति बार। कच अंगु
रिन बिच दीठि दै निरखत नंदकुमार ॥५३॥
॥४५॥ सखी की उक्ति सखी सौं हेतु
लक्षिता परकिया स्वभावोक्ति अलं

कारहै ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ लीनेहू साहस सहस
सकानेजतनहजार ॥ लोइनलोइनसिंधु
तनपैरिनपावतपार ॥ ४६ ॥ उक्ति नाइका
कीकैनाइकाकेगुनकथन पूर्वानुरागते
व्यंग्य औत्सुक्य संचारी रूपमालंकारहै ॥ ४६ ॥
दोहा ॥ पडुचतिरनदृष्टिसुभटलोसोकिस
कैसबनाहि ॥ लोचनहूकीभीरमैआलि
उरसबलिजाहि ॥ ४७ ॥ उक्तिनाइकाकीकै
नाइककापूर्वानुराग औत्सुक्य संचारीभा
ववचनउपमालंकारहै ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ गुरे
उंउनकेदृगरूमकिरूकेनलीनेचार ॥ ललु
कौफौजहरोलज्यौपरतगोलपरभार ॥ ४८ ॥
पूर्वानुरागसबीसौउक्तिसबीसौलहि
तामासोतदरसनहष्टांतअलंकारहै ॥ ४८ ॥
दोहा ॥ गडीकुटमकीभारमैरहीबैठिहै
पोठि ॥ तऊपलककपरिजातउतसलजे
हसौहीडीठि ॥ ४९ ॥ उक्तिउपपतिकोउत
परतेव्यंजितहैनाइकाकेसतिनाइककै
संकाल्नजातेअनुरागव्यंग्यविभावनालं
कारहै ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ मटपटातिसीससि
मुखीमुखघूघटपटढांकि ॥ पावककेझर
सीझमकिकैगईझरोखाझांकि ॥ ५० ॥

अ. चं. उक्तिनाइकाकीगुनकथनतेपूर्वानुराग
व्यंगिवचनअनुभावनाइकाकेसंकेसंचा
॥५४॥ रीतातेपरक्रियाव्यंगिअनुभावदेषि
वोउपमालंकारहै॥५०॥दोहा॥नैनचा
वेनाचानिपटराधिकुहालौसोरि॥उठि
उर्वानीस्वैरियोमनुकुलेगजकेजोरि॥
॥५०॥उक्तिनाइकाकीपूर्वानुरागता
रकापरक्रियाताकेकटाछविछेपअ
नुभावउपमालंकारहै॥५१॥दोहा
सोनौबरेसभापकोमानिलैतेमन
मोर॥सोतउऊनकेदगनसोवतररस
हसौविनोद॥५२॥सखीकीउक्तिस
खीसौपरक्रियादंपतिकेहर्षसंचारी
कटाछविछेपअनुभावविभावना
दीपक॥५२॥दोहा॥नावकसरसेला
इकैतिलकतरुनितरतताकि॥पाव
कझरसीझमकिकैगईझरोषाझांकि॥
॥५३॥नाइकाकीउक्तिसषिसौंसंचारी ॥५४॥
परक्रियाउपमालंकारहै॥५३॥दो
हा॥जदपिचवाइनचीकनीचलति
चहूंदिसिसैन॥तउपिनछोडतदुऊन

मैं सहसार सौं लै नैन ॥५४॥ उक्ति सखी की
सखी सौं दंपति को पूर्वानुराग ध्वति सं
चारी सैन पद तें परकिया व्यंगि विसे
षोक्ति अलंकार है ॥५४॥ दोहा ॥ देखो
अन देखो कियो अंग अंग सबै दिखाइ ॥
पैठति सी तन में सकुचि बैठी चितै लगाइ ॥
॥५५॥ सखी की उक्ति सखी सौं नाइका कि
या विदग्धा ताको कथन अरु नाइका के
अवहित्था संचारी लाज संचारी उत्प्रेक्षा
स्वभावोक्ति अलंकार है ॥५५॥ दोहा ॥
उन हरकी हसिकै उतै इन सौंपी मुस
क्याइ ॥ नैन मिलै मन मिलि गई दोऊ
मिलवत गाइ ॥ ५६ ॥ सखी की उक्ति
सखी सौं दंपति को हेतु लक्षित कियो
दुहून को चितैवो अनुभाव तें पूर्वानुरा
ग व्यंगि नाइका परकिया सखी की उ
क्ति है तो हेतु लक्षिता असंगति अलं
कार है ॥५६॥ दोहा ॥ फेरु कछु करि
पौरि तें फिरि चितई मुसुकाइ ॥ आई
जामन लैन जियनै हे चली जमाइ ॥५७॥

अ.चं. ॥५५॥

दूतीकीनाइकासौउक्तिहेइतौवचन
अनुभावरतिसंचारातेनाइकाकेहर्षसं
चारीमुसुकाइवोअनुभावतेपूर्वानुराग
व्यंगिनाइकापरकियासखीकाउक्तिहे
इतोहेतुललिताअसंगतिअलंकारहै ॥५७॥
दोहा ॥ मैहूजानीलोइननिजुरतिवादि
हैजोति । कोईजानतिरीठिकौरीछिक
रिकिटीहोति ॥ ५८ ॥ परकियाकीउक्ति
वचनअनुभाववितर्कसंचारापूर्वानुराग
व्यंगिविभ्रमालंकारहै ॥५८॥ दोहा ॥ जो
नजुगुतिपियमिलनकीधरिमुकुति
मुहदीन । जोलहियेसगसहुनौधरक
नरकहूकीन ॥५९॥ उक्तिनाइकाकीव
चनअनुभावतेअभिलाषसंचारातेपू
र्वानुरागवक्ताकीउक्तितेव्यंगिकाव्य
लिंगअलंकारहै ॥५०॥ दोहा ॥ मोहूसौ
तजिमोहदृगचलेलागिउहिगैल ॥
छिनकुछ्वाइछविगुरडरीछलेछवीलै ॥५५॥
छैल ॥ ६० ॥ परकियाकीउक्तिसखीप्र
तिपूर्वानुरागवचनअनुभावतेव्यंगि

111

रूपकवृत्यानुप्रासहै ॥ ६: ॥ दोहा ॥ को
जानैहूंहैकेहावजेउपजीअतिअभि
मनुलागि नैननि लगौ चलैन मगलगिला
गि ॥ ६ ॥ परकीयाकी उक्ति सखी प्रति पूर्वा
नुराग वचन अनुभाव तें अभिलाष संचारी व्यंगि
असंगति अलंकार है ॥ ६० ॥ दोहा ॥ लई
सौंहसी सुनि नन्दकी तजि मुरली धुनि आन ॥
किये रहति हिनराति नित कानन कानन
कान ॥ ६१ ॥ सखी की उक्ति सखी सों नाइ
का को हेतु लक्षित कियो है स्मृति अभिला
ष संचारी नाइक के अनुभाव तें पूर्वानुरा
ग व्यंगि परकीया अरु धैर्य अभिलाष
प्रबल ताको प्राप्त भयो है तातें ललित नाइ
सा कहियै अरु नाइका हू लालसा मति
है उल्लेखालंकार है ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ भृकुटी
मटकनि पीतपट चटक मटकती चाल ॥
चल चख चितवनि चोरि चित लियो
विहारीलाल ॥ ६३ ॥ परकीया की उक्ति
सखी प्रति वासौं हूं तन्त्र करायो चाह
ति है अरु वचन अनुभाव तें पूर्वानु
राग व्यंगि गुन कथन रस स्वभावोक्ति

अलंकार है ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ मग उर मत तू
टत कुंडुम जु रति चतुर रचित प्रीति ॥ प
रति गाहि दुरजन हिये रई नई यह
रीति ॥ ९४ ॥ परकिया को उक्ति वचन
अनुभाव वितर्क संचारी पूर्वानुरा
ग व्यंगि अ संगति अलंकार है ॥ ९८ ॥
दोहा ॥ चलन तु धैरु घर घरत ऊ घरी
ने घर ठहराइ ॥ समुझि वहा घर को
चलै भलि उहां घर गाइ ॥ ९५ ॥ उक्ति
सखी को सखी प्रति परकिया को प्रे
म लक्षित कियो है अरु नाइका के
कियानुभाव मोह संचारी तें पूर्वा
नुराग व्यंगि विसेषोक्ति अलंकार है
॥ ९६ ॥ दोहा ॥ उलटि रैनी द नैन परे ह
रै न काल विपाक ॥ छिनु कु छिन कि उ
छकै न फिरि बरो विषम ध्य विपाक
॥ ९७ ॥ नाइका की उक्ति होइ तो व
चनानुभाव तें मति संचारी तें पूर्वा
नुराग व्यंगि सखी की उक्ति नाइका
प्रति होइ तौ नाइका विरह निवेदन
अरु नाइका के स्मृति दसा व्यंगि अरु

नाइकाकोदोऊउक्तिमैपरकियाईभांतियै
व्यतरेकालंकारहै॥ ६६ ॥ दोहा ॥ जमकिच
टतिउतरतभटानैकुंनथाकतिदेह॥ भ
ईरहतिनरकोवटभटकीनागरिनेह ॥ ७० ॥
उक्तिसषीकीसषीसौनाइकापरकिया
केक्रियानुभावतैचपलसंचारीपूर्वानुरा
गव्यंगिविसेषोक्तिरूपकालंकारहै॥ ६७ ॥
दोहा॥ नोभलगेहरिरूपकेकरीसाटजुरि
जाइ॥ होइनवेचाथाचहालोइनवडीवलाइ
॥ ६८ ॥ उक्तिपरकीयाकीसषीसौवचनअ
नुभावतेपूर्वानुरागव्यंगिसमासोक्तिअ
लंकारहै॥ ६८ ॥ दोहा॥ नलगनिकुलकी
सकुचविकलभईअकुलाइ॥ दुहूओर
ऐचीफिरैफिरकीलौदिनजाइ॥ ६८ ॥ स
षीकीउक्तिनाइकप्रतिहेहूतौनाइकाको
विरहनिवेदनहूतवव्यंगिसषीसौकहति
है तौप्रथमहावकोप्रेमलक्षितकियोहै
अरूपरकियाकेक्रियानुभावतेत्रपाचप
लताउद्वेगसंचारीतेपूर्वानुरागव्यंगिउप
मालंकारहै॥ ६८ ॥ दोहा॥ इततेउततउततेइ
तेछिनुनकहूठहराति॥ जकनपरैचकई

114

अ. चं. भईपिछिरिआवतिपिरिजाति ॥ ७० ॥ पूर्वेवतरूपकातिसयोक्तिअलंकारहै जथा ॥ उपमेयैउपमानतेजानिलेतजिहिंठौर ॥ अतिसयोक्तिरूपकैवहैवरनतकविसिरमौर ॥ ७० ॥ दोहा ॥ तेजीसंकसकुचनिनचितवोलतिवाकेकुवाक ॥ दिनछनदाछाकीरहतिछुटैनछविछिनछाके ॥ ७१ ॥ सबीसबीसोअथवाहतीनाइकसौनाइकाकोविरहनिवेदनकरतिहैप्रलापउमादइसापूर्वानुरागपरकियाकोव्यंगिव्यतरकोलंकारहै ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ टरैटारत्योहीटरैइजेतरटरैन ॥ क्यौहूआननआनसोनैनालागतनैन ॥ ७२ ॥ परकियाकीसखीप्रतिउत्तरपूर्वानुरागवचनअनुभावतेव्यंगिसबीकेसिछामतिभावध्वनिहैछेकानुप्रासउत्तरालंकारकोसंकरहै ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ वेकीजेकीसीछुरीकूरकैबोलतिनाहि ॥ कहहटीलागीलगा

॥ ५१ ॥

॥ ५१ ॥

115

कैकाहूकारीहि ॥ ७३ ॥ उक्तिसषीकीना
हकासौंअथवातासषीसोंवितर्कपरकि
याकेस्मतिह्रमातेवितासंचारीतेआ
कृतिअनुभावतेपूर्वानुरागव्यंगिसंदे
हालंकारहे ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ पियकेध्यान
गहिगहीरहीवहीह्वैनारि ॥ आपुआ
पुहिआरसीलखिरीझतिरिझवारि ॥
॥ ७४ ॥ उक्तिसषीसौसषीकीपरकिया
स्मतिहमातेपूर्वानुरागव्यंगितदुना
लंकारहै ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ ध्यानतेहुं हूं तेह
हानैकोधरतिनधीर ॥ निसिदिनडा
टासीफिरतिबाढीगाढीपीर ॥ ७५ ॥
उक्तिसषीकीसषीसेअथवानाइके
सोविरहनिवेदनपरकियाउद्वेगचप
लतासंचारीक्रियानुभावतेपूर्वानुराग
व्यंगिउत्प्रेषालंकारहे ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ उ
रउरझोचितचोरसौगुरगुरजनकीलाज ॥
चढेहिडोरेसेहियेकरेवनेगहकाज ॥ ७६ ॥
परकियाकोहेतुलक्षितकरोहेसषी
नेसोसषीसोंकहतिहेयाअवहिष्या

श्र॰ चं॰

संकासंचारीतेपूर्वानुरागव्यंगित्रपात्र्प्रौत्सु
कभावकीसंधिउसेसोलंकारहै॥ ६६॥
॥ ५८॥ दोहा॥ उरलीनेअतिचटपटीसुनिमुरली
धुनिधाइ॥ होनिकसीहुलसीसुतौगोहु
लसीउरलाइ॥ ७०॥ उक्तिनाइकाकीस
षीप्रतिवासोइतत्वकरायोचाइतिहै
वचनअनुभावतेपूर्वानुरागव्यंगिइती
विवर्जितनाइकापरकियाउसेसाविष
माकोसंकरयाहैरअसमर्थइवचनहै॥ ७१॥
दोहा॥ जवतवहोतदिषादिषीअमीभई
इकआंक॥ लगीतिरीछीदीठिअवह्वैवी
छीकोडांक॥ ७२॥ उक्तिनाइकाकीसषी
प्रतिवचनअनुभावउद्वेगदसातेपूर्वा
नुरागव्यंगिइतीविवर्जितपराकियाप
र्यायअलंकारहै॥ जथा॥ छपर्यायअने
ककोजेमतेआश्रयाक॥ फिरिफिरिक
मतांकेकोआश्रयहोतेअनेक॥ ७३॥
दोहा॥ लोलतिहारेद्रगनिकोकहतेरीति ॥ ५९॥
यहकौन॥ जोसौलागतपलकपलनलाग
तपलकपलौन॥ ७४॥ सषीकीउक्तिना
इकप्रतिहोइतौपरकियाकोविरहनि
वेदनजानियेपूर्वानुरागहैअर्थविसेषा

117

भासकालंकारहै ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ बसिसकोच
द्सबस्नवससमाजुद्दिबावतिवाले ॥ सिय
जोसोधतितियतनहिलगनिश्रागनिकी
ज्वाल ॥ ८० ॥ दूतीकीउक्तिनाइकेप्रतिपर
कियाकोविरहनिवेदनपूर्वानुरागव्यंगिला
जसंचारीपूर्णोपमाछेकानुप्रासहै ॥ ८० ॥
दोहा ॥ लोभतिसुबकरिकामबातुमरहिमि
लेनकीलोल ॥ ज्वालमुखीसीजरतिलबि
लागनिश्रागिनिकीज्वाल ॥ ८ ॥ दूतीकी
उक्तिनाइकप्रतिपरकियाकोविरहनिवे
दनपूर्वानुरागविचित्रालंकारोपमारूप
ककोसंकरहै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ थाकेजतन
अनेककरिनेकुनछोडतुगैल ॥ करीबरी
ठुवरीसुलगितरीखोरकेचुरैल ॥ ८२ ॥ उक्ति
दूतीकीनाइकेप्रतिनाइकेकोविरहनिवेद
नपूर्वानुरागरूपकालंकारहै ॥ ८२ ॥ दोहा ॥
सनिकेउलेचबमचलागि उपजोस
दिनसनेह ॥ कौननृपतिहूभोगवैले
हिसुदेससबदेह ॥ ८३ ॥ उक्तिसखीकी
नाइकासोवाकेबचनभावव्यंगिहैताते
पूर्वानुरागव्यंगिउत्तररूपकाकोसंकरहै ॥ ८३ ॥

118

अ॰ चं॰

दोहा ॥ चितई ललचौंहैं चषन डिढ घूघ
टपट माह ॥ छबि सौं चलौ छुआइ कैं छि
न कु छबीली छांह ॥ ८४ ॥ उक्ति नाइक

॥५८॥

की इती प्रति पूर्वानुराग क्रिया वचन अ
नुभाव अभिलाष संचारी नाइका क्रिया
विदग्धा स्वभावोक्ति अलंकार है ॥ ८४ ॥
दोहा ॥ नीसांभी रिन चाइ दृगा करी कै का
नीसो ह ॥ कांपै लौ कै सकत हिये गडी क
टीलौ भौह ॥ ८५ ॥ उक्ति नाइक की स्मृ
ति संचारी परकिया स्वभावोक्ति अलं
कार है ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ बोरि पनिच भरकु
टीधनुष बधि कै समर तजि कानि ॥
हनतु तरुन मृग तिलक सर सुरकु भालि
भरि तानि ॥ ८६ ॥ उक्ति नाइक की स्मृति
संचारी परकिया सर्वांग रूपक अलंका
र है ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ फिरि फिरि चितु उत
ही रहतु टुटि लाज की लाव ॥ अंग अंग
छबि झौंर मैं भयो भौंर की नाव ॥ ८७ ॥
परकिया की उक्ति अंतर्वती सखी सौ ता

॥५८॥

ते पूर्वानुराग अरु स्मृति संचारी व्यंगि
रूपकालंकार है ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ हरि छबि

मेलजेवतेपरेतेवतेछिनविधुरैन ॥ भरत
टरतबढ़ततेतरतरहतघरीलौनैन ॥ ८८ ॥
उक्तिपरकियाकोअनुभावस्मृतिसंचारी
तेपूर्वानुरागव्यंगिसषीसोकहतिहैतोला
सोहृतवकरायोवाहतिहैउपमालंकारहै
॥ ८८ ॥ सोरठा ॥ रहिनसक्योकेसुकरिरह्यो
वेसकरिलीनोभार ॥ भेदिहुसालकियो
हियोतनदुतिमैदैसार ॥ ८९ ॥ उक्तिउपप
तिकोकैपरकियाकोअसमर्थदूषनविभा
वनालंकारहै ॥ ८९ ॥ सोरठा ॥ त्यौंत्यौंप्यासेई
रहतज्यौंज्यौंपियतअघाइ ॥ सगुनसलो
नेरूपकोजुनचषत्रषाबुझाइ ॥ ९० ॥
उक्तिपरकियाकोअथवानायककीवच
नअनुभावतेवितर्कसंचारीतेपूर्वानुरा
गव्यंगिविसेषोक्तिश्लेषकोसंकरहै ॥ ९० ॥
सोरठा ॥ तोतनअवधिअनूपरूपलग्यो
सबजगतको ॥ मोदृगलागोरूपदृगनि
लगीअतिचटपटी ॥ ९१ ॥ उक्तिनायक
कीपरकियासौपरोक्षपूर्वानुरागस्मृ
तिलालसासंचारीवचनअनुभावव्यं
गिमालादीपकअलंकारहै ॥ जथा ॥

अगिलै अगिले जोग जह प्रथम अधिक
गुन होइ ॥ मालादीपक कहत है जे पंडित
कवि लोइ ॥ ९१ ॥ दोहा ॥ त्रिवली नाभि दि
खाइ कै सिरु ढकि सकुचि समाहि ॥ गली
अली की ओट ह्वै चली भली विधि जाहि ॥
॥ ९२ ॥ नाइका की उक्ति है इतौ स्मतिगुन
कथन तें पूर्वानुराग व्यंगि नाइका क्रिया
विदग्धा है अथवा जिन सबी ने लषी
है सो सबी सो कहति है तौ हेतु लषि
ता पर क्रिया स्वभावोक्ति अलंकार है ॥ ९२ ॥
दोहा ॥ धीने हू कोटि कै जतन अब कहि
काढै कौन ॥ मो मन मोहन रूप मिलि
भो पानी को लोन ॥ ९३ ॥ उक्ति परक्रिया
की अपने मन सो है इतौ चिंता संचारी
पूर्वानुराग दृष्टांत अलंकार है ॥ ९३ ॥ दो
हा ॥ ने जुन नैननि को कछू उपजी बडी
बलाइ ॥ नीर भरे नित प्रति रहै तऊ
न प्यास बुझाइ ॥ ९४ ॥ उक्ति उपपति
की अथवा पर क्रिया वितर्क संचारी
वचन अनुभाव तें पूर्वानुराग व्यंगि विसे
षोक्ति अलंकार है ॥ ९४ ॥ दोहा ॥ छला छ

वीलैलालकौनवलनेहलैहिनारि ॥ वाह
तिकुमतिलाइउरपहिरतिधरतिउतारि ॥
॥ २८५ ॥ उक्तिसखीकीसखीसौंपूर्वानुरागसिं
गारहर्षसंचारीक्रियानुभावपरकिया
स्वभावोक्तिअलंकारहै ॥ २८५ ॥ दोहा ॥ सुब
सौंबीततविसवनिसासनसौंपैमिलिसाथ ॥
मूकामेलीगयौजुछिनुहाथनछोरैहाथ ॥
॥ २८६ ॥ जिनललहितक्रियाहैतासखीकीउक्ति
सखीसौंक्रियावचनअनुभावसुप्तसंचारी
तेपूर्वानुरागव्यंगिउत्प्रेक्षालंकारहै ॥ २८६ ॥
दोहा ॥ उडीगुडीलखिलालकीअंगनाअंगना
माह ॥ बौरीलौंदौरीफिरैछुअतछबीलीछा
ह ॥ २८७ ॥ उक्तिसखीकीसखीसौंपरकिया
चपलतासंचारीउन्माददसातेपूर्वानुराग
व्यंगिउत्प्रेक्षालंकारहै ॥ २८७ ॥ दोहा ॥ देखौ
जागतवैसियैसाकरलागीकपाट ॥ कितह्वै
आवतजातभजिकोजानैकिहिवाट ॥ २८ ॥
परकियाकीउक्तिवितर्कस्वप्नमोहचपल
तास्मृतिसंचारीवचनअनुभावतेपूर्वानुरा
गव्यंगिस्वप्नदरसनविभावनालंकारहै ॥ २८ ॥
दोहा ॥ करतुजोतुजेतीकटनिवढिरससरि
तासोतु ॥ आलबालउरप्रेमतरुतितो

122

क्र. चं.

तितो मृदु होतु ॥ ९९ ॥ स्वतः संभवी नाइका अथवा नाइक की उक्ति वितर्क संचारी वचन अनुभाव ते पूर्वानुराग व्यंगि ॥६॥ परक्रिया रूपकालंकार है ॥ ९९ ॥ दोहा ॥ बलुवद ई वलु क रिथ को केटैन कुम ति कुंभर ॥ आल वाल उर आलशी ब री प्रेम तेरुअर ॥ ४०० ॥ परक्रिया की उक्ति अथवा नाइक की वचन अनुभा व ते धृति संचारी पूर्वानुराग व्यंगि रू पकालंकार है ॥ ४०० ॥ दोहा ॥ घुटनन चै अतु छिनकु वसिने हनगार यह चाल मारो फिरि फिरि मारियत खुनी फिरत खुसाल ॥ १ ॥ उक्ति नाइक की वा परकि या की मोस संचारी वचन अनुभाव ते पूर्वानुराग व्यंगि रूपक असंगति अलंकार है ॥ ॥ १ ॥ दोहा ॥ निरदयनेह नयो निरखि भयो जगत भयभीत ॥ यह अव लौं न कहूं सुनी मरो मारियै मीत ॥ २ ॥ सबी इती की उक्ति नाइक प्रति होइ तौ नाइक को पूर्वानुराग ॥६॥ इती को वचने सुनि वो जसी जो अनुभा व है तातें नाइका हू के पूर्वानुराग व्यंगि जो नाइका मानवती होइ तौ ईर्षा संचारते

क्रियानुभावतेविप्रलंभव्यंगिनाइकानैसा
मोपाइक्रियोहैविभावनालंकारहै॥२॥दो
हा॥क्यौंबाग्निपैक्यौंनिवहिहौंनीतिनेहपुर
नाहि॥लागालगीलोइनकरैनाहकमनब
धिजाहि॥३॥उक्तिनाइकाकीअथवापरकि
याकीआससंचारीवचनअनुभावनाइकाके
औतसुक्यसंचारीकटाछविछेपअनुभावबि
भावनालंकारहै॥३॥दोहा॥हैहियरहति
हईछईनईजुगुतिजगमोहि॥आंखिनआ
छितलोगेदईदेहदूबरीहोहि॥४॥परकिया
कीउक्तिवचनअनुभावआससंचारीतेपू
र्वानुरागव्यंगिअसंगतिअलंकारहै॥४॥
दोहा॥चितुतरसतमिलततनबनतुबसिप
रोसकेपास॥छातीफाटीजातिसुनिलटी
औटउसास॥५॥उक्तिपरकियाकीअथ
वाउपपतिकीहूतीप्रतिहूतत्वकेरायोवाह
तिहैवचनअनुभावऔत्सुक्याविचारसंके
संचारीपूर्वानुरागव्यंगिविसेषोक्तिअलं
छेकानुप्रासहै॥५॥दोहा॥नैनलगेतिहि
लगनिजुनछुटैछुटेहूप्रान॥कामनआ
वैएकहूतेरेसौकसयान॥६॥परकिया

कीउक्तिसखीसौवचनुअनुभावकरिधृति
संचारीतेपूर्वानुरागव्यंगिअलुक्तिअलंका
रहै॥६॥दोहा प्रेमअओलडुलैनहीमुख
बोलैअनबाइ॥चितउनकीमूरतिबसी
चितउनमाहललचाइ॥७॥उक्तिसखीकीसखी
सौवितर्कसंचारीकरिनाइकापरक्रियास्मृति
दसाचिंतासंचारीआकृतिअनुभावकरिपूर्वा
नुरागव्यंगिविभावनाजमक॥७॥दोहा॥अ
लिइनलोइनसरनकोषरोविषमसंचार॥ल
गेलगाएएकसेदेउनकरतसुमार॥८॥उक्ति
सखीकीसखीसौदंपतिकोरसादेखिकैउन
कोपूर्वानुरागव्यंगिअतरेकालंकारहै॥८॥
दोहा॥नागतकुटिलकटाछसरकोनहे
हवेहाल॥कटतुजुहियेदुसालहूतकरह
तिनटसाल॥९॥उपपतिकीउक्तिवितर्क
संचारीतेपूर्वानुरागव्यंगिपरक्रियाकाव्य
लिंगअलंकारहै॥९॥दोहा॥नबहकवि
चरनडारिकैगलगाइनिजुसाथ॥रहे
राखिहठिलैगयोहथाहथीमनुहाथ॥ ॥६२॥
उक्तिउपपतिकीवचनअनुभावतेस्मृ
तिसंचारीपूर्वानुरागव्यंगिपरक्रियाह

॥६२॥

पकालंकारहै॥१०॥ दोहा॥ चितुचितुवचतेन
हरततहचिलोलनद्रगवरजोर॥ सावधानके
वटपरा॥ आगतकेचोर॥११॥ उक्तिपरकिया
कीसखीप्रतिवचनअनुभावतेस्मृतिसंचा
रीपूर्वानुरागव्यंगिपरकियाकेकटाक्षविक्षेप
अनुभावतेजानियेव्यतरेकालंकारहै॥१२॥
दोहा॥ वनतनतेनिकसतलसतहसतहस
तइतआइ॥ द्रगचंचनिगहिलैगयोचितवे
न्निचेपुलगाइ॥१२॥ उक्तिसखीप्रतिनाइका
कीवचनअनुभावतेपूर्वानुरागव्यंगिपर
कियाकटाक्षविक्षेपतेजानियैजातिवर्नने
रूपकालंकारहै॥१२॥ दोहा॥ इहिकाटेमो
पाइलगिलीनीमरतजिवाइ॥ प्रीतिजनाव
तिभीतसोमीतजुकाटेआइ॥१३॥ उक्तिनां
इकाकीअंतर्वेतीसखीसोउपपतिकोप्रे
मनिवेदनवचनअनुभावसंकेसंचारीदे
बेपूर्वानुरागव्यंगिव्याधिकोमिलनविभा
वनालंकारहै॥१३॥ दोहा॥ जातसयानअ
यानहैवेठगकाहिठगैन॥ कोललचाइन
लालकेलखिललचौहैनैन॥१४॥ उक्ति
नाइकाकीवचनअनुभावतेवितर्कसंचारी

पूर्वानुरागव्यंगियाकी उक्ति ते नाइक कहू फेकटा
क्षविसेप अनुभाव ते लोलसा पूर्वानुरागव्यं
गि जानियै व्याजोक्ति अलंकार है ॥ अथा ॥
स्तुति मिस निंदा होइ कै निंदा मिस स्तुति होइ
व्याज स्तुति सो जानियै कहै सियाने लोइ ॥ १४ ॥
दोहा ॥ जेहा जेहा तलैलब्यो स्याम सुभग
सिरमोर ॥ बिनहा छिन उनिग हिरहा द्रग
निअ जो वरहौर ॥ १५ ॥ नाइकाकी उक्ति
वचन अनुभाव ते स्मृति संचारी पूर्वानुराग
व्यंगि जहा दोहा धूंडाश्लील हू को उदाहर
न जानियतु है विभावनालंकार है ॥ १५ ॥
दोहा ॥ जस अपजस देषत नहीं देषत स्या
मल गात ॥ कहा करौ लोलनि च भरे चपल
नैन चलि जात ॥ १६ ॥ उत्तर सषी प्रति ना
इकाको वचन अनुभाव ते नाइकासो रजो
उद्दीपन औत्सुक्य संचारी लोलसा दसा
पूर्वानुराग व्यंगि काव्य लिंग उत्तर को संकर है
॥ १६ ॥ दोहा ॥ नबसिष रूप भरे षरे पै मांग
त मुसुकानि ॥ तजत न लोचन लालची ए ल
लचौही बानि ॥ १७ ॥ उक्ति नाइकाकी सषी प्र
ति वचन अनुभाव ते हर्ष औत्सुक्य संचारी

तोलसारससापूर्वानुरागव्यंगिकाव्यलिंग-
अलंकारहै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ छुटुछगुनीपकु
चौमिलतअतिदीनतादिखाइ ॥ चलिवा
मनकोब्यौंतसुनिभोवलितुम्हैपसाइ ॥ ८ ॥
परकियाकीउक्तिनायकप्रतिवचनअनु
भावहर्षसंचारीतेपूर्वानुरागव्यंगिलोको
क्तिअलंकारहै ॥ ९ ॥ दोहा ॥ नैनानैकुन
मानईकितोकह्योसमुझाइ ॥ तनमनहारे
हूहसैतिनसोंकहाबसाइ ॥ १० ॥ उक्तिउ
पपतिकीकेपरकियाकीसखीप्रतिवचन
अनुभावतेविषादसंचारीतेपूर्वानुरागव्यं
गिअर्थांतरन्यासअलंकारहै ॥ ११ ॥ दोहा ॥
लटकिलटकिलटकतुचलतुडटतुमुकट
कीछाह ॥ चटकभरोनटमिलिगयोअटक
भटकभटमाह ॥ १२ ॥ उक्तिपरकियाकीस
खीप्रतिवचनअनुभावतेस्मृतिसंचारी
पूर्वानुरागव्यंगिस्वभावोक्तिअलंकारहै ॥ १३ ॥
दोहा ॥ फिरिफिरिबूझतिकहिकहाकह्यो
स्यामरगगात ॥ कहाकरतदेखेकहांअली
चलीकरहबात ॥ १४ ॥ दूतीप्रतिउक्तिपर
कियाकीवचनअनुभावतेअभिलाषसं
चारीपूर्वानुरागव्यंगिलाटानुप्रासहै ॥ १५ ॥

अ॰ चं॰

दोहा ॥ दुबहइ निचरचानदै आनन आ
ननआन ॥ लगी रहति हू का द्विये कानन
कानन कान ॥ २२ ॥ उक्तिवाद संकिता पर

॥ ६४ ॥

क्रियाकी वचन अनुभाव संकोच अपबिं
चारी ते पूर्वानुराग व्यंगि लाटानुप्रास है
॥ २२ ॥ दोहा ॥ वह के सवजियकी कहत है
[illegible] र कुंवर लखै न ॥ बिन औरै बिन
औरसै [illegible] विछुरा के नैन ॥ २३ ॥ उक्ति स
खीकी परक्रिया प्रति विस्राम ति व्यंगि ना
इक के केटाल विलेप अनुभाव ते चपल
ता औत्सुक्य संचारी पूर्वानुराग व्यंगि
त्प्रेक्षालंकार है ॥ २३ ॥ दोहा ॥ कहत सबै
कवि कमल से मो मत नैन पखान ॥ न तर
कत इन विय लगत उपजत विरह कृसा
न ॥ २४ ॥ उक्ति उपपति की कै परक्रिया की
पूर्वानुराग वचन अनुभाव ते वितर्क सं
चारी व्यंगि है ते त्प्रेक्षालंकार है ॥ २४ ॥
दोहा ॥ लाज लगाम न मानई नैना मो व
स नांहि ॥ ए मुंहजोर तुरंग लौं ऐंचत हू
चलि जांहि ॥ २५ ॥ परक्रिया की उक्ति स
खी प्रति दूतत्व के राखो चाहति है अनु
भाव चपलता औत्सुक्य संचारी ते प

॥ ६४ ॥

129

र्वानुरागव्यंगिउपमालंकारहै ॥ २५ ॥ दोहा ॥
दुनदुखियाअखियानिकौसुषसिरजोई
नाहि ॥ देषतबनैनदेषतैबिनदेषेअकुला
हि ॥ २६ ॥ उक्तिपरक्रियाकीवचनअनुभाव
निर्वेदविषादसंचारीतेपूर्वानुरागव्यंगिवि
सेषोक्तिअलंकारहै ॥ २६ ॥ दोहा ॥ लरिका
लैवेकेमिसनलंगरमोढिगआइ ॥ गयोअ
चानकआंगुरीछातीछैलछुआइ ॥ २७ ॥
नाइकाकीउक्तिअंतर्वेलीसषीसौंवचनअ
नुभावतेहर्षसंचारीपूर्वानुरागव्यंगिपर्या
योक्ति ॥ २७ ॥ दोहा ॥ बिलषबिकनईचटके
सौलपटितसटकलौआइ ॥ नारिसलोनीसा
मरीनागिनिलौडसिजाइ ॥ २८ ॥ उपपतिकी
उक्तिवचनअनुभावतेस्मृतिसंचारीगुन
कथनतेपूर्वानुरागव्यंगिउपमालंकारहै ॥
॥ २८ ॥ दोहा ॥ रह्योमोहमिलनोरह्योयोंके
हिगहेमरोर ॥ उतदैसषिहिउराहनोइत
चितईमोओर ॥ २९ ॥ उपपतिकीउक्तिवच
नअनुभावतेस्मृतिसंचारीपूर्वानुरागव्यं
गिनाइकाकेक्रियाविदग्धतासअनुभावते
अवहित्थासंचारीसंकापूर्वानुरागव्यंगि
गढोक्तिअलंकारहै ॥ यथा ॥ गोनिलेडु

130

र० चं०

कविराजैयहअलंकारहैवेस॥गूढो

कतिमसओरकेकीजैपरउपदेस॥२८॥

॥६५॥ दोहा॥सहितसनेहसकोवसुषस्वेद

कंपमुसुकानि॥प्रानपानिकेरआपने

पानधरमोपानि॥३०॥उपपतिकीउ

क्तिवचनअनुभावस्मृतिसंचारीनाइ

काकेआकृतिअनुभावअपादर्षसंचा

रीस्वेदकंपसात्विकतेरतिपूर्णजानि

येनाइकामध्यासीप्रासततिहैविस्म

यअलंकारहै॥३०॥यथा॥जैसाहैकै

कधुलीजियै॥तैसाविस्मयचितकीजि

यै॥३०॥दोहा॥चितवनिभोरेभाइकी

गोरेमुषमुसुकानि॥लगनिलटकि

आलीगरेचितषटकतिनितआनि॥

॥३१॥उपपतिकीउक्तिवचनअनुभाव

तस्मृतिसंचारीगुनकथनदसातेपू

र्वानुरागवंगिपरकियाकेहर्षसंचारी

वेहाअनुभावसुरतेहावंगितस्वभावो

क्तिअलंकारहै॥३॥दोहा॥बिनाबि

नमेषटकतिसुहियभरीभारमेआत ॥६५

॥कहिगुवलीविनहीबितेओठनिहीं

मैवात॥३२॥उपपतिकीउक्तिवचन

131

अनुभावतेस्मतिसंचारीअरुविभावतें
पूर्वानुरागव्यंगिनाइकापरकियास्मति
अलंकारहै॥३२॥दोहा॥सुनरीस्यामसता
रनभमुषससिकीउनहारि॥नेहदवाव
तुमीहलौनिरषिनिसासीनारि॥३३॥
उक्तिउपपतिकीवचनअनुभावतेगुन
कथनकरिपूर्वानुरागव्यंगिनाइकाके
कोऊभाउनसाभासतुहैललितहावप
रकियारूपकालंकारहै॥३३॥दोहा॥दे
षतकछुकौतिकइतेदेषोनेकुनिहारि
कबकीइकटकडटिरहीटटियाअगु
रिनफारि॥३४॥दूतीकीउक्तिनाइकप्र
तियाकेकहिवेतेनाइकके पूर्वानुराग
परकियास्वभावोक्तिअलंकारहै॥३४॥
दोहा॥मननधरतमेरोकहोतूआपने
सयान॥अहेपरनिपरिप्रेमकीपरहथ
पारिनप्रान॥३५॥उक्तिसषीकीपरकि
याप्रतिसिराभतिभावध्वनिहैनाइकाके
पूर्वानुरागहैसुललितकरोहैयातेहेतु
लालिताकहिवेहत्यानुप्रासहै॥३५॥दोहा॥
मैतोसोकैवाकह्योतजनिरहैपत्याइ ॥

लेगालगीकरिलोइननिउरमैलाईलाइ ॥ ३६ ॥
सखीकीउक्तिपरक्रियासोपूर्वानुरागरूपका
तिसयोक्तिअलंकारहै ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ वेठटे
उमरातउतजलनवुझैवउवागि ॥ जोहीसो
लागोहियोताहीकेउरलागि ॥ ३७ ॥ सखी
कीउक्तिनाइकाप्रतिनाइकुठाढोहैतासोचे
ष्टाकरतिहैतातेपूर्वानुरागव्यंगिसोइन
लक्षितकरोहैयातेलक्षिताहैअर्थांतर
न्यासअलंकारहै ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ मोहिभरोसो
रीझिहैउझकिझाकिइकवार ॥ रूपरिझाव
नहारजहवैनैनारिझवार ॥ ३८ ॥ दूतीकी
उक्तिपरक्रियाप्रतिसिंसापतिभावध्वनि
करिपूर्वानुरागहैसमालंकारहै ॥ जथा ॥
कारनअंगकाजमैवहै ॥ श्रमविनकारज
सिद्धक्रिचहै ॥ जथाजोगकोलखिकेसंग ॥
त्रिविधसमालंकारअभंग ॥ ३८ ॥ दोहा ॥
अयुरिनुउछिभरुभीतिरैउलटिखितैचख
लोल ॥ रुचिसोउ ह्रउ ह्ननिकेचमेचारुक
पोल ॥ ३९ ॥ जिनलक्षितक्रियोहैसोसखी
सखीसोकहतिहैदंपतिकेचुंवनअनुभा
वतेऔत्सुक्यहर्षसंचारीतेसंजोगश्रृंगार

133

प्रगटपरक्रियानाइकाहै जातिवर्ननं ॥ ३९॥
दोहा॥ रहा पैज कीन्हा जु मै दीन्हा तुम्है मिला
इ॥ राखद्रु चंपक माल ज्यौ लाल हियै लपटा
इ॥ ४०॥ बानइती की उक्ति उपपति सो
परक्रिया उपमालंकार है॥ ४०॥ दोहा॥ लाइ
लाल बिलोकियै जाकी जोबन मूलि॥ रही
भौन के कौन मै सोनजुही सी फूलि॥ ४१॥ बान
इती की उक्ति उपपति सौं अभिसारिका उत्प्रे
क्षालंकार है॥ ४१॥ दोहा॥ नहि हरि लौ हि
यरा धरौ नहि हर लौ अरधंग॥ एकै तेही
करि राखियै अंग अंग प्रति अंग॥ ४२॥ सखी
इती की उक्ति तें परिहास नाइका को अभि
लाष नाइका परक्रिया व्यंगि जो बंडिता की उ
क्ति सो इतौ अधीरत्व नाइका स्वक्रिया नाइ
कु सापराध वक्रोक्ति बोध व्यंगि करि व्यंजित है
उपमालंकार है॥ ४२॥ दोहा॥ लोहि मनो घर
करगहत दिखादिखी की इठि॥ गडी सुचित ना
ही करत करि ललचौही दीठि॥ ४३॥ नाइका
की उक्ति सखी प्रति वचन अनुभाव स्मृति
संचारी तें पूर्वानुराग व्यंगि उत्तम काव्य स्म
ति अलंकार है॥ ४३॥ दोहा॥ गली अंधेरी सां
करी भौ भटभेरौ आनि॥ परे पिछाने परस

अ॰ चं॰

॥ ६७ ॥

घरसेंजू परसावि छाति ॥ ४४ ॥ सखीकी उ
क्ति स्वयंदूती अनुभावते श्रृंगार व्यंगि परकि
याउन्मीलित अलंकार है ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ ह
रखिन बोली ललन सौं निरखि अमिल
संग साथ ॥ आंखिन हीमै हसि धरौ सीस
हिये पर हाथ ॥ ४५ ॥ सखीकी उक्ति सखी
सौं परकिया कौ बोधक हव हाथ नाइका
ने दुइ बार धरौ तातें नि सिव की सौगं
ध व्यंजित है सु सम अलंकार है ॥ ४५ ॥
दोहा ॥ सरस सुमिल चितु तुरग को करि
करि अमित उठान ॥ गोइ नवा है जाति
इन बेलि प्रेम चौगान ॥ ४६ ॥ दूती सखीकी
उक्ति सिहाभाव ध्वनि परकिया रूपका
लंकार है ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ दोऊ चोर मिही
चनी खेलन खेलि अघात ॥ दुरत हियैं ल
पटाइकैं छुवत हियैं लपटात ॥ ४७ ॥
सखीकी उक्ति सखी सौं दंपति के क्रियानुभा
व हर्ष संजोग श्रृंगार लक्षिता परकिया
विसेषोक्ति अलंकार है ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ सुनि
तिय बलत मभाउरै उहीं परोसिनि नाह ॥
लसी तमासे के दृगनि हांसी आंसुनि मा
ह ॥ ४८ ॥ सखीकी उक्ति सखी सौं परकि

॥ ६७ ॥

135

याकेहर्षसंचारीयविभावभासप्रस्तर्वनकनु
लंकारहै॥४९॥सोरठा॥मैलछिनोरी
शानकरिसोनिरधारजमहु॥वहइरि
गनिसनवैरवहैओषरवहै॥४८॥
परक्रियाकोपूर्वानुरागलक्षितकियो
हैसोसषीसषीसौकहतिहैयातेहेतु
लक्षितकहियेउभयावत्तदीपकालंका
रहै॥४८॥दोहा॥नाहारजनाहगरज
वोजुसुनायोटेरि॥फुसीफोजविचवंदिके
हसीसवनितनहेरि॥५०॥उक्तिहैषन
वारेकोकहतिगरजिवोअनुभावउग्र
ताधृतिसंचारीवरदालविभावतेवीररस
व्यंगिनाइकाकेवंधनविभावतेकेरुना
सांतिहसीअनुभावअरिभटदर्शविवर्ण
ताविभावतेहर्षसंचारीयातेहास्यरस
व्यंगिसेनाकेविवर्णताविभावकेरिभ
यस्थाईषोछोतातेभयानकरसव्यंगिइ
नपरस्तेभारतीवृत्तिहैप्रस्तर्वनमलं
कारहै॥जथा॥विनाजतनवंधितप्र
लहोइ॥पहिलोभेदकहैकविलोइ॥
द्विलक्षितहूतेअतिफललहै॥२जोभेद

अ॰ चं॰

सुमतिजनकहै॥ जाकोजतनन्हूटैअति
होइ॥ वस्तुसाध्यआवैपुनिसोइ॥ त्रि
॥ ६८ ॥ विधिप्रछन्नजानौमित्त॥ लखनल
खियैअवधानित्त॥ ५०॥ दोहा॥ न
हिअन्हाइनहिजाइघरचितचहुधा
तकितीर॥ परसिपुरहरीलैफिरति
विहसतिधसतिननीर॥ ५१॥ परकि
याकोपूर्वानुरागलक्षितक्रियोहैसो
सबीसबीसौकहतिहै क्रियाविदग्धा
परकियानाइकुनिकटबोधवंविला
सहावजातिवर्ननं॥ ५१॥ दोहा॥ मुख
पखारिमुडहरुभिजैइसीससजल
करछुआइ॥ मोरउचैघोटेनिचैनारि
सरोवरन्हाइ॥ ५५॥ उपपतिकोउ
क्तिसाक्षातदर्शनवचनअनुभावते
पूर्वानुरागव्यंगिभरतसक्रमतनाइ
कापरक्रियाहैजातिवर्नने॥ ५५॥ दो
हा॥ विहसतिसकुचतिसीहियेकुच॥ ६९
अंचराविचवाह॥ भीजेपटतटकौ
चलीन्हाइसरोवरमाह॥ ५६॥ जि
नसबीलक्षितकरीहैसोसबीसो

137

मस्तति अपाभासस्मतिअनुभावतेहर्ष संचारीश्रृंगाररसउपपतिनिकटपर कियाबोधव्यहैव्यंगिकरिव्यंजितलजि तत्ताबजोतिवर्नेनं ॥ ५६ ॥ सेहा ॥ मुरुग्धो वैगाडोघिसतिहसतिअनेगवतितीर ॥ धसतिनइंदीवरनयनिकालिदीकेनीर ॥ ५७ ॥ जिनसखीलक्षितकरीहैसोसखीसोक हतिहैकियाविदग्धापरकियानाइकु निकटबोधव्यहैविलासहावआतिवर्न नं ॥ ५७ ॥ सेहा ॥ चितवतजितवतहितहिये कियेतिरीछेनैन ॥ भाजेतनसेउकपैकै हूजेपनिवरैन ॥ ५८ ॥ जिनलक्षितकरी हैताकीउक्तिसंपतिकेकटाक्षविक्षेपअ नुभावतेअनुरागव्यंगिपरकियाजोति वर्नेनं ॥ ५८ ॥ सेहा ॥ देखफूलहनेजु सिसुउठेहरबिअंगफूलि ॥ हसीकरति औषदिसबिनदेहदरोरनिभूलि ॥ ५९ ॥ सखीकीउक्तिसखीसोंपरकियाकेहर्ष संचारीतेअनुरागव्यंगिसखीनिकेअ नुभावतिअलंकारहै ॥ ५९ ॥ सेहा ॥ औ रसवेहरबोहसैगावेभरीउछाह ॥

138

अ॰ चं॰

वहीवधूविलखीफिरैकौदेवरकेव्याह ॥ ६०॥ सखीकीउक्तिपरकियाप्रतिविभावसंचारीतेंअनुरागव्यंगिसूछमअलंकारहै॥ ६०॥ इतिसाधारनपरकिया॥ अथअनुसयानादोहा॥ फिरिफिरिविलखीह्वैलखतिफिरिफिरिलेतिउसास॥ साईसिरकचसेतलौंबीत्योचुनतकपास॥ ६१॥ सखीकीउक्तिसखीसौंनाइकावर्त्तमानस्थानविघटनानुसयनाउत्तमकाव्यउपमालंकार॥ ६१॥ दोहा॥ मनुसकोवीत्योवनोऊखौलईउखारि॥ हरीहरीअरहरअजौधरधरहरिजियनारि॥ ६२॥ अंतर्वर्तिसखीकीउक्तिपरकियासोवर्त्तमानस्थानविघटनानुसयनाअनुप्रास॥ ६२॥ मतिरामकोदोहा॥ केलिकरैमधुमत्तजहघनमधुपनकेपुंज॥ सोचुनकरत॥ सासुरेसखीसघनघनकुंज॥ ६३॥ सखीकीउक्तिभाविस्थानसंदेहानुसयनापरकियाकाव्यलिंगअलंकार॥ ६३॥ मतिरामकोदोहा॥ छरीसपल्लवलालकरलखितमालकीमाल॥

॥ ६९॥ ॥ ६९॥

कुम्हिलानी उर माल धरि फूल माल ज्यों
बाल ॥ ६४ ॥ जिनलछित क्रियो है तो सखी
की उक्ति सखी सौ स्वानधिष्ठित स्थल रम
नगमनानुसयना परक्रिया सस्यालंका
र है ॥ ६५ ॥ अथ लछिता सोरठा ॥ सुदुति
उराई दुरति न हिय प्रगटकै रति रति रूप ॥
छुटै पीक औरै भई लाली ओठ अनूप ॥ ६६ ॥
सखी की उक्ति सखी सौ सुरत लछिता नो
इका भेद कोतिसयोक्ति ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ र
ही दहेडी ढिग धरी भरी मथनियां बारि ॥
उलटी करि फेरति रई नई विलोवन हारि ॥
॥ ६८ ॥ सखी की उक्ति सखी सौ हेतुलछि
ता क्रियो है सो कहति है नाइका के क्रिया
नुभाव मो हसंचारी ते पूर्वानुराग व्यंगि
भेरु वै चित्तता कै स्मृति ते भई है नाइ कु
देखो है जहधवनि ही ते बोध व्है है असं
गति ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ कौ रिजि तन की जै तेऊ
नोगहि नेह दुरैन ॥ कहै देत चित चीक
नैन ई रूखाई नैन ॥ ७० ॥ सखी की उक्ति
नाइका प्रति अवहित्था संचारी करि हे
तुलछिता करि पायो है सो भट करिकै

ग्र॰ सं॰

कहतिहैविभावना॥६७॥दोहा॥पूछे
कौनकथापरतिसगिवगिरहीसनेह
मनमोहनछविपरकटीकहैकटीलो
देह॥६८॥सखीकीउक्तिनाइकासोंल
छितक्रियाहैहेतुपूर्वानुरागअरुहि
ष्यासंचारीरोमांचसात्विकअनुभावतें
लछितताहैकाव्यलिंग॥६८॥दोहा॥
मैंजहतोंहांमैंलखीभक्तिअपरववाल
लाह्प्रसादमालोजुभौतनकरंबकीमा
ल॥६८॥उक्तिसखीकीपरक्रियाप्रति
अपर्वीपरतेसांतरसभासतुहैजातेर
सावदलंकारहैजासौगुनीभूतव्यंगि
कहतिहैरूपकातिसयोक्ति॥६९॥दोहा
पलनचलीजकिमीरहीथकिसीर
हीउसास॥अवहीतनुरितयोकहाम
नुपरयोकिहिपास॥७०॥सखीकीउ
क्तिपरकियासोंहेतुतौस्मृतिसंचारी
स्तंभसात्विकतेंपूर्वानुरागव्यंगिसो
लछितक्रियोहैयातेहेतुलछिता
अथवापापरिहासकरतिहैउत्प्रेक्षा
॥७०॥दोहा॥नाकचढेसीवीकरैजितै

॥७०॥

छबीली छैल ॥ फिरि फिरि भलि नहि लागहै
क्यों क करीली गैल ॥७१॥ जाको अर्थ लि
छि आयो है ॥७१॥ दोहा ॥ रुख मुख फेरि
कि है रिस उत हित समुहै चित नारि ॥ डीठि
परत उठि पीठि के पुलकै कहत पुकारि ॥७२॥
सखी की उक्ति नाइका सौ पति सा सपर्व के
हेतु लछित कियो है मानाभास विभावना ॥
॥७२॥ दोहा ॥ न हिन सीस सावित भई लुटी
सुखन की मोट ॥ चुप करि ए चारी करति
सारी परी सरोट ॥७३॥ सखी की उक्ति पर
क्रिया प्रति वा के अवहिथ्या संका संचारी
अरु सुरत लछित ताजो नियै काव्यलिंग
लोकोक्ति ॥७३॥ दोहा ॥ मा सौ मुलवत्ति
चातुरी ते न हि मानति भेव ॥ कहै देतु गह
प्रगट ही प्रगटे पुसपसेव ॥७४॥ सखी
की उक्ति नाइका सौ ओपसीना सुरत को है
तो लछित ताजो नियै ओ सात्विक भाव को
तो सखी उपालंभ मिस परिहास करति
है विभावना लंकार ॥७४॥ दोहा ॥ सही
रंगीली रति जगी जगी पगी सुख चैन ॥
अलसौहे सौहै कियै कहै हसौहै नैन ॥७५॥

अ० चं०

उक्ति सखी की नाइका सुरति लछि ताके आ
लस हर्ष संचारी आहै तिन अनुभाव का
।।१५।। थलिंगजमक ।।१५।। सोरठा ।। पट की छि
कत टाकि पति सो हति सुभाग सुवेष ।। ह
रह धरह छवि देति जह सरह रह धरह कार
ब ।।१६।। सखी की उक्ति लछि ता प्रति व्या
ज स्तुति ।।१६।। अथ क्रियाविरोधा दोहा ।।
बरी भीर हू भेदि कै कित हू है इत आइ ।।
फिरै डीठि जु रिडीठि सो सब की डीठि बचा
इ ।।१७।। नाइक की उक्ति हूती सो क्रिया
विरोधा के टहाल विसेष अनुभाव तें अ
नुराग व्यंगि विभावनालंकार ।।१७।।
दोहा ।। हरुप हिरि पटु उठि कियो वैंरी
मिस परिनाम ।। चंचल चलाइ घर कौ चल
त विराकियै घनस्याम ।।१८।। सखी को उ
क्ति सखी सो क्रियाविरोधास स्पालंकार ।।
।।१८।। अथ वाग्विरोधा सोरठा ।। धाम
धरी कुंनि वा प्रियै कलित ललित अलि ।।१९।।
पुंज ।। जे मुनो नीरत माल तरु मिलत
मालती कुंज ।।१९।। बोध अव्यंगि करि
वचन विरोधा स्वयं दूती पर क्रिया की।

उक्ति नाइकको ऊराकसंजोगलालसामती
कहतिहै पर्यायोक्ति: ॥ ७९ ॥ इतिश्रीरस
नवरसचंद्रिकायां परकीयावर्ननं नव
मप्रकास: ॥ ९ ॥ अथरसदसावर्ननं ॥
तत्र आदै लालसादसा दोहा ॥ कोरि जतन
कोऊ करौ तनकी तपति न जाइ ॥ जौलौ
भीजे चीर लौ रहै न व्यौल पिटाइ ॥ ८० ॥
नाइकाकी उक्ति अंतर्वर्ती सखीसो है इहौ
संजोगलालसामति कहियै उपमा ॥ ८० ॥
अथ चिंतादसा दोहा ॥ धुनि सुनि सहि
तसनेहलल बिहरै हियो मुसिकाइ ॥ कोज
हवात वनै सखी क्यौ जियको दुषु गाइ ॥ ८२ ॥
चिंतामती नाइकाकी उक्ति सखी प्रतिसं
देहालंकार ॥ ८३ ॥ अथ स्मृति दोहा ॥
पियके ध्यान गही गही रही वही है नारि ॥
आपु आपुही आरसी लखि रीझति रिझ
वारि ॥ ८४ ॥ उक्ति सखी की सखी सो नाइका
के स्मृति दसा है मोह संचारी ते हर्ष संच
रे ताते अतिरति द्योतित भई है उत्तम
काव्य जौ प्रवास ठहरै पै तौ स्वकीया ऊ
होइ औ पूर्वानुराग होइ तौ परकीया भां
ति ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ सकै सताइ न विरहत

144

क.चं.

मतिसिद्धिमसरसमनेह ॥ रहैवहैलागी
दगानिरीपसिबासीदेह ॥ ८३ ॥ नाइक
॥७२॥ कीउक्तिस्मृतिदसाउपमालंकार ॥ ८३ ॥
दोहा ॥ कबकीध्यानलगीलखौजेह
घरूलगिहैकाहि ॥ उरियत्तुभंगीकी
टलौमतिबदरहूजोहि ॥ ८४ ॥ सखी
कीउक्तिसखासोनाइकाके पूर्वानुरा
गस्मृतिदसासखीकेवितर्कसंचारउत्से
क्षालंकार ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ परसतपोछ
तलखिरहतलगिकपोलकेध्यान ॥
करलौप्योपाटलविमलप्यारीपठ
ापान ॥ ८५ ॥ सखीकीउक्तिसखासो
नाइककेस्मृतिदसास्मृति ॥ ८५ ॥ दोहा ॥
लहिरतिसुखलगियेगरेलखीजगो
हानीहि ॥ खुलतिनमोमनबंधिरही
वहैअधखुलीदीठि ॥ ८६ ॥ नाइक
कीउक्तिवचनअनुभावतेस्मृतिद
सानाइकामध्याभासतिहैविरोधा
भास ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ ध्यानआनढिग ॥७२॥
प्रानपतिमुदितरहतदिनराति ॥ प
लकंपतिपुलकितिपलकुपलकुप
सीजतिजाति ॥ ८७ ॥ सखीकीउक्तिस

145

बीसौनाइकाकेस्मतिरसातेपूर्वानुरागा
क्वंगिलाटानुप्रास ॥ ८७ ॥ अथगुनकथन
दोहा ॥ मोहनुअ्पोटेपीतपटुस्यामसलो
नेगात ॥ मनौभालमनिसैलपरआतप
परोपभात ॥ ८८ ॥ सलोनोपरस्यंगारकी
जकहैताते नाइकाकीउक्तिगुनकथन
रसाजोनिर्वेउत्प्रेक्षा ॥ ८९ ॥ अथउद्वे
गरसादोहा ॥ औरैभांतिभएनएचौ
सरुचंदनचंद ॥ पतिविनुअतिपारति
विपतिमारतमारुतमंद ॥ ९० ॥ नाइका
कीउक्तिउद्वेगरसाभेदकातिसमोक्ति
स्वानुप्रासजमककोसंकरकोमलावृत्ति ॥ ९१ ॥
अथप्रलापदोहा ॥ मोसोमतिवोलोह
हासुबियाहानदलाल ॥ मोहनकितसौ
वकिउठतिभईविकलअतिवाल ॥ ९२ ॥
उक्तिसखीकीसखीसौनाइकाकेप्रला
परसाजातिवर्ननदोहाछेपक ॥ ९३ ॥
अथोन्मादरसदोहा ॥ तजेसंकसकुचति
नचितवोलतिवाककुवाक ॥ दिनछ
नदाछाकीरहतिछुटोविषमछविछाक
॥ ९४ ॥ सखीकीउक्तिसखीसौनाइकाके
उन्मादरसाव्रततिरेकालंकार ॥ ९५ ॥ अ

र. चं.

थ व्याधि दसा दोहा ॥ मैलै दिय पोलिय पोसु
करध्रुव तधन कि गौ नीर ॥ लालन तु म्ह
रे अरग जा उर हूं लायो अवार ॥ २१ ॥ नो
इक सौ हूती की उक्ति नाइका कौ विरह नि
वेदन व्याधि दसा अस्तुक्ति. ॥ २२ ॥ अथ
जडता दोहा ॥ वरि गई हाथ उपरियां
रहि गई आगि ॥ घर की वाट विसरा गई
गहुने लागि ॥ २३ ॥ पर की या के जडता
दसा सखी की सखी सौ जाति ॥ २३ ॥ इति
श्री अनवर चंद्रिकायां दस दसा वर्न
नं दसम प्रकास: ॥ १० ॥ अथ सात्विक
भाव दोहा ॥ डिगत पानि डगुलात गि
रि लखि सब ब्रज वेहाल ॥ कंप किसो
रीदरस तें खरे लजो ए लाल ॥ २४ ॥ हू
सके श्रृंगार रस अपासं चारी कंप साति
के ब्रज वासिन के भयान रस को ब्यलिं
ग. ॥ २४ ॥ दोहा ॥ विहसि बुलाइ विलो
कि इत प्रौढ तिया रस धामि ॥ पुलकि
पसीजे ति पत को ब्यौ च स्यो मुह च मि ॥ ७३
॥ २५ ॥ उक्ति सखी की सखी सौ संजोग
श्रृंगार प्रस्वेद सात्विक मरनाच प्रौढ
नाइका अस्मंगति ॥ २५ ॥ दोहा ॥ रहै

॥ ७३ ॥

दि. 147

गुप्तावेनीलबेगुह्विके सौनार ॥ लागीनार

कुच्मानलानाठिसुबोरावेर ॥ २६ ॥ उक्तिस्वा

धीनाकी नाइकके स्वेदसात्विक व्योगोक्ति

॥ २६ ॥ दोहा ॥ हियोहियोसंगनाथके हाथ

हियेहाथ ॥ स्वेदसलिलरोमांचकुस

गहिदुलहअरुनाथ ॥ २७ ॥ उक्तिसखी

कीसखीसौदंपतिकेरोमांचस्वेदसाविं

कसंजोगशृंगारनाइकागांधर्वविवाहवि

धिस्वकीयाहै ॥ केकेमतरूपक ॥ २७ ॥ दो॰

दुचितेचितचलतिनहसतिहसतिनजु

कतिविचारि ॥ लिखतचित्रपियलखिचि

तैरहीचित्रलौनारि ॥ २८ ॥ उक्तिसखीकी

सखीसौएकपक्षलाजईर्षासंचारीस्तंभ

अनुभावतेमध्याखंडिताव्यंगि ॥ एकपक्ष

चित्रदर्शनितेस्तंभसात्विकक्रियानुभावते

चित्रिनीनाइकाअनुरागव्यंगि ॥ एकपक्ष

वितर्कसंचारीस्तंभअनुभावतेव्यंगिउल्ले

खालंकार ॥ २८ ॥ दोहा ॥ सुरतिनतालननता

नकाउल्योनसुरहराइ ॥ रारीरागुविगा

रिगोवेरीवोलुसुनाइ ॥ २९ ॥ परकीयाकी

उक्तिवचनअनुभावतेव्यंगिस्वरभेद

सात्विकतेपूर्वानुरागकाव्यलिंगअलंकार ॥ २९ ॥

148

अ. चं.

दोहा ॥ हितु करि तुम पठयो लगे वा बिजना की बाइ ॥ टरी तपति तन की तऊ चली पसीना न्हाइ ॥ ५०॥ दूती की उक्ति नाइक प्रति नाइका को प्रेम ब्यंजित करति है नाइका के स्वेद सात्विक ते नाइक के बिजना पठै बे ते पूर्वानुराग ब्यंगि उत्तम काव्य विभावना ॥ ५१॥ दोहा ॥ ऊंचे चितै सराहियत गिरह कबूतर लेत ॥ दृग जलकत मुलकित बदन तन पुलकित किहि हेत ॥ १॥ उक्ति सखी की परकीया सौं अश्रु रोमांच सात्विक भाव नाइक के कबूतर बीथव्य है ग्रेक्ति ॥ १ दोहा ॥ कारे बरन डरावने कित आवत इहि गेह ॥ कै वा लख्यो सखी लखैं लगै थरहरी देह ॥ २॥ उक्ति परकिया की सामर्थ्य वतं बचन विदग्धा हेतु गुप्ता कंप सात्विक पर्यायोक्ति ॥ २॥ इति श्री अमरचंद्रिकायां सात्विक भाव बर्ननं एकादशप्रकासः ॥ ११॥ अथ मद्यपान ॥ दोहा ॥ मिलि चंदन बेंदी रही गोरे मुख न लखाइ ॥ ज्यौं ज्यौं मद लाली चढ़ै त्यौं त्यौं उघरति जाइ ॥ १॥ उक्ति नाइक की कै सखी की मद्यपान वर्ननं उन्मीलित ॥ ३ दोहा ॥ रूप सुधा आसव

॥ ५४॥

॥ ५४॥

149

छक्यो आसव पियत वनैन ॥ प्यालै ओठ पि
यावत नरहे लगाए नैन ॥ ४ ॥ सखी की उक्ति
सखी सों संजोग शृंगार सात्विक तुल्य जो
गिता ॥ ४ ॥ दोहा ॥ ठाढी है बोलत हसति
पोटि विलास अपोट ॥ त्यौं त्यौं चलत न पि
य नयन छके छकी नवोट ॥ ५ ॥ उक्ति
सखी की सखी सों नाइका मुग्धा मद्यपान
में वेस्ट नाइक के हर्ष संचारी स्वभावोक्ति
॥ ५ ॥ दोहा ॥ मनौ तमासो के दिए हाविवस
वा समीसे ह ॥ गुकति हसति हसि हसि
गुकति गुकि गुकि हसि हसि हसि है ॥ ६ ॥
सखी की उक्ति नाइक सों मद्यपान जोति
वर्नन ॥ ६ ॥ दोहा ॥ हसि हसि हेरति नवल
तिय मद के मद उमदाति ॥ बलकि बलकि
बोलति वचन ललकि ललकि लपटाति
॥ ७ ॥ सखी की उक्ति सखी सों
मुग्धा नाइका मद्यपान जोतिवर्नन ॥ ७ ॥
दोहा ॥ चलति वचन अधखुलित दृग
ललित स्वेद कन जोति ॥ अरुन वदन
छवि मद छकी खरी छवीली होति ॥ ८ ॥
नाइक की उक्ति तो स्मृति संचारी गुन

150

अ॰ वं॰ कथनसखीकीउक्तिहै इतौनाइकप्रति
सखिउपजावतिहै दूतबब्याजिआति
॥ ७५ ॥ वर्ननं॰ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ निपटलजीलीनव
लतियबहकिवारुनीसेइ ॥ त्यौत्यौअ
तिमीठीलगैज्यौज्यौढीठौदेइ ॥ ८ ॥
मद्यपानवर्ननंनाइकाकेउक्तिस्मृति
संचारीभावविभावना ॥ ९ ॥ इतिश्री
अनवरचंद्रिकायांमद्यपानवर्ननं
भावप्रकास ॥ १२ ॥ अथहाववर्न
नंदोहा ॥ राधाहरिहरिराधिकाबनि
आएसंकेत ॥ दंपतिरतिविपरीतिसु
खसहजसुरतहूलेत ॥ १० ॥ सखीकी
उक्तिसखीसौंदंपतिकेसंजोगश्रृंगा
रहावलीलारतिविपरीतिरतिकाव्य
लिंग ॥ १० ॥ ललितहावमतिरामको
दोहा ॥ तेरीखलनिचितौनिमदुमधु
रमंदमुसिकानि ॥ छाइरहीलाबिलि ॥ ७५
लितकीलाबिअनमिषआबियानि ॥ ११ ॥
दूतीकीउक्तिनाइकाप्रतिहावललि
तजाति॰ ॥ ११ ॥ दोहा हसिओटनि
बियंकरउचैकियेनिचौहैनैन ॥ बरी

151

अरी पिय की पिया विरी लगी मुहदैन ॥ ११ ॥ सखी की उक्ति सखी सौ संजोग श्रृंगार मध्या नाइका के स्वर्जत्र पासंखा री विलोस स हाव नाइका के स्वर्जत्र मिलो च संचार जो ति वर्नेन · ॥ १२ ॥ दोहा ॥ ना क मोरि नाहीं क कै नारि निहोरे लेइ ॥ छुटत ओठ पिय आगुरिनु विरी वदन प्यो देइ ॥ १३ ॥ सखी की उक्ति सखी सौ दंपति के संजोग श्रृंगार नाइका के गई सोभा सितु है संचारी हाव विलास जाति · ॥ १३ ॥ अथ विछित्ति हाव मतिराम को दो · ॥ नेपुनी गज मुकुतानि की लस ति चारु श्रृंगार ॥ जेनु पाहिरौ मुकुमार तन और आभरन भार ॥ १४ ॥ उक्ति सखी की अथ वा नाइका की विछित्ति हाव उत्ले सा ॥ १४ ॥ मोटायते हाव मतिराम को दोहा ॥ गहे ही व्रज मे लख्यो मोहि कलंक गुपाल ॥ सपने हू कबहू हिये लगे न तुम नदलाल ॥ १५ ॥ उक्ति नाइका की नाइका सो मोटायित हाव काव्य लिंग · ॥ १५ ॥ अथ कुट्टमित हाव मतिराम को दो हा ॥ वात म

अ॰ चं॰

कौमनभामती मिलनवास है कंठ ॥ बाह
छुटानकंठतेनाह छुटानेकंठ ॥ १६ ॥ सखी
कीउक्ति सखीसोंकुट्टमितहावलताछानु
प्रास ॥ १६ ॥ अथ विहृतिहावदोहा ॥
होउचाहभरेकेधूचाहैकहोकहैन ॥
नाहिजाचककसुनिसमलौवाहिरानिके
सतवैन ॥ ७ ॥ सखीकीउक्तिसखीसोंदंप
तिकेओसुकवउपासंचारीतेरतिपोषी
विहृतिहावउपमालंकार ॥ ७ ॥ अथ
विव्वोकहावमतिरामकोदोहा ॥ प्रान
पियारोपगपरोतनैतकेतिहूहिओर ॥
ऐसोउरगुकनेरतोमाथहिउरजके
तोर ॥ ८ ॥ सखीदूतीकीउक्तिनाइकासो
विव्वोकहावसेतेत्प्रेसा ॥ ८ ॥ अथवि
भ्रमहावदोहा ॥ आलीवलीकहिकौ
भपैवड़ेभौनकेभाग ॥ उलटीकंचुकि
कुचनिपरकहेदेतिअनुराग ॥ ९ ॥ स
खीकीउक्तिनाइकासोविभ्रमहाव ॥ ९ ॥ ॥ ७६
अथाकिलकिंचितहावदोहा ॥ सुनिपग
धुनिचितईइतैन्हातिदियेहापाटि ॥ च
कीझकीसकुचीडरीहसीलजीलीहाडीटि ॥ १० ॥

॥ ७६ ॥

153

नाइककी उक्ति स्मृति संचारी नाइकाके कि
लकिंचित हावजोतिवर्ननं ॥ २० ॥ इतिश्री
मनेसचंद्रिकायांहाववर्ननंनाम त्रयोदशो
प्रकास: ॥ १३ ॥ अथसंजोगश्रृंगार दोहा ॥
गोपिनसगनिसिसरदकी रमेरसिकरस
रास ॥ लेहाथेस्मृतिगतिनकी सबनिलगे
सबपास ॥ २१ ॥ उक्तिसखीकी सखीसौं अत्र
श्रजसंचारी कारिनाइकरतिसंजोग
श्रृंगार चपलता संचारी रसवर्ननंविसेष ॥
जथा ॥ बिनुअधारआधेयहोइ ॥ लघु
आरंभ सिद्धिबडदेइ ॥ एकवस्तुवनैबहु
ठौर ॥ त्रिविधविसेषजानिसिरमौर ॥ २१ ॥
दोहा ॥ मिसहीमिसआतपदुसहदईसबै
बहराइ ॥ चलेललनमनभामतीहितकी
छांहछुपाइ ॥ २२ ॥ सखीकीउक्तिसखीसौं
नाइकसठकेअवहित्थासंचारीमतिअ
नुरागव्यंगिपर्यायोक्ति ॥ २२ ॥ अथविप्रलं
भश्रृंगारदोहा ॥ मारैमनुहारिनभरीगा
रौखरीमिठाहि ॥ वाकोअतिअनखाहटो
मुसिकाहटविनुनाहि ॥ २३ ॥ धृष्टनाइक
कीउक्तिनाइकाकी सखीप्रतिईर्षाविप्र
लंभविभावेना ॥ २३ ॥ दोहा ॥ जोलैरं

154

र॰ वं॰ धूमगा अंगनिको कछुउ आमसो पाइ ॥
पीढि दिये अंग त्यौर हाडी छिफ रोबालाइ ॥
॥ ७७ ॥ ॥ २४ ॥ दूतीकी उक्ति नाइकाप्रति उपप
तिको दसा निवेदन नाइकके क्रियानुभा
व उन्माद दसा रे पूर्वानुराग अंगि परि
संख्या॰ ॥ २४ ॥ दोहा ॥ सोवत सपने स्या
म घन हिलिमिलि रहत वियोग ॥ तेव
ही टरि कितहू गईनी दोनी दिन जोग ॥ २५ ॥
नाइकाकी उक्ति सखीप्रति पूर्वानुराग
स्वप्न दर्शन विभाव संचारी विभाव न
लोकोक्ति को संकर ॥ जथा ॥ प्रापतिज
हा विरह की निज इछित तेहेइ ॥ तो
हि विभावन कहत हे जे पंडित कवि
लोइ ॥ कहनावति है लोक की लोकोक
ति है सोइ ॥ २५ ॥ दोहा ॥ हसि उताहि हि
यते दई तुम जु तादिना लाल ॥ राखति
प्रान कपूर लौ वहे घुंघटनी माल ॥ २६ ॥
दूतीकी उक्ति नाइकेप्रति नाइकाको वि ॥ ७७
रह निवेदन करत पूर्वानुराग उत्प्रेक्षा॰ ॥
॥ २६ ॥ दोहा ॥ देखत चरक परज्यौ उपै आ
इ जिनि लाल ॥ छिन छिन जाति परी
परी छीन छबीली बाल ॥ ४ ॥ दूतीकी

155

उक्ति नाइकै प्रति नाइका को विरह निवेदन पूर्वानुराग व्यंगि उदाहरन ॥ २७ ॥ दोहा ॥ जो वाके तन की दसा देख्यौ चाहत आपु ॥ तौ बलि नेकु विलोकियै चलि अचका चुपचापु ॥ २८ ॥ उक्ति दूती की नाइक प्रति नाइका को विरह निवेदन दसा पद ते हेस ताव्यंगि काव्य लिंग ॥ २८ ॥ दोहा ॥ कहा कहौं वाकी दसा हरि प्राननि के ईस ॥ विरह ज्वाल जरिबो लखै मरिबो भई असीस ॥ २९ ॥ पूर्ववत लछ ॥ २९ ॥ दोहा ॥ नैकु न जानी परति यौं परो विरह तन छाम ॥ उठति दियै लौं नाहिं हरि लियै तिहारे नाम ॥ ३० ॥ उक्ति दूती की नाइकै प्रति नाइका को विरह निवेदन व्याधि दसा पूर्वानुराग उदाहरन ॥ ३० ॥ दोहा ॥ बालबेलि सूखी सुखद इहि रूखे रुख घाम ॥ फेरि डहडही कीजियै सुरस सींचि घनस्याम ॥ ३१ ॥ मानिनी नाइका नाइक प्रति दूती की उक्ति विरह निवेदन रूपक परिकरांकुर ॥ जथा ॥ साभिप्राय विसेष जहं परिकुर अंकुर सोइ ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ कहा लडैते दृग किये परे लाल

अ॰ चं॰ ॥ ७८ ॥

बेहाल ॥ कहुं मुरली कहुं पीतपट कहूं
मुकुट बनमाल ॥ ३२ ॥ दूती की उक्ति नाइका
प्रति नाइक को बिरह निवेदन पूर्वानु
राग लेष॰ ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ हरि हित रिबरि
रिबरि उठति है करि करि थ की उपाइ ॥
वाको जु रिषलिवे र ज्यौ तो रस आइतौ
जाइ ॥ ३३ ॥ दूती की उक्ति नाइक प्रति
नाइका के व्याधि दसा है पूर्वानुराग ते
सो अवहित्थ्या अथवा परिहास करि
कहति है संभावना ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ बिरह
बिकल बिनहा लिषी पाती दई पठाइ ॥
अंक बिहूनी यो सुचित सनी वाचतु
जाइ ॥ ३४ ॥ नाइक की कहनावति को क
हतु है प्रोषितपतिका प्रवास सम॰ ॥
॥ ३४ ॥ दोहा ॥ रंगराती राते हिये पीतम
लिषी वनाइ ॥ पाती काती बि[illegible]ह की
छाती रही लगाइ ॥ ३५ ॥ सषी की उक्ति ॥ ७८
सषी सो प्रवास विप्रलंभ पाती वर्नन
रूपक ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ तरुज रसी ऊपर
गरी कज्जल जल छिरकाइ ॥ पियपाती

विनहीलिषीबाचीविरहबलाइ ॥३६॥
इवेंवतलेजुआवाचककमलिहूछनविभा
वनो ॥३६॥ दोहा ॥ करलैकमिचटाइ
सिरउरलेगाइभुजभेटि ॥ लहिपातीपि
यकीपियावाचैतिधररतिसमेटि ॥३७॥
इवेंवतजोतिवर्नन ॥३७॥ अथवीररस
दोहा ॥ अनीवडीउमडीलखेंअतिबाह
केभटभूप ॥ मंगलकरिमानोसवैभोमु
हमंगलरूप ॥३८॥ स्थाईस्वतःसंभवीहै
वैरिनअरुनताअनुभावकरिवीररस
व्यंगिरूपक ॥३८॥ दोहा ॥ नोहगरजना
हगरजवोलुसुनायोटेरि ॥ फूसीफौज
विपछकेहसीसवनितनहेरि ॥३९॥
उक्तिदेखनेवारेकीकारूप्रतिगरजिवो
अनुभावताते उग्रताधृतिसंचारीपर
दलविभावतेवीररसव्यंगिनाइकाके
बंधनविभावतेकरुनातेसांतिहसीअ
नुभावकरिअरिभटवस्नवैवनेतावि
भावहर्षसंचारीतेहास्यरसव्यंगि
सैनाकेवैवर्नताअनुभावउग्रआरि

दर्सविभावसंकसंचारीतैभयस्थायीभावो
होतातेभयानकरसव्यंगिहांइनरसन
तेभारतीवृत्तिहैप्रहर्षन ॥ ३९ ॥ अथरौ
द्ररस दोहा ॥ लखिदुरजनअननवरप्रव
लकीनोकोपुकराल ॥ चढीभ्रकुटिफूर
कोअधरभानैनजुगलोलाल ॥ ४० ॥ स्व
तःसंभवीभ्रकुटीकुटिलतानैननकी
अरूनताअधरफरकअनुभावहै
काव्यलिंग ॥ ४० ॥ अथहास्यरसदोहा
खितवितमारकेजोगगनिभयोभाग
सुतसोग ॥ फिरिऊलस्योजियजोइसो
समुझोभारजजोग ॥ ४१ ॥ हास्यरसकोब॰
४१ दोहा ॥ वक्रधनलेइहसानकैपारे
देतसराहि ॥ वैरवधहसिभेदसोरही
नाहमुहचाहि ॥ ४२ ॥ देखिरहिवेते
हास्यरसव्यंगिस्य॰ ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ पर
तियदेषपुरानमुनिहसीपुलकिमु
षदानि ॥ केसुकरिराषीमिश्रहूमुह
आईमुसिकानि ॥ ४३ ॥ रविवंदैकेर
जोरिकैसुनेस्यामकेवैन ॥ भाएहसो

हैसबनिकैअतिअनषोहैनैन॥४०॥
मदुहास्यअनुभावसभयविभावरसव
दालंकारहै॥४४॥अथकरुनारससोरठा॥
अनवरकेचेतअतिविसिरहरनिसिर
बरा॥फिरिउपजैइहिचेतपरतिमनमा
जेलथलभरतु॥४४॥रुदनअनुभावउ
त्प्रेक्षा॥४४॥अथअद्भुतरससोरठा॥
हनीपूतनाअघरियोजगभुरमैदिष
राइ॥केहुजानियैकोभयोप्रगटनंदघ
रआइ॥४५॥केविविवद्धवक्ताकीउक्ति
वचनअनुभावपर्यायोक्ति॥४६॥अ
थभयानकरससोरठा॥देषतअनवर
बावरनउअनरवेहहराइ॥बढौकंप
रोमाउठेवरनगयेपियराइ॥४७॥स्वतः
संभवालेमांचकंपवैवर्नअनुभावलाट
नुप्रास॥४७॥सोरठा॥वलयापीकउगार
मुषमिलेसंजोगनिवास॥मारौविरहम
नौपरोपंजरलोहूमास॥४८॥स्वतःसं
भवीग्लानिप्रगटीहैउत्प्रेक्षा॥जथासं
ष्यरसवदालंकारकोसंकर॥जथा॥

६।४

160

अ॰ चं॰

॥ ८०॥

त्रिहिकैमकहिकहियेकधूतिहिकै
मतिहिकीवात।कहियेकैमधूटेनसो
जथासंभवअवदात॥४८॥अथसां
तरसदोहा॥दियोसुसीसचढाइ
लैआधीभातिआरि॥जाप्पेसुषु
चाहेलियोताकेदुषहिनफेरि॥४९॥
सिघ्रामतिसंचारीवचनअनुभावतेसां
तरसव्यंगिविचित्र॥जथा॥उलटेफलकी
चाहसौंकीजैजतनविचित्र॥४९॥दोहा॥
मैतपाइत्रैतापसौराषोहियोहमामु॥
मतिकैवहूआतहियापलकुपसोजौं
स्यामु॥५०॥उक्तिनाइकाकी होइतौसिं
गाररसमैमहाकापाकविभक्तिजानियै
पैत्रैतापपदतेकाहूसाधकीउक्तिभास
तिहैवचनअनुभावनिर्वेदस्थायीसंचा
रीकरिसमस्याईपोषोताते सांतरस
व्यंगिसंभावना॥५०॥दोहा॥जमकरि
मुहतरहरिपरोइहिधरहरिचितलाउ॥ ॥८०
विषैतषापरिहरिअजौनरहरिकेगुनगा
उ॥५१॥सिघ्रामतिसंचारीवचनअनु

161

भावतेसांतरसव्यंगिग्छेकानुप्रास॥५१॥
दोहा॥जगतुजनायोजिहिसकलसोह
रिगानोनाहि॥जिनिआंखिनिजगुदे
खियेआंखिनदेखीजाहि॥५२॥वचन
अनुभावतेसांतरसव्यंजिजेकुविचारो
सांतरसकोदोहानुमैजानियेदृष्टांत॥
॥५२॥दोहा॥जपमालाछापेतिलकसरे
नएकौकामु॥मनकांचेनाचेवृथासांचे
रांचेरामु॥५३॥परिसंख्या॥जथा॥अर्थ
निबंधोएकथलकूजेथलठहराइ॥परि
संख्यातासोंकहतसकलकवीसमुदाइ
॥५३॥सोरठा॥मैंसमुझोनिरधारयह
जगुकांचोकांचसो॥एकैरूपअपार
प्रतिबिंबितलखियेजहां॥५४॥उल्लेखा॥
॥५४॥दोहा॥बुधिअनुमानप्रमानश्रुति
कियेनीठिठहराइ॥सूक्षमकटिगतिब्र
ह्मकीअलखलखीनहिजाइ॥५५॥का
व्यलिंग॥जथा॥अर्थसमर्थनेकीजिये
जहांजुक्तिसोमित्र॥काव्यलिंगभूषन
नहांभाषतबुद्धिविचित्र॥५५॥दोहा॥तौ
लगिमामनसदनमैहरिआवैकिहिबाट॥

162

अ·चं·

विकटजटेलौलौनिपटभुलेनकपटक
पाट ॥ ५८ ॥ रूपक ॥ जथा ॥ उपमानकू
उपमेयतेभेदुपरैनलखाइ ॥ तासौंरूप
ककहतहैकविपंडितसमुदाइ ॥ ५९ ॥
दोहा ॥ याभवपारावारकौउलंघिपार
कोजाइ ॥ तियछबिछायायाहनीगहै
बीचहिआइ ॥ ६० ॥ रूपक ॥ ६१ ॥ दोहा ॥
भजनकह्योतातेभजोभजौनएकोवार ॥
दूरिभजनजातेकह्योसोतेभजोगवार ॥
॥ ६२ ॥ जमक ॥ जथा ॥ जहांवहहीपद
पुनिपरैअरथऔरहीहोइ ॥ तहंज
मकालंकारहैभाषतपंडितलोइ ॥ ६३ ॥
दोहा ॥ पतवारीमालापकरिऔरन
कछूउपाउ ॥ तरिसंसारपयोधिको
हरिनामैकरिनाउ ॥ ६४ ॥ रूपक ॥ ६५ ॥
दोहा ॥ जहंविरियानहिऔरकौतक
रिआवहसोधि ॥ पाहननाउचढाइ
जिहिकीन्हेपारपयोधि ॥ ६६ ॥ परि
संख्या ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ हरिभजनप्रभु
पाहिरैगुनविस्तारनकाल ॥ प्रगट
तनिर्गुननिकटहूंचंगारंगाभपाल ॥ ६८ ॥

अवरको अव्यवाचकलुप्तोपमा ॥ जथा ॥
उपमा अरु उपमेय साधारनवाचक
होइ ॥ चारौ पैयै जहा पूरन उपमा सोइ
॥ ६१ ॥ दोहा ॥ अजवासिन को उचित धनु न
अधनु रुचितन कोइ ॥ सुचितन आयो
सुचितई कहे कहा ते होइ ॥ ६२ ॥ जथा ॥
पर्यायोक्ति प्रकार है कछु रचना सो बात ॥
मिसु करि कारजु कीजियै जै सो चित ताहि
सुहात ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ गोत जात वित होतु
है औ जियमै संतोषु ॥ होत होत औ है
इतो होइ घरी मै मोषु ॥ ६३ ॥ संभावना:
जथा ॥ ज्यौ त्यौ जौ तौ होइ है कल्पना वृति
ते आइ ॥ तेहि कल्पित संभावना कवि पंडि
त समुझाइ ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ नीकी दई अना
कनी फकी परी गहारि ॥ तेजो मनौ तारन
बिरद बारक बारन तारि ॥ ६४ ॥ उत्प्रेक्षा: ॥
६४ ॥ दोहा ॥ कौन भांति रहिहै बिरदु अब दे
खिबी मुरारि ॥ बीधे मो सौ आनि कै गीधे
गीधे तारि ॥ ६५ ॥ आक्षेप ॥ जथा ॥ इरै
निषेध जो विधि वचन और निषेध आभास ॥

अ·वं·

॥ ८२ ॥

पहिलेकधुआछेपकधुवकुरिफेरि
येतासा ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ रारघसासन
लेहकुबसुबसाईहिनभलु ॥ दईद
ईक्योकरतुहेदईदईसुकधलु ॥ ६६ ॥
जमक· ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ वंधुभराको
दानकेकोतारोरघुराइ ॥ तहतदूर
तहैकुठविरहवढाइ ॥ ६७ ॥ वक्रोक्ति· ॥
॥ ६७ ॥ दोहा ॥ थोरेईगुनरीझतविसरा
ईवहवानि ॥ तुमहूंकान्हमनोभए
आजुकाल्हिकेदानि ॥ ६८ ॥ उत्प्रेक्षा· ॥
॥ ६८ ॥ दोहा ॥ कवकोटेरतदीनरट
होतनस्यामसहाइ ॥ तुमहूलागी
जगतगुरुजगनाइकजगवाइ ॥ ६९ ॥
उत्प्रेक्षा· ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ प्रगटभएद्विज
राजकुलसुवसवसेब्रजआइ ॥ मेरे
हरौकलेसवकेसोकेसौराइ ॥ ७० ॥
केसौकेसौराइविहारीकेवापको
नाउयातेश्लेष· ॥ जथा ॥ एकसब्द
केअर्थजहभासतआइअनेक ॥
सब्दश्लेषसुकहतहैजिनकेवुद्धिवि

॥ ८२

165

वेक॥७०॥ दोहा॥ कीजै चित सोई तरौ जि
हि पतितन के साथ॥ मेरे गुन औगुन गन
नि गनौ न गोपीनाथ॥७०॥ दीपक॥ जथा॥
उपमान वस्तु उपमेय सौं इक पद लागै
जाइ॥ तासौं दीपक कहत है सुमति सुक
वि समुदाइ॥७०॥ सोरठा॥ मो हूं सौं जे मो
हु ज्यौं अनेक अधम निदियो॥ जौ बांधे
हौ तौ हु तौ बाधौ अपने गुननि॥७१॥ श्लेष॥
॥७१॥ दोहा॥ को जकोरिक संग्रहौ कोऊ
लाख हजार॥ मो संपति जदुपति सदा
विपति विदारनहार॥७२॥ परिसंख्या॥७२॥
दोहा॥ ज्यौं ह्वै है त्यौं होइगो हौं हरि
अपनी चालि॥ हठु न करौ अति कठिन है
मो तारिवौ गुपाल॥७३॥ आक्षेप॥७३॥ दोहा॥
हरि कीजैं तुम सौं जहै बिनती बार हजार॥
जिहि तिहि भांति डरौ रहौ परौ रहौ दर
बार॥७४॥ लोकोक्ति॥ जथा॥ कहनाव
ति है लोक की लोकोकति है सोइ॥७४॥
दोहा॥ करै कुमति जग कुटिलता तजौ
न दीनदयाल॥ दुखी होउगे सरल हि

अ॰ चं॰

यवसतत्रिभंगीलाल ॥७५॥ काव्यलिं
ग॰ ॥ यथा ॥ अर्थसमर्थनकीजियेजहां
॥८३॥ उक्तिसौमित्र ॥ काव्यलिंगभूषनतहां
भाषतबुद्धिविचित्र ॥७५॥ दोहा ॥ मोहि
तुम्हैंबाटीबहसकोजीतैजदुराज ॥
अपनेअपनेविरहकीदुहूंनिवाह
नलाज ॥७६॥ पर्यायोक्ति॰ ॥७६॥ दोहा ॥
निजकरनीसकुचोहिकतसकुचावत
इहिचाल ॥ मोहूंतेअतिविमुषसोंस
नमुषरहितोपाल ॥७७॥ विरोधाभा
स॰ ॥ यथा ॥ जिहिथलसहविरोधहै
अर्थमाऊनविरोध ॥ सहविरोधाभा
सकहिजैसोहियेप्रबोध ॥७७॥ दो
हा ॥ तौबलियेभलियेवनीनागर
नंदकिसोर ॥ जौतुमनीकेकैलष्योमो
करनीकीओर ॥७८॥ संभावना॰ ॥७८॥
दोहा ॥ समौपलटिपलटैप्रकृतिको ॥८३
नतजैनिजुचाल ॥ भोअकरुनकरुना
करौइहिकपूतकलिकाल ॥७९॥ विरो
धाभास ॥७९॥ दोहा ॥ अपनेअपनेम

तलगेवादिमचावतसोक॥ ज्यौंज्यौंसबही
सेइयैंएकैनंदकिसोर॥८०॥ परिसंख्या॥
॥८०॥ दोहा॥ चलनननपैयतुनिगमम
गुजगउपजोअतित्रास॥ कुंचउतंगगि
रिवरगह्योमैनामैनमवास॥८१॥ रूप
क॥८१॥ दोहा॥ जोअनुरागीचित्तकीगति
समुझैनहिकोइ॥ ज्यौंज्यौंबूडैस्यामरंग
त्यौंत्यौंउज्जलहोइ॥८२॥ रागपदतेनाइ
काकीउक्तिभासतिहैतातेपूर्वानुरागजा
नियेपरकीयाहैउज्जलपदतेसाधहू
कीउक्तिजानियेवचनअनुभावतेसां
तरसअंगिविभ्रमा॥८२॥ दोहा॥ मोहन
मूरतिस्यामकीअतिअद्भुतगतिजोइ॥
बसतिसुचितअंतरतऊप्रतिबिंबितजग
होइ॥८३॥ विभ्रमा॥८३॥ यथा॥ आ
नरंगकेकारनतेजहकारजआनरंगहू
जोइ॥८३॥ दोहा॥ नितप्रतिएकतही
रहतवैसबरनमनएक॥ चाहियतजु
गलकिसोरलखिलोचनजुगलअनेक
॥८४॥ नाइकाकीउक्तिहैइतौरसाभास

168

अ॰ चं॰ ॥ ८४ ॥

अरुकिसोरपदअनुचितकाहूभक्तकीउ
क्तिहोइतौव्यंगिरामक्तिसबोध्यहैयाते
ग्रंथकोकर्त्तामंगलाचरनहोइहसकोउ
पासकभासतुहैतातेसांतरसविसेषो
क्ति॰ ॥ यथा ॥ सबकोरनतेकोगुनसरै ॥ उ
क्तिविसेषसुहियमैधरै ॥ ८७ ॥ दोहा ॥
सीसमुकुटकटिकाछनीकरमुरलीउ
उरमाल ॥ इहिबानकमोमनसदाबसौ
बिहारीलाल ॥ ८८ ॥ जाति ॥ ८५ ॥ सोरठा ॥
तजितीरथहरिराधिकातनदुतिकरि
अनुराग ॥ जिहिब्रजकेलिनिकुंजम
गपगपगहोतप्रयाग ॥ ८९ ॥ अथ ॥
संबंधातिसयोक्तिजहांदेतअजोगहि
जोग ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ मोरमुकटकीचंद्र
कनियौराजतनंदनंद ॥ मनुससिसेष
रकोअकससकियसेबरसतचंद ॥ ९० ॥
इहांकीउक्तिनाइकाप्रतिहोइतौसृंगा ॥ ८४ ॥
रव्यंगिसखाकीउक्तिसखाप्रतिहोइ
तौराजरतिभावध्वनिभक्तकीउक्ति

169

हइ तौ सांत रस व्यंगि उत्प्रेक्षा॰ ॥ ८७ ॥ अथ
पर रसाभास दोहा ॥ केहू तन देवर की
कुमति कुल तिय कलह उराइ ॥ पंजर
गत मंजार ढिग सुक लौं सकति जाइ ॥ ८८ ॥
ह्वां रसाभास है उपमा॰ ॥ ८८ ॥ अथ भा
वध्वनि दोहा ॥ प्रलय करन नरसन लै
गे जु रि जलधर इक साथ ॥ सुरपति ग
र्व हर्यौ हरषि गिरिधर गिरिधर हाथ ॥
॥ ८८ ॥ देवार तिभाव ध्वनि को व्यलिंग॰ ॥
जथा ॥ अर्थ समर्थन की जिये जह जुक्ति
सो मित्र ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ जो पै को पै इंद्र
तौ रसै पै प्रलै अकाल ॥ गिरधारी राखे
सबै गो गोपी गोपाल ॥ ९० ॥ देवरति भा
वध्वनि परिकरांकुर वृत्यानुप्रास ॥
जथा ॥ साभिप्राय विसेष जह परिकुरां
कुर सोइ ॥ धीवन पै बै परजहा अधर
समता होइ ॥ तह वृत्यानु प्रास है केहह
तसयानै लोइ ॥ ९० ॥ दोहा ॥ प्रतिबिंबि
ते जेय साहि इति दीपति दर्पन धाम ॥

अ॰ चं॰

सबुजगुजीतनकौकियौकामब्यूहम
नौकाम॥८१॥कविकीउक्तिराजेर
तिभावध्वनिउत्प्रेक्षा॰॥८१॥दोहा॥
रहतिनरनजयसाहिमुषलषिला
षनिकीफौज॥जाचिनिराषरऊचलौ
लैलाषनिकीमौज॥८२॥पूर्ववत॥
दीपक॰॥८२॥दोहा॥चलतपाइनिगु
नीगुनीधनमनिमोतियमाल॥भेट
भएजैसाहिसौभागुचाहियतभाल॥
॥८३॥पूर्ववतकाकोक्ति॰॥८३॥दोहा॥
यौदलकाढेवलकतेतेजैसिंहभुआ
ल॥उदरअघासुरकेपरेज्यौहरि
गाइगुवाल॥८४॥पूर्ववतदृष्टांत॥
जथा॥उपमानरुउपमेयगुनवाच
कधर्मसुजान॥होतबिंबप्रतिबिंब
हैदृष्टांतसुपरिमान॥८४॥दोहा॥
चिरजीवौजोरीजुरैक्यौनसनेह
गभीर॥कोघटिवेवृषभानुजावेहल
धरकेबीर॥८५॥नाइकाकीउक्तिहै

॥८५॥

र्णभावध्वनिश्लेष॰ ॥ ९५ ॥ अथ भावो
दयसोरठा ॥ सखिहितकै प्रीतम लियो
कियोजुमोतिसिंगार ॥ अपनेकरमोति
नगुथ्योभयोहराहरहार ॥ ९६ ॥ सखी
कीउक्तिसखीसौंनाइकाकेइभावोदय
विभावना॰ ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ विधुरोजोव
कुमौतिपगनिरखिहसीगहिगास ॥
सलजहसीहालखिलियोआधीह
सीउसास ॥ ९७ ॥ पूर्ववतविभावन॰ ॥
यथा ॥ प्रापतिजहांविरुद्धकीनिजुइष्टि
ततेंहोइ ॥ तांहिविभावनकहतहैंजेपं
डितकविलोइ ॥ ९७ ॥ अथभावसंधिदोहा ॥
छुटैनलाजनलालचौप्यौलखिनैहर
गेह ॥ सटपटातलोचनखरेभरेसकों
चसनेह ॥ ९८ ॥ उक्तिसखीकीनाइका
केभावसंधिपजोयोक्ति॰ ॥ ९८ ॥ अथ
सबलैभावदोहा ॥ वालमुवारेमोतिके
मुनिपरनारिविहार ॥ भौरसुमनरसु
रिसरलारीझखीझइकवार ॥ ९९ ॥

सखीकीउक्तिसखीसौभाववसवलनाइ
काकेदीपक॰॥ ९९ ॥इतिश्रीअनव
रचंद्रिकायांनवरसवर्ननंचतुर्दशप्रका
स:॥१४॥अथखटरितुवर्ननं॥ तत्रब
संतवर्ननंदोहा॥ बनबाटनापिकवट
परालबिबिरहिनिमनमैन॥ कुहूकु
हूकहिकहिउठैकरिकरिरातेनैन॥
॥१०१॥बिरहीकीउक्तिवसंतवर्ननंरू
पकउत्प्रेछा॰॥१००॥दोहा॥द्विसिद्विसि
कुसुमितदेखियैउपवनबिपिनसमा
ज॥मनौवियोगिनिकौकियोसरपंजर
रतिराज॥ १॥कविकीउक्तिवसंतवर्न
नंउत्प्रेछा॰॥ १॥दोहा॥हियऔरैसीह्वै
गईटरिऔधिकेनाम॥दूजेकरिडाराखरी
बौरीबौरेआम॥२॥सखीकीउक्तिस
खीसोप्रोषितपतिकावसंतवर्ननंभे
दकातिसयोक्ति॰॥जथा॥औरैपरुज
हदीजियेअधिकाईकेहेत॥अतिसयो
क्तिभेदकजहैकहतसुकबिसिरनेत॥२॥

॥८९

173

दोहा॥ भौजन हू कौ सोई समौ जन हा सु बद दुब देत॥ चैत चांद की चांदिनी डारत किये अचेत॥ ३॥ वियोगी की उक्ति उद्वेग दसा वसंत वर्नन विभावना॥ ३॥ दोहा॥ पाछि ह्ये दहले कै मुरि करघै घट पद टारि॥ भरि भु लाल की मूछि सौ गई मूछि सी मारि॥ ४॥ हेरी वर्नन नाइका की उक्ति स्मृति संचारी उत्प्रेक्षा॥ ४॥ दोहा॥ ह्यौ जु पिय लखि चख नि मे खेलत फाग खिआल॥ बाढत हू अति पार सु निकढत नवनत गुलाल॥ ५॥ उक्ति सखी की कै नाइका की होरी वर्नन ध्वनि ते भासत है कि जा की ओर के वहू नाइक ने देखो ऊनो हीं जो सु किया है तौ रसाभास कहियै परकिया है तौ धुर्त रस कहियै विसेषोक्ति॥ ५॥ दोहा॥ छुटत मुठी संग ही छुटी लोक लाज कुल चाल॥ लगे दुहून इक साथ ही चलि चित चख नि गुलाल॥ ६॥ लछिता नाइका पूर्वानुराग उक्ति सखी की सखी

174

ग्र॰ चं॰ ॥८७॥

सो हेला वर्नन में सहोक्ति॰ ॥ जथा ॥ हेतु अ
नेक एक ही संग ॥ सो सहोक्ति कहि ये
ले बिरंग ॥ ६ ॥ दोहा ॥ रस भिजए से उड़
ज्ञनि तो टिकि रहे टरै न ॥ छबि सो छि
रकत प्रेम रंग भरि पिचकारी नैन ॥ ७ ॥
पूर्वंवत रूपक॰ ॥ ७ ॥ दोहा ॥ गिरै कपिकि छु
के धुर है कर पसी जिलपिटाइ ॥ छोडत
लोल गुलाल की मुठी झुठी ह्वै जाइ ॥ ८ ॥
नाइक के स्वेद सात्विक कंप हेला वर्नन
विसेसोक्ति॰ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ज्यों ज्यों पट
झटकति हठति हसति नचावति नैन ॥
त्यौं त्यौं निपट उदार हू फगुवा देत बनै
न ॥ ९ ॥ उक्ति सब भी को हेला वर्नन पूर्वा
नुराग के दस विसेष नाइका अनुभाव
नै दैवो नाइक के उदार पद ते ध्वनि है वि
सेसोक्ति॰ ॥ ९ ॥ दोहा ॥ छकि रसाल सौ ॥ ८७
रभ सने मधुर माधवी गंध ॥ ठौर ठौर कू
मत झुकत भौर झौर मधु अंध ॥ १० ॥ स्व
तः संभवी वसंत वर्नन नाइका की कैना

रककीउक्तिहोइतौउद्दीपनसुचित करिसंकेतजनावति है जातिवर्ननं ॥ १० ॥ दोहा ॥ जहंवसंतनवरोभरीगारमन सीतलवात ॥ कहिक्योप्रगटेदेखिये पुलकिपसाजेगात ॥ ११ ॥ उक्तिसखी कीनाइकाके सात्विकउपजोहै सोउन लछितकियोहै नाइकुनिकटवोधव्य है विभावना ॥ ११ ॥ दोहा ॥ फिरिघरको नूतनपथिकचलेचकितचितभागि ॥ फूलेदेखिपलासवनसमुहीसमुझि दवागि ॥ १२ ॥ उक्तिदेषनहारेकीनाइक केमोहसंकसंचारीवसंतरितुवर्ननमें भां ति ॥ १२ ॥ दोहा ॥ रनितभंगघंटावलीझ रतुदानमधुनीर ॥ मंदमंदआवतुचलो कुंजरकुंजसमीर ॥ १३ ॥ दंपतिमैकाहू कीउक्तिहै संकेतसूचितहैवसंतवर्न नं ॥ १३ ॥ दोहा ॥ वुभ्रतस्वेदमकरंदकन तरुतरुतरविरमाइ ॥ आवतुदछिन तेचलोथकोवटोहीवाइ ॥ १४ ॥ वसंत

ग्र-वं·

॥८८॥

रितुमैत्रिविधपौनवर्ननंरूपक॥१४॥
दोहा॥लपटीपुहुपपरागपटसनीस्वे
दमकरंद॥आवतिनारिनवोढलौंसु
खदवायुगतिमंद॥१५॥पूर्ववतउपमा·॥
॥१५॥दोहा॥रुकोसाकरीकुंजमैकरतु
गाजिझहरातु॥मंदमंदमारुततुरग
करतनिआवतुजातु॥१६॥वसंतरितु
मैपौनवर्ननंदंपतिमैकाहूकीउक्ति
होइतौसंकेतसचकताव्यंगिरूपक·॥
॥१६॥दोहा॥छिरकैनाहनवोढदृगाक
रपिचकीजलजोर॥रोचनरंगलाली
भईवियतियलोचनकोर॥१७॥उक्तिस
खाकीसखासौदुसरीनाइकाकेईर्षाद
यनाइकाज्येष्टाकनिष्टावर्ननंवसंतअ
संगति॥१७॥अथग्रीषमवर्ननंदोहा
नाहिनिएपावकप्रवलतुयेचलति
उहिपास॥मानौविरहवसंतकेग्रीषम
लेतिउसास॥१८॥कविकीउक्तिग्रीषम
वर्ननंउत्प्रेक्षा·॥१८॥दोहा॥कहलाने

॥८८

एकतरहतअहिमयूरमृगबाघ।जगत
तपोवनसोकियोदीरघदाघनिदाघ॥
॥१९॥पूर्ववत॥१९॥दोहा॥बैठिरहीअति
सघनवनपैठिसदनतनमाह।देखिदु
पहरजेठकोछाहौचाहतिछाह॥२०॥
पूर्ववतअत्युक्ति॥२०॥अथवर्षादोहा॥
तियतरसौंहेमुनिकियेकरिसरसौंहे
नेह।धरपरसौंहेहरहेउरवरसौंहे
मेह।२१।मानिनीप्रतिसखीकीउक्ति
उद्दीपनदिखावतिहैवर्षावर्ननंछेका
नुप्रास।२१॥दोहा॥पावसघनअंधिया
रमैरह्योभेदनहिआन।रातिद्यौसजा
नीपरैलखिचकईचकवान।२२।उक्ति
दूतीकीनाइकाप्रतिसंकेतअवसरलखि
तकरतिहैवर्षावर्ननंकाव्यलिंग॥२२॥
दोहा।छिनकुचलतिठिठकतिछिनकु
भुजपीतमगलडारि।चढीअटादेखति
घटाबिजुछटासीनारि।२३।सखीकीउ
क्तिसखीसोंसंजोगसिंगारवर्षारितुव

178

भा॰ चं॰

नैनउपमा॥२३॥दोहा॥पावककमरते
मेहमरहाहकदुसहविसेषि॥दहै
देहवाकेपरसयाहिदृगनिसदेषि॥ ॥८८॥
॥२४॥वियोगिनीकीउक्तिविप्रलंभशृं
गारवर्षावर्ननंकाव्यलिंग॥२४॥
दोहा॥कुटगकोपतजिरगरलीकर
तिजुवतिजगजोहि॥पावसगढन
पातजहदेटनिहूरंगहोहि॥२५॥
दूतीकीउक्तिमानिनीसोभेदेपाइ
अर्थांतरन्यास॥२५॥दोहा॥धुरवा
होइनअलिउठेधुवाधरनिचहु
कोद॥जारतुआवतुजगतकोपाव
सप्रथमपयोद॥२६॥वियोगिनी
कीउक्तिसषीसोपावसवर्ननंउत्प्रेक्षा॥
॥२७॥दोहा॥छनुनछालीकारिसके
जेहपावसरुतुपाइ॥आनगाठिमन ॥८८
औरहैमानगाठिधुटिजाइ॥२८॥
सषीकीउक्तिसषीसोपावसवर्ननदृष्टां
त॥२८॥दोहा॥वेईचिरजीवीअमरनि

179

धरकफिरौकहाइ॥ छिनविछुरेजिनके
नहीपावसआउसराइ॥ २८॥ वियोगी
कीउक्तिपावसवर्ननंकाव्यलिंग॥ २९॥
सोरठा॥ पावसकठिनजुपीरअबलाउब्र
च्यौसाहसकै॥ तेऊधरतनधीररक्तवी
जेसमउपजै॥ ३०॥ उक्तिनाइकाकीवि
योगश्रृंगाररक्तवीजपदक्लिष्टतासैअ
र्थांतरन्यासउपमाकोसंकर॥ ३०॥ दोहा॥
अजतजिनाउउपाइकोआयोपावसमा
स॥ खेलुनैरहियोछेमसौकैमकुसुमकी
वास॥ ३॥ प्रोषितपतिकाकीउक्तिसखी
सौपावसवर्ननंलोकोक्ति॥ ३॥ दोहा॥
वामाभामाभामिनीकेह्विबोलोप्रानेस॥
प्याराकहतलैजातनहिपावसचलत
बिदेस॥ ३२॥ गामिष्यत्पतिकाकीउक्ति
नाइकसौपावसवर्ननंपरिकरांकुर॥ ३२॥
दोहा॥ रहौकंकौवयौहूसुचलिआधिके
रातिपधारि॥ हरतितापसबघोसकोउ
रलनिपारिवपारि॥ ३३॥ कविकीउक्ति

180

अ.चं.

वर्षावर्ननंरूपक॥३३॥दोहा॥विगस
तिनवल्लीकुसुमनिकसतिपरिमल
॥९०॥ पाइ॥परसिपजोरतिविरहिहियव
रसिरहेकोवाइ॥३४॥वियोगीकीउक्ति
उद्वेगदसापावसवर्ननंविभावना॥३४॥
अथसरदवर्ननंदोहा॥घनघेराघु
टिगोहरषिचलीचहूदिसिराह॥कि
योसुचैनोआइजगसरदसूरनर
नाह॥३५॥कविकीउक्तिसरदवर्न
नंरूपक॥३५॥अथहेमंतवर्ननं
दोहा॥ज्योंज्योंवढतिविभावरीत्यों
त्योंवढतअनंत॥ओकओकसव
लोगसुखकोकसोकहेमंत॥३६॥
नाइकाकीउक्तिहर्षसंचारीकरिहे
मंतवर्ननरूपक॥३६॥दोहा॥कियो
सबैजगुकामवसजीतेजितैअजेइ॥ ९०
कुसमसरहिसरधनुषकरअगह
नाहननदेइ॥३७॥मानिनीप्रतिसखी
हूतीकीउक्तिहेमंतवर्ननंविसेषोक्ति॥३७॥

181

दोहा ॥ मिलि बिहरत विघुरत मरत दंपति अति रस लीन ॥ नूतन विधि हेमंत रितु जगत जराफा कीन ॥ ३८ ॥
मानिनी को सषी की उक्ति हेमंत वर्ननं रूपकं ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ आवत जात न जानियेत जितेजा हिसियरानि ॥ घरहि गमाई लौ घटै पूस मास दिन मानि ॥ ३९ ॥
कवि की उक्ति प्रस्ताविक दोहा हेमंत वर्ननं उपमा ॥ ३९ ॥ अथ सिसिर वर्ननं ॥
दोहा ॥ तपन तेज तपताप तन अतुल तुलाहि माह ॥ सिसिर सीत क्यो हुं न मिटै बिन लपिटै तिय नाह ॥ ४० ॥ उक्ति कवि की अथवा मानिनी प्रति सषी को सिसिर वर्ननं परिसंख्या ॥ ४० ॥ दोहा ॥ लगति सुभग सीतल किरनि निसि दिन सुष अवगाहि ॥ माह ससी भ्रम सूर त्यो रहति चकोरी चाहि ॥ ४१ ॥ उक्ति कवि की सिसिर वर्ननं भ्रांति ॥ ४१ ॥ दोहा ॥
रहि न सको सब जगत मै सिसिर सीत

182

अ.चं.

॥१८१॥

केशास॥ गरमभाजिगढ वै भई तिय
कुचकंचलोमप्रास॥ ४२॥ पूर्ववत्
रूपकः॥ ४२॥ इतिश्री अनेवरचं
द्रिकायांरितुवर्ननंनामपंचदस
मप्रकासः॥ १५॥ अथप्रस्तावि
कदोहा॥ गढरचनावरुनीअलक
चितवनिभौंहकमान॥ आकुव
काएहीबढैतरुनितुरंगमतान॥
॥ ४३॥ विछ्रामतिभावध्वनिप्रस्ता
विकदीपक॥ ४३॥ दोहा॥ अनिया
रेदीरघनयनकितानतरुनिसमा
न॥ वहचितवनिऔरैकछूजिहि
वसहोहिसुजान॥ ४४॥ प्रस्ताविक
भेदकातिसयोक्तिः॥ ४४॥ दोहा॥ चिप
मनरुचिह्वैचोकैबिनतनरुचिहोहिसिं
गार॥ लाखुकरोआखिनबढैबढैबढाए॥

॥१८१॥

183

वार ॥ ४५ ॥ सिघ्रामतिभावध्वनिप्रस्ता
विकअर्थांतरन्यास ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ च्वितै
दैदेषिचकोरत्योतीजैभजैनभष ॥ चि
नगातुगैअगारकीचुगैकिचंरमयूष ॥ ४६ ॥
प्रस्ताविकसिघ्राभावध्वनिपरिसंख्या
अर्थांतरन्यासअन्योक्तिकोसंकर ॥ ४६ ॥
दोहा ॥ कालवतहूतीविनाजुरैनऔर
उपाइ ॥ फिरितिकौटरेवतैपाकैप्रेम
तदाइ ॥ ४७ ॥ प्रस्ताविकसिघ्रामतिरू
पक ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ तनकेकूटसवारहिली
कौनवातपरिजाइ ॥ तियमुषरतिआ
रंभहीनहिकूठियैमिठाइ ॥ ४८ ॥ प्रस्ता
विकअर्थांतरन्यास ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ रुचि
नप्रियपहूँवामवस विसराईतियआन ॥
एकैवाचरिकेविनालोगवरचविहान ॥
॥ ४९ ॥ घैंजघपिओरैभासतिहैमु
ष्वताहाकीहैसहृविरोधाभास ॥ ४९ ॥
दोहा ॥ आपुहियोमेनफेरिलैपलटै
दोनोपाहि ॥ कौनचालिजहरावरीला

लालनुकौवतदीठि ॥५०॥ नाइकाकी उक्ति नाइकेसौंमध्यकोपाक विभक्ति हैअरुप्रस्ताविकरूढ है विनमय ॥ जथा ॥ जहद्वैकै केघुलौजियै ॥ तहविनयपेचितकोजियै ॥ ५०॥ दोहा ॥ मोहिदियो मेरोभयोरहतुजुमिलिजियसाथ ॥ सोमनुवांधिनसोपियेपियसौतिनकेसाथ ॥ ५१ ॥ उक्ति नाइकाकीनाइकेसौमध्यकोपाकविभक्ति हैअरुप्रस्ताविकरूढहैकाव्यलिंग ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ तंत्रीनादकवित्तरससरसराग रतिरंग ॥ अनवूडेवूडेतरेजेवूडेसवअंग ॥ ५२ ॥ प्रस्ताविकसोहाविरोधाभास ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ गिरितेऊचेरसिकमनवूडेजहाहजार ॥ वहैसदापसुनरनिकोप्रेमपयोधिअपार ॥ ५३ ॥

185

अवरकाव्यप्रस्ताविकपजोयोक्ति ॥
॥ ५३ ॥ दोहा ॥ चटकन छोडत घटत
हू सज्जननेहगंभीर ॥ फीकोपरैन
वरघटै रंगोचोलरंगचीर ॥ ५४ ॥
अवरकाव्यप्रस्ताविकअर्थांतरन्या
स ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ संपतिकेससुदेस
नरनवतउ ऊनइकवानि ॥ विभोस
तरकुंचनीचेनरनरमविभोकी
हानि ॥ ५५ ॥ पूर्ववत दीपक ॥ ५५ ॥
दोहा ॥ नाविसविषैलबिनाउ
रजनदुसहसुभाइ ॥ आटैलगिप्रा
ननिहरैकाटैलौलगिपाइ ॥ ५६ ॥
लिधामेतिभावध्वनिउपमा ॥ ५६ ॥
दोहा ॥ जेतीसंपतिक्रपनकेतेतीत
मतिजोर ॥ वढतजातज्योंज्योंउरज
त्यौंत्यौंहोतकठोर ॥ ५७ ॥ अवरकाव्य
प्रस्ताविकअर्थांतरन्यास ॥ ५७ ॥ दो
हा ॥ नीचहियेहुलसरहतगहेगेंद

अ॰ चं॰

कपोत। ज्यौं औंमाथेमारियेसौसौ
ऊंचे होत॥ ५८ ॥ अथरकाव्यअ
॥९३॥ र्थांतरन्यास उपमा ॥ ५८ ॥ दोहा ॥
कोरिजतनकोऊकरौपरैनप्रकृ
तिहिबीच। नलबलजलऊंचेच
ढैपैरिनीचकेनीच ॥ ५८ ॥ अथरका
व्यप्रस्ताविकअर्थांतरन्यास ॥ ५८ ॥
दोहा ॥ ओछेबडेनहूसकैलगिस
तरौहैबैन ॥ दीरघहोइननैकहू
फारिनिहारैनैन ॥ ६० ॥ अथरका
व्यअर्थांतरन्यास ॥ ६० ॥ दोहा ॥ कैसे
ओछेनरनितेसरतबडिनकेकाम ॥
मढोदमामोजातुक्योंगहिचूहिनके
चाम ॥ ६१ ॥ अथरकाव्यअर्थांतरन्या
अ॰ ४ स ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ लटुअै लोंप्रभुकरच ॥ ९३
ढैतिगुनीगुनलपिटाइ ॥ वहैगुनी
करतेछुटैतिगुनीयेंहूजाइ ॥ ६२ ॥
अथरकाव्यउपमा ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ प्यौ

सेतुपरहरजेटकेपथकेसवैजलसो
धि॥ मरुघरपाइमतीरहूमानुकरु
तपयोधि॥६३॥ अथरकाव्यप्रस्ता
विककोव्यलिंग॥६३॥ दोहा॥ उसरहु
राजप्रजानिकोक्योनबटैदुषदंद॥
अधिकअधरेसेकरतजगमिलिमा
वसरविचंद॥६४॥ अथरकाव्यअ
र्थांतरन्यास॥६४॥ दोहा॥ वसैबुराई
जोसुतनताहिकोसनमान॥ भलोभ
लोकैघोडियैबोटेग्रहजपदान॥६५॥
अथरकाव्यअर्थांतरन्यास॥६५॥ दो
हा॥ केहैसवैस्मृतिसुमतिहूजसैप
रानैलोग॥ तौनिस्वावतिनिसकैही
पातकेराजारोग॥६६॥ अथरकाव्य
दीपक॥६६॥ दोहा॥ वेडेनेहूमेगुननि
बिनुबिरदबडाईपाइ॥ कहतधतूरे
सौकनकगहनोगढोनजाइ॥६७॥
अथरकाव्यअर्थांतरन्यास॥६७॥
दोहा॥ गुनीगुनीसबकेकहेनिगुनी

अ०चं०

गुनीनहोतु॥ सुनोकहूतसअरकते
अरकसमानउदोत॥ ६८॥ अथव
रकाव्यअर्थांतरन्यास॥ ६९॥

॥ ९४॥

दोहा॥ अरपरषोकोकरैतुसोविलो
किविचारि॥ किहिनरकिहिनरसा
थियेखरेवडेपरघारि॥ ७०॥ अथवर
काव्यप्रस्ताविकदीपक॥ ७०॥ दोहा॥
सदैहसतिकरतारदैनागरलोकेना
म॥ गयेरागरवुगुनकोसवैगयेममा
रगाम॥ ७१॥ अथवरकाव्यप्रस्तावि
कश्लेष॥ ७१॥ दोहा॥ नरकोअरुन
लनारकीगतिएकैकरिजोइ॥ जेतो
नीचोह्वैचलैतेतोऊचोहोइ॥ ७२॥
अथवरकाव्यप्रस्ताविकदृष्टांत॥ ७२॥
दोहा॥ वढतवढतसंपतिसलिल
मनसरोजवढिजाइ॥ घटतघट
तसुनफिरि घटैवरसमूलकु
म्हिलाइ॥ ७३॥ अथवरकाव्यप्रस्तावि
करूपक॥ ७३॥ दोहा॥ जोचाहतच

॥ ९४

189

टकनघटैमेलोहोइनमित्त॥रुमराज
सनधुत्र्याइयैनेहचाकनेवित्त॥७४॥
सिघामतिभावध्वनिउत्तमकाव्यले
ख॥७४॥दोहा॥समैसमैसुंदरिसवै
रूपकुरूपनकोइ॥मनकीरुचिजेती
जितैतिततेतीरुचिहोइ॥७५॥अवर
काव्यपरिसंख्या॥७५॥दोहा॥मीतन
नीतिगलीतहैजुलैधारियैधनजोरि
खाएखरचैजोजुरैतौजोरियैकरोरि
॥७६॥सिघामतिभावध्वनिसंभावना॥
दोहा॥कनककनकतेसौगुनोमादक
ताअधिकाइ॥वापाएबौराइयैवाखा
येबौराइ॥७७॥अवरकाव्यव्यतिरेक॥
॥७७॥दोहा॥बुरौबुराईजौतजैतौजिय
खरौसकातु॥जौनिकलंकमयंकलै
खिगनतलोकुउतपातु॥७८॥अवरका
व्यप्रस्ताविकदृष्टांत॥७८॥दोहा॥भा
वरिअनभावरिभरेकरौकोरिबक
वाद॥अपनीअपनीप्रकृतिकोमिटे

190

अ॰ चं॰

नसहजेसवाद ॥ ७९ ॥ अवरकाव्य
विसेषोक्ति ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ वहकि
वडाई आपनी कतेरचतुमतिभूलि ॥ ॥ ८५ ॥
विनमधुमधुकरकेहियेगडैनगु
डहरफूल ॥ ८० ॥ प्रस्ताविकेअर्था
तरन्यासकेमितवाचकध्वनि ॥ ८० ॥
दोहा ॥ दूरिभजतप्रभुपाहिदैगुन
विस्तारनकाल ॥ प्रगटततिर्गुननि
कटहूचंगरंगभूपाल ॥ ८१ ॥ अव
रकाव्यप्रस्ताविकउपमा ॥ ८१ ॥ दो
हा ॥ जातजातवितहोतुहैज्योंजि
यमेसंतोषु ॥ होतहोतजोहोइतो
होइतोहोइघरीमेमोषु ॥ ८२ ॥ वि
धामतिभावध्वनिप्रस्ताविकसंभा
वना ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ घरघरडोलत
दीनहैजनजनजेचतुजाहिदि ॥ ८५
योलोभचसमाचवतिनिलघुपुनि
वडोलषाहि ॥ ८३ ॥ अवरकाव्यप्र
स्ताविकरूपक ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ तोअने

१९१

कअौगुनभरहियेवाहैजोइवलाइ जौपतिसंपतिहूविनायदुपतिरा षेजोइ॥८४॥प्रस्ताविकसंभावना. ॥८४॥दोहा॥इकभीजैचहलेपरेवू डेवहेहजार॥कितेनअौगुनजगक रतुनैवैचटतीवार॥८५॥प्रस्तावि करूपकरूपकअलंअर्थान्तरन्यासा तेंइहांसंकरकहियै॥८५॥इतिप्र स्ताविके॥अथअन्योक्तिदोहा॥गो धनतहरषोहियेघरियकलेह पुजाइ॥समुझिपरैगीसीसपरपर तपसुनिकेपाइ॥८६॥अप्रस्तुतप्र संसालंकारहै॥जथा॥जहांअरि सिरऔरकेकहैअौरकीवात॥तो सोअन्योक्तिकेहतजेकवितोस रसात॥८६॥दोहा॥मोरचंद्रिकास्या मसिरचढिकेतकेरतुग्रमानु॥ल षिवीपाइनपरलेटतुसुनियतुरा धामानु॥८७॥अन्योक्ति.॥८७॥

अ. चं.

दोहा ॥ पाइलै पाइलनगी रहैलगे
अमोलिकलालें ॥ भोडर हू की भा
सि है बेदीभामिनि भालें ॥ ८८ ॥
अन्योक्ति ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ बेसरि मो
तीधनि तुही को बूझै कुलजाति ॥
पीवो करति य अधर को रसु निध
रक दिनराति ॥ ८९ ॥ अन्योक्ति ॥ ८९
दोहा ॥ अजौं तरोनो ही रह्यो श्रुति
सेवत इक अंग ॥ नाक बास बेसरि
लह्यो बसि मुकतन के संग ॥ ९० ॥
अन्योक्ति ॥ ९० ॥ दोहा ॥ पाइतरुनि
कुच उच्च पद चिरमिठ गयो सबु गाउ ॥
छुटै ठौर रहिहै जु हैवहै मोलु छ
बिनाउ ॥ ९१ ॥ अन्योक्ति ॥ ९१ ॥ दोहा ॥
नागरि विविध विलास तजि बसी
गवेलिन माहि ॥ मूढनि मैं गनिबी
कि तूं हूठ्यो दै इठिलाहि ॥ ९२ ॥ अ
न्योक्ति ॥ ९२ ॥ दोहा ॥ नहिं परागु न
हिं मधुर मधु नहिं विकास इहि

॥८६॥

॥८

कालं॥ अली कली ही सौं बध्यौ आ
गे कौन हवाल॥९३॥ अन्योक्ति॥९३॥
दोहा॥ को छि अतन को उकरौ पर रैन
प्रकृति हिय बीच॥ नलैं बल जैल ऊंचे
चढैं अंत नैं च को नीच॥९४॥ अन्यो
क्ति॥९४॥ प्यासे दुपहर जेठ के जेह
पाछे लि चो है॥९५॥ अन्योक्ति॥९५॥
दोहा॥ अति अगाध अति औथरो
नदी कूप सर बाइ॥ सो ताको सागर
तहां जो को प्यास बुझाइ॥९५॥ अ
न्योक्ति॥९५॥ दोहा॥ जिन दिन देखे
वे कुसुम गई सु बीति बहार॥ अब
अलि रही गुलाब मै अपत कटीली
डार॥९६॥ अन्योक्ति अब को संक
र है॥९६॥ दोहा॥ इहि आसा अटक
को रहै अलि गुलाब के मूल॥ हुहै
फेरि बसंत रितु इन डारन वे फूल॥९७॥
अन्योक्ति॥९७॥ दोहा॥ सिरस कैसु
म मंडरात अलि न झुकि झपट लपि

अ॰ चं॰ रातु॥ हरसतु अति सुकमारता
परसत मनु न पत्यातु॥ ७००॥
॥ ९७॥ अन्योक्ति॰ ॥ ७००॥ दोहा॥ वेन
इहां नागर वडे जिन आदर तु
अ आव॥ फूल्यो अन फूल्यो भ
यो गवई गाउँ गुलाव॥ १॥ अन्यो
क्ति॰ ॥ १॥ को कहि सकै वडेनु सो पर
वडे पौ भूलि॥ दीने दई गुलाव की इन
डारन वे फूल॥ २॥ अन्योक्ति॰ ॥ २॥ कर
लै सूंघि सराहि अति सवै रहे गहि
मौनु॥ गंधी अंध गुलाव को गमई
गाहकु कौनु॥ ३॥ अन्योक्ति॰ ॥ ३॥
करि फुलेल को आचमनु मीठो क
हत सराहि॥ बुपरजु रे गंधी॰ चतुर
अतुर दिखावतु काहि॥ ४॥ अन्यो
क्ति॰ ॥ ४॥ सीतलता रु सुगंध की ॥ ९
मिटै न महिमा मूरु॥ पीनसु वारे
ज्यौ तजौ सोरा जानि कपूरु॥ ५॥

अन्योक्ति॰ ॥ ५ ॥ कोघूग्योइहिंगारपरि
कतकुलंगन्अकुलाइ ॥ ज्यौंज्यौंसु
रझिभजोंचहैत्यौंत्यौंउरझतुजाइ ॥
॥ ६ ॥ अन्योक्ति॰ ॥ ६ ॥ स्वारथसुकृ
तनश्रमवृथादेखिविहंगविचारि ॥
बाजपराएपानिपरतूपछीहिन
मारि ॥ ७ ॥ अन्योक्ति॰ ॥ ७ ॥ दिनदस
आदरपाइकैकरिलैआपुबखान
जौलगिकागसराधपखतौलगि
तोसनमान ॥ ८ ॥ अन्योक्ति॰ ॥ ८ ॥
मरतुप्यासपिंजरापर्यौसुआस ॥
मैकेफेरु ॥ आदरदैदैबोलियैबाइ
सबलिकौबेरु ॥ ९ ॥ अन्योक्ति ॥ ९ ॥
जासौंएकाएकहूजगबौराइनकोइ
सोनिदाघफूलैफूलैआकुडहडहे
होइ ॥ १० ॥ अन्योक्ति॰ ॥ १० ॥ नहिंपा
वसरितुराजजहतजितरवरमतिमूल ॥

[illegible]

197

आपतभा बिनपाइ हौक्यौनवरल फल फूल ॥११॥ अन्योक्ति ॥११॥ सोह लहैन नैकौगु नगरवहसौसफल संसार ॥ कुचउचपरलालन चलगेग रपरे हूहार ॥१२॥ अन्योक्ति ॥१२॥ जनमजलधिपानिपविमलभौजगु आधुअपार ॥ रहैगुनीह्वैगरपरे भलौनमुकताहार ॥१३॥ अन्योक्ति ॥१३॥ मूड्चढाएहूरहैपरोपीठिक चभार ॥ रहौगरेपरराखिबेतऊहि येपरहार ॥१४॥ अन्योक्ति ॥१४॥ जो सिरधरिमहिमामहीलहियतरा जाराइ ॥ प्रगटतजडताआपनीमुकुट परहितेपाइ ॥१५॥ अन्योक्ति ॥१५॥ चलेजाउह्यांकोकरै हाथिनकौ व्योपार नहिजानतइहिपुरवसैधोवी ओडकु म्हार ॥१६॥ अन्योक्ति ॥१६॥ विषमवृ षादितिकीतषाजियेमतीरनसोधि ॥ आमितअपारअगाधजलमारहुसत

अ॰ चं॰ पमोछि ॥ ७ ॥ अन्योक्ति॰ ॥ ७ ॥ इहिंहिसोई
मोतीसुगथतनथगरबनिसाक ॥ जि
॥ ९९ ॥ हिपहिरेजगगनागसतिलसतिह
मतिसीनाक ॥ ८ ॥ अन्योक्ति॰ ॥ १८ ॥
जेहाउरिसिरऔरकेकहैऔरकी
बात ॥ तासोअन्योकतिकहतजेक
बितासरसात ॥ १८ ॥ इतिश्रीअनव
रचंद्रिकायांअन्योक्तिवर्ननंषोड
सप्रकास: ॥ १६ ॥ छप्पय ॥ श्री
लेबिलोमितभाइसतवेदनिकुं
स्वासधरि ॥ छत्रिनकेतनतकतज
कततहिंअरुनअछिकरि ॥ समि
तदेषिदसबदनहोतपुलकितअ
गसुंगनि ॥ कुटिलकाटिकलिअं
तरुधिरसोंचतसुश्रृंगतनि ॥ सुभ
साहिसोहिसोचहेतुजंतुकोमाब
नलेतडरातजिय ॥ तिपतलरदनधा
रीधरनिधारितिनहरिकोध्यानहिय ॥ ९९ ॥

199

॥ १ ॥ दोहा ॥ मैं निजु मति माफिक कवि
यो कवि मत को परगास ॥ लीजौ सम
झि सुधारि कैं जिन के बुद्धि विलास ॥ २ ॥

॥ इति श्री अनवरचंद्रिकायां अनव
रखांनबाबविरचितायां विहारीस
तसयाटिप्पनं समाप्तम् शुभम् ॥
शुभम् ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु ॥

संवत १८६६ वैशाखधवले ति॰
१५ शनिवासरे शुभम् लिषतं
गोनिगारामब्राह्मण पठनार्थम्
शुभम् श्रीकृष्णायनमः श्रीरस्तु

॥श्रीरामजी

॥श्रीरामजी॥

[illegible]

[illegible]

